।। ओ३म् ।।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
वैदिक संसार

वैदिक संसार

इस अंक के प्रकाशन के विशिष्ट सहयोगी

श्री सुनील जी शर्मा

Director
Sumit Woods Pvt. Ltd.
Ponda(Goa)

अध्यक्ष– जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा, गोवा

वर्ष -३ अंक- ११ मासिक-हिन्दी सितम्बर, २०१४ इन्दौर (म.प्र.) मूल्य-२५/- कुल पृष्ठ-४४

भारत के समाचार-पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या एम.पी. एच.आई. एन. २०१२/४५०९६, डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

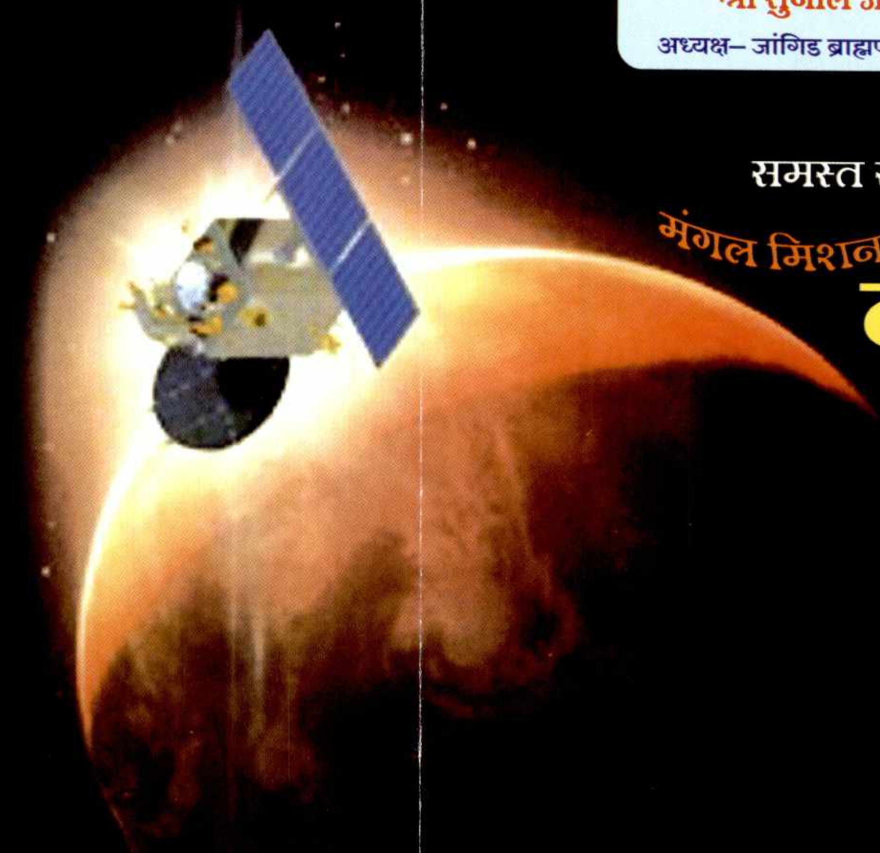

समस्त राष्ट्रनिष्ठों को
मंगल मिशन की मंगलमयी
बधाई

शिल्प विद्या का पतन न होता तो
यूरोपीय अभिमान में न चढ़ जाते
-महर्षि दयानंद सरस्वती

- भारत ने जगत गुरुता की ओर बढ़ाया कदम
- देश के प्रधानमंत्री ने ऋषियों को वैज्ञानिक बताया
- प्रधानमंत्री ने ऋषि आर्य भट्ट को स्मरण किया

thearyasamaj.org

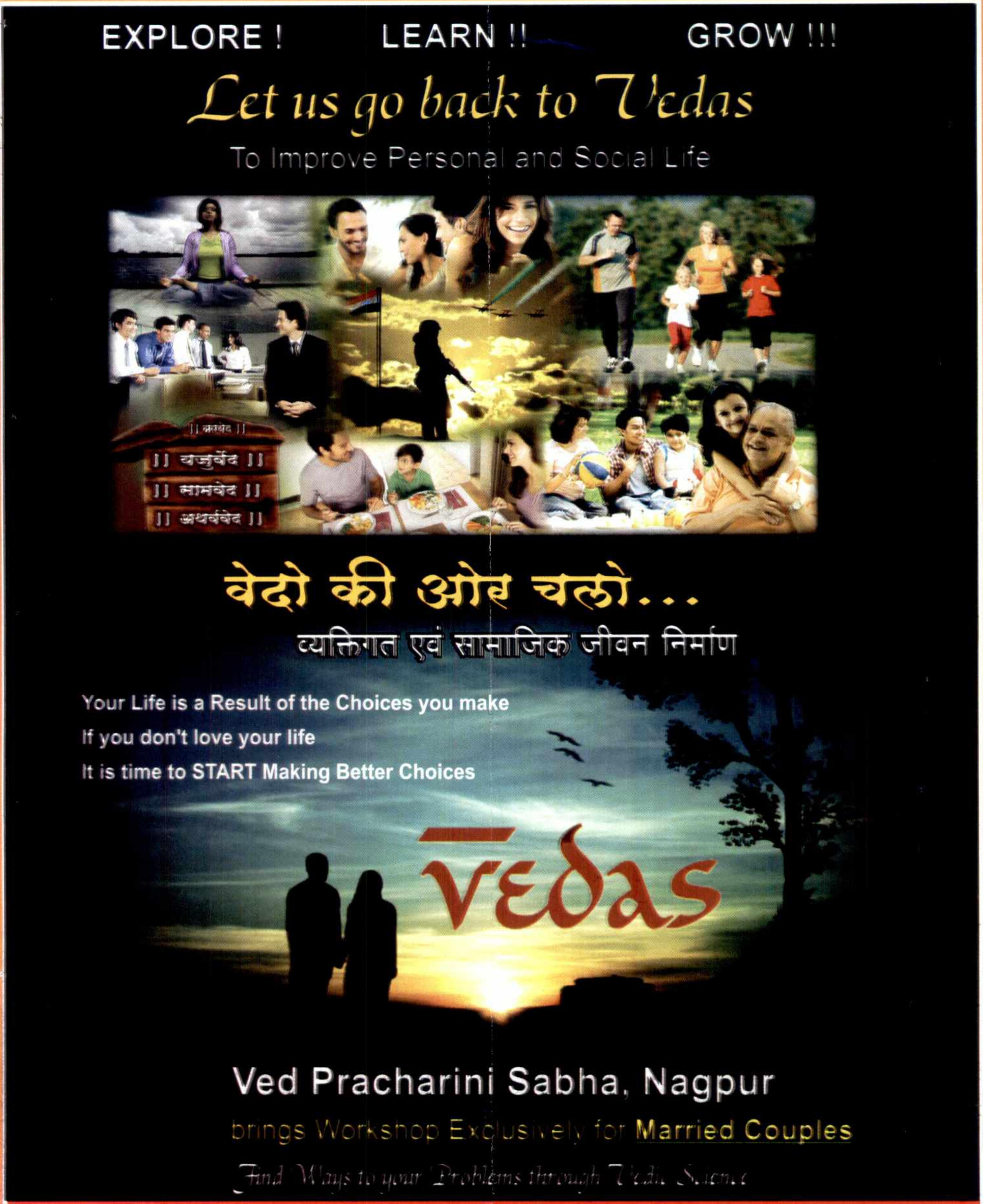

सौजन्य : वेद प्रचारिणी सभा, नागपुर (महाराष्ट्र)

thearyasamaj.org

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

आर.एन.आई. - एम.पी.एच.आई.एन. २०१२/४५०६९
डाक पंजीयन - एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

वर्ष- ३, अंक- ११
अवधि- मासिक, भाषा हिन्दी
प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ सितम्बर २०१४
प्रकाशन आर्ष तिथि : कार्तिक, शुक्लपक्ष, प्रतिपदा
सृष्टि संवत् : १,९७,२९,४९,११६
कलि संवत् : ५,११६
विक्रम संवत् : २०७१, दयानन्दाब्द : १९१

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
सुखदेव शर्मा, इंदौर - ०९४२५०६९४९१

संपादक	*सह सम्पादक*
गजेश शास्त्री	नितिन शर्मा
०९९९३७६५०३१	०९४२५९५५१९१

शब्द संयोजन एवं साज सज्जा - कु. भाग्यश्री शर्मा

प्रकाशन स्थल एवं पत्र व्यवहार का पता
१२/३, संविद नगर, इंदौर-१८, मध्यप्रदेश
ई.मेल.-vaidiksansar@gmail.com

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

एक प्रति - २५/-
वार्षिक सहयोग - २५०/- (१२ प्रति)
त्रैवार्षिक सहयोग - ६००/- (३६ प्रति)
आजीवन सहयोग - २,१००/- (१५ वर्ष)
आधार स्तंभ - ११,०००/- (न्यूनतम)
विशिष्ट सहयोग - २५,०००/-
अन्य सहयोग - स्वेच्छानुसार
बैंक खाता धारक - वैदिक संसार
भारतीय स्टेट बैंक, शाखा-ओल्ड पलासिया, इंदौर
करंट खाता क्रमांक - ३२८५९५९२४७९
आई.एफ.एस. कोड क्र.-एस.बी.आई.एन.०००३४३२

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अंधकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज - वैदिक संसार

अनुक्रमणिका

विषय	प्रस्तुति	पृष्ठ क्र.
लव जिहाद का जनक लव मैरेज	संपादकीय	०४
वेद मंत्र, भावार्थ एवं पत्रिका उद्देश्य	वैदिक संसार	०५
हार्दिक आभार एवं बधाई	वैदिक संसार	०६
मुस्लिम बने दो युवक हिन्दू धर्म में वापिस लोटे	संकलित	०७
योग साधना-स्वानुभूति	स्वामी ओमानन्द सरस्वती	०८
ओंकार नाद चहूँ ओर	सत्यपाल शर्मा	०८
हमारी महान् विभूतियाँ - ऋषिका घोषा	शिवनारायण उपाध्याय	०९
- महात्मा ज्योतिबा फूले...	आचार्य रामगोपाल सैनी	१०
स्वामी दयानन्द सरस्वती और विज्ञान	शिवनारायण उपाध्याय	११
स्वामी अग्निवेश आये चर्चा में	आचार्य रामगोपाल सैनी	१२
विद्वानों की दृष्टि में सोम	महात्मा चैतन्य मुनि	१३
आस्था के दलदल में	राजेन्द्रप्रसाद आर्य	१६
परमात्मा का दिव्य ज्योति स्वरूप	मृदुला अग्रवाल	१७
सुनो स्वरूपानन्द जी! आप लगाकर ध्यान	नन्दलाल निर्भय	१८
ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना के आठ मंत्रों पर.....	ओमप्रकाश आर्य	१९
राष्ट्रीय पर्व बनाम आर्य समाज	ले. नरसिंह सोलंकी	२०
हमारा मित्र	अभिमन्यु कुमार खुल्लर	२१
ओ३म् ही गणेश-कुण्डलियाँ	भारतेन्द्र आर्य	२२
सत्य-असत्य निर्णय परीक्षा पंच विद्या	स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती	२३
जेहि के जेहि सत्य सनेहू। सो तेहि मिलेहि न.....	आचार्य दार्शनेय लोकेश	२४
सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास पर चिन्तन	सुरेशचन्द्र दीक्षित	२५
वैदिक संसार प्रकाशन की आवश्यक सूचनाएँ....	वैदिक संसार	२६
गोहत्या एवं गोमांस भक्षण निर्दयता का.......	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	२७
शिष्टाचार	नरेन्द्र आहूजा	२८
देवताओं का साम्राज्य था सामंत शाही	अमरजा टोपे शेकदार	२९
योगस्थली आश्रम दुचौली रोड़ - एक परिचय	वैदिक संसार	३०
किसकी सुनें - किसको चुनें	प्रो. चन्द्रगोपाल खले	३१
बुनियाद	ओमप्रकाश बजाज	३१
प्रेम विवाह-हिन्दू विवाहसंस्था को विघटित कर...	सूरजमल त्यागी	३३
एक पत्र पूर्ण विकसित द्वीप सिंगापुर से	आचार्य आनन्द पुरुषार्थी	३४
क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर	वानप्रस्थ साधक आश्रम	३५
एक वर्षिय सघन साधना शिविर	दर्शन योग महाविद्यालय	३५
आध्यात्मिक जिज्ञासा/ प्रश्न आपके, समाधान...	वैदिक संसार	३६
आर्य जगत् की सम्पन्न गतिविधियाँ	संकलित	३७
वैवाहिक आवश्यकता	संकलित	३८
आर्य जगत् की प्रस्तावित गतिविधियाँ	संकलित	३९
शोक सूचनाएँ	संकलित	४२

thearyasamaj.org

संपादकीय

सांस्कृतिक, राष्ट्रीय एवं मानवीय मूल्यों के लिये अहम् चुनौती

लव जिहाद का जनक लव मैरेज

प्रचलन में है कि प्यार अंधा होता है, अवश्य होता होगा क्योंकि प्यार, मोहब्बत, ईश्क, आशीकि, लव, मैरेज, जिहाद आदि शब्द उस संस्कृति के हैं जहाँ भोगवाद का साम्राज्य है प्यार, मोहब्बत, लव मैरेज के मायने मात्र दो भिन्न-भिन्न शरिरों का मिलन और शारीरिक भुख के वेग का क्षणिक विराम मात्र है जिसे प्रेय मार्ग तो माना जा सकता है किंतु वह श्रेय कभी नहीं हो सकता।

यही कारण है कि प्यार अंधा होता है क्योंकि प्रेय मार्ग व्यक्ति को विवेक विहिन बनाता है।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् वसुधा भर के लोगों का कुटुम्ब (परिवार) और उन्हें **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** अर्थात् समूचे संसार के मानवों को आर्य मनुष्य अर्थात् गुण-कर्म-स्वभाव से श्रेष्ठ मननशील प्राणी बनाओं का सन्देश देने वाली वैदिक संस्कृति एक मात्र संस्कृति है जो मानव को श्रेय मार्ग की ओर ले जाकर प्राणीमात्र का कल्याण करती है। यहाँ बनाओं से तात्पर्य साम, दाम, दण्ड, भेद अपनाकर जोर-जबर्दस्ती अपनी विचारधारा में रंगना नहीं होकर मनुष्य को संसार में उत्पन्न करने के साथ इस संसार में किस प्रकार रहते हुए इस संसार में उपलब्ध साधनों का सदुपयोग करते हुए अपने लक्ष्य मोक्षानन्द की प्राप्ति करें का परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान आधारित जीवन निर्माण करना है। वैदिक ज्ञान से युक्त होने पर मनुष्य प्रेय और श्रेय में ठीक-ठीक अन्तर कर पाता है। विवेकशील व्यक्ति भलीभाँति जानता है कि श्रेय मार्ग सृजनात्मकता का मार्ग है जबकि प्रेय मार्ग में विध्वंसात्मकता की प्रबल संभावना पायी जाती है। प्रेय मार्ग व्यक्ति को स्वार्थ, संकीर्णता और भोगवाद की ओर ले जाता है। वहीं इसके विपरित श्रेय मार्ग व्यक्ति को परोपकारी, दूरदृष्टा और त्यागवादी बनाता है।

विवेक विहिन वासनामयी आवेग रूपी लव

संस्कृति निर्देशित मर्यादा युक्त अटूट् बंधन

वैश्विक पटल पर वैदिक संस्कृति की धुर विरोधी दो पृथक-पृथक विचारधाराएँ विस्तृत पैमाने पर कार्यरत हैं जो अपनी उत्पत्ति के समय से ही किसी न किसी माध्यम से समूचे संसार पर अपनी विचारधारा येन-केन प्रकारेण थोपना चाहती है। लव और जिहाद इन्हीं दो पृथक-पृथक विचारधाराओं की उत्पत्ति है। लव अर्थात् प्यार के विषय में हम स्पष्ट कर आये हैं कि प्यार अथवा प्यार में पागल व्यक्ति क्यों अंधा होता है। और विचार करें कि अज्ञानता के गहन अंधकार में डूबे हुए व्यक्ति के चक्षु होते हुए भी किस काम के? उसे नहीं दिखता कि जो उसके सामने प्यार का देवता बनकर खड़ा है वह छलावा है उसे भोली-भाली, मन को भा जाने वाली शक्ल के दिमाग में राक्षस वृत्ति के किड़े रेंग रहे हैं। उसे नहीं दिखता कि जिसे वह अपना सर्वस्व सौपने जा रही अथवा जा रहा है वह दूषित मानसिकता से ग्रसित होने से वह कभी भी उसका नहीं था और ना ही कभी उसका हो सकता है। जब तक बात उसे समझ में आती है तब तक प्यार का तुफान निकल चुका होता है। रह जाती है विनाश की भयावह यात्रा तथा अपनो को खोने की टीस। अंधे मजहबीपन एवं वासना के भूखे भेड़ियों के जाल में शिकार इस तरह फंस चुका होता है कि कठपुतलियों की तरह नाचने अथवा आत्महत्या के अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं बचता। (इसी विषय तथा खतरों के प्रति सचेत करती कहानी अभागीन जून माह में पृष्ठ क्र.- २३ पर प्रकाशित की गई थी। जबकि वैदिक संस्कृति के ज्ञान से युक्त व्यक्ति प्रेम, स्नेह और आत्मबल से ओत-प्रोत होता है। वैदिक संस्कृति में शरीर को जड़ और आत्मा को चेतन माना गया है। इस कारण यहाँ प्रेम स्नेह के साथ आत्मियता शब्द का उपयोग किया जाता है। यहाँ विवाह को दो शरिरों का मिलन नहीं अपितु दो आत्माओं का मिलन कहा जाता है। यहाँ धर्मात्मा, प्रज्ञाचक्षु जैसे शब्दों का उपयोग किया जाता है। धर्मात्मा अर्थात् सद् आचरण रूपी धर्म युक्त आत्मा, प्रज्ञाचक्षु अर्थात् व्यक्ति नेत्र ज्योति से विमुख भी हो तो ज्ञान चक्षु इतने प्रबल हों की समूचे संसार का मार्गदर्शन कर सकें। जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरु विरजानन्द जी जिन्हें नेत्र ज्योति नहीं होने के बावजूद **'व्याकरण के सूर्य'** की उपाधि प्राप्त थी, जिन्होंने अज्ञानता के अंधकार से ग्रसित लोगों को वैदिक ज्ञान का प्रकाश देने वाला शिष्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के रूप में दिया।

इन दिनों लव-जिहाद को लेकर व्यापक चर्चा हिन्दुस्तान में सुनाई दे रही है। लव रूपी प्यार की दिवालियेपन की मानसिकता और वैदिक संस्कृति के प्रेम-स्नेह का अन्तर हम बखुबी स्पष्ट कर चुके हैं। वैदिक संस्कृति में जहाँ महिलाएँ एक व्यक्ति को समर्पित होकर पतिव्रता कहलाती थीं, पति का अर्थ ही स्वामी होता है और व्रत का अर्थ शुभ संकल्प को धारण करना अर्थात् अपने स्वामी (पति) के अतिरिक्त पर पुरुष का विचार भी मन में लाना पाप माना जाता था। इसी प्रकार पुरुष भी अपने जीवन में एक स्त्रीधारी जिसे पत्नी कहा जाता है होते थे। पत्नी का अर्थ है पतन से बचाने वाली, अपनी पत्नी के अतिरिक्त परस्त्री पर कुदृष्टि रखना पाप माना जाता था। पराई स्त्रियाँ, माता, बहन, बेटियाँ मानी जाती थीं। वैदिक धर्म मर्यादाएँ नष्ट होने के बाद हमारा शासक वर्ग कामी विलासी, लम्पट होने लगा। जिसका दुष्प्रभाव आम जन पर भी पड़ा। जिसे और अधिक बल मिला एक-दो नहीं दर्जनों औरतों को पत्नी बनाकर रखने की

thearyasamaj.org

विचारधौरा के पदार्पण से। युद्धों की विभिषिका की सर्वाधिक पीड़ा महिलाओं को भुगतना पड़ी। इस विचारधारा के शासक वर्ग की पत्नी के रहने के घर नहीं हरम होते थे। जिसमें सैकड़ों नहीं हजारों महिलाओं के होने की बातें इतिहास में मिलती हैं। विलासिता की वृद्धि हेतु आशीकी, मोहब्बत के तराने सुनाने वाले महारथी होते थे। महिलाओं को नर्तकियाँ तथा वेश्याएँ बनाकर कोठों पर बैठाकर महफिले सजाई जाती थीं, जिसने आगे चलकर हमारी फिल्मी दुनियाँ में सम्मान पाकर मानव सभ्यता को लिलने वाले, महिलाओं को मात्र भोगने की वस्तु बनाने वाले जज्बाती प्यार को परवान चढ़ाया। इनके पश्चात् खाने-पीने और मौज-मस्ती को ही जीवन का अंग समझने वाली पश्चिमी सभ्यता का आक्रमण हमारी घायल संस्कृति पर हुआ। जहाँ औरत भा जाये तो पहले लव उसके बाद मैरेज और मन उब जाये तो फिर डिवोर्स ले दोनों अगले ठिकाने की तलाश के लिये अलग हो जाओ जैसे रिश्ते अंग वस्त्र हो गये जब तक अच्छा लगे पहनो नहीं तो उतार फेकों। हाल ही में समाचार पत्रों में समाचार आया कि इसाईयों के सबसे बड़े धर्मगुरु पोप महाराज ने वेटिकन सीटी में २० जोड़ों का सामूहिक विवाह करवाया, इन २० जोड़ों में एक महिला गर्भवती पाई गई तथा अनेक जोड़े पूर्व से सांथ (लिव इन रिलेशन शीप) में रह रहे थे एवं अनेक जोड़े पूर्व से विवाहित थे, अत: विवाह एक पवित्र परम्परा का पालन न होकर मात्र प्रदर्शन हो गया। इन दूषित मानसिकताओं की कथाओं को फिल्मों के माध्यम से जन-जन को परोसा जाने लगा। देश स्वतंत्र होने के पूर्व से धर्म निरपेक्षता के नाम पर तुष्टीकरण की बयार चली जिसने दूषित विचारधाराओं से लथ-पथ हमारी संस्कृति को और विनष्ट करने का कार्य किया। तुष्टीकरण के चलते जिस अपसंस्कृति से हमें छुटकारा पाना था उसे पृथक भू-भाग देकर स्थायीत्व का बीज बो दिया गया और तो और आर्यावर्त देश को खण्ड-खण्ड करने के बाद भी खण्डित देश में भी इस दूषित विचारधारा को फलने-फूलने हेतु छद्म धर्म निरपेक्षता का लबादा ओढ़ लिया गया जैसे यह विचारधारा अतिथि रूप में शान्तिदूत बनकर आयी हो और इसके हमारे उपर अगणित उपकार हों। रही सही कमी पुरी की फिल्मों में अण्डरवर्ल्ड के हस्तक्षेप ने, धन के लोभ एवं प्राणों की विवशता में सिने जगत् के निर्माता, कथाकार, अभिनेता, अभिनेत्रियाँ अंडरवर्ल्ड के इशारों पर नाचने लगे। अपरोक्ष रूप से संस्कृति पर कुठाराघात करने वाली प्यार-मोहब्बत के रोमांस से कहीं आगे बढ़कर काम-वासना से भरपूर अश्लिलताएँ परोसी जाने लगीं, जिसने स्त्री को पूजने वाली माता के स्थान पर मात्र भोगने की वस्तु बना दिया।

भावी पीढ़ी के आदर्श देश के महापुरुष नहीं हीरो-हीरोइन हो गये वे अपने आपको हीरो-हीरोइनों में ढुंढने लगे जिसका विस्तार होते-होते विकृत मानसिकता को घर-घर परोसने वाला टेलीविजन आ गया। विडियों के माध्यम से ब्लू फिल्मों ने जी भर कर विकृति परोसी उसके बाद अत्यन्त तेजी से लगभग भागते-दौड़ते हम इन्टरनेट की दुनियाँ में आ गये अब दुनियाभर की गंदगी हमारी मुट्ठी में है। संस्कृति-सभ्यता, परार्थ त्याग का पाठ पढ़ाने वाली हमारी शिक्षा विलुप्त हो गई। गुरूत्वाकर्षण रखने वाले गुरु कहीं लुप्त हो वेतनधारी शिक्षक आ गये, जिनका उद्देश्य शिष्य के माध्यम से समाज और राष्ट्र का निर्माण करना नहीं होकर सरकार द्वारा थोपी गई अनेक प्रकार की जिम्मेदारियों के बोझ तले अपनी नौकरी जैसे-तैसे सम्पन्न कर अपना और अपने परिवार का पालन करना भर रह गया। परिणामत: छात्र की दुनियाँ अलग हो गई और शिक्षक का संसार अलग हो गया। गुरु-शिष्य के अटूट गरिमा पूर्ण सम्बन्ध समाप्त होकर मास्टर और छात्र के रूप में दोनों की बीच गहरी खाई वाला कभी नहीं पाटा जाने वाला सम्बंध हो गया। जिसे पाटने की छोटी सी कोशीश देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ५ सितम्बर को शिक्षक दिवस पर की है। वर्तमान में संस्कृति-सभ्यता की बातें कहना उपहास का विषय हो गया, इन्हीं कारणों से आज चारों और हाहाकार है। मानव-मानव कम पशु से भी निपत्तर हो गया क्या यही प्यार का परिणाम है?

अब जिहाद का जहाँ तक प्रश्न है महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा रचयित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें सम्मुलास इस्लाम मत की समीक्षा में यह दर्पण के समान स्पष्ट है कि समुचे संसार के इस्लामीकरण के लिये हर संभव पूर्ण प्रयास में अगर आवश्यक हो तो संघर्ष कर तलवार के बूते पर भी इस्लामीकरण करना। जिहाद शब्द पर परदा डालने हेतु कुछ शातिर दिमाग के लोग यह भी कहते सुने गये हैं कि लोगों ने जिहाद का अर्थ गलत समझ लिया है यह किसी गैर विचारधारा से युद्ध न होकर अज्ञानता और अशिक्षा से संघर्ष का नाम जिहाद है किन्तु इस्लाम भारत में शान्तिदूत बनकर आया अथवा तबाही का आलम लेकर आया इसका गवाह रक्त से लथपथ इस्लामी काल का भारतीय इतिहास है और आज भी समूचे संसार में जिहाद के नाम पर क्या हो रहा है सर्वविदित है।

भारतवर्ष आज-कल से नहीं लगभग १००० वर्ष से बलात् अपनी विचारधारा को थोपने के जिहाद से त्रस्त हो रहा है जो आज भी जारी है। जिसमें महिलाओं को हथियार के तौर पर शुरू से ही इस्तेमाल किया जाता

वेद मंत्र एवं भावार्थ

ओ३म् पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसु।। ऋग्वेद १/३/१०

भावार्थ - सब मनुष्यों को चाहिए कि वे ईश्वर की प्रार्थना और अपने पुरुषार्थ से सत्य विद्या और सत्य वचनयुक्त कामों में कुशल और सब के उपकार करने वाली वाणी को प्राप्त रहें, यह ईश्वर का उपदेश है। **- महर्षि दयानन्द सरस्वती**

वैदिक संसार के उद्देश्य

* महान् योगी संन्यासी, महर्षि, अखंड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्रप्रेमी, नवजागरण के सूत्रधार, अछूत एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खंडन-मंडन के प्रणेता, अंधविश्वास नाशक, पाखंड खंडनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, सत्यार्थ प्रकाश एवं सद्साहित्य प्रकाशक, दयालु, दिव्य दयानंद के समस्त मानव जाति पर किए गए उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।

* वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धांतों, ऋषि दयानंद प्रणीत संदेशों को प्रकाशित करना।

* आमजन में व्याप्त अशिक्षा, धर्मान्धता, अंधविश्वास, पाखंड, कुरीतियों के विरुद्ध जनजागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।

* आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, संदेशों का प्रचार-प्रसार कर प्रतिजन तक उपलब्ध करवाना।

* आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

thearyasamaj.org

रहा है। क्योंकि वैदिक संस्कृति अनुरूप महिला को देवी, माता (निर्माण करने वाली) के स्थान पर मात्र खेती की तरह माना जाता है अर्थात् खूब बीज डालो और खूब फसल लो इन्हीं कारणों से तो इस जिहादी विचारधारा में महिलाओं को उपासना स्थलों में घुसने का अधिकार नहीं क्योंकि वो नापाक जो हैं, उसे स्कूल-कॉलेज जाकर पुरुष के बराबर अपनी उन्नति का अधिकार नहीं यह बिते जमाने की बात नहीं आज के उन्नतिशील युग में और अधिक बर्बरता का उपयोग किया जा रहा है, जिसका उत्कृष्ट उदाहरण पाकिस्तान की मलाला युसुफ जई तथा बोको हराम द्वारा नाईजिरिया से अगवा की गई सैकड़ों स्कूली छात्राएँ हैं क्योंकि वह तो सीर्फ आदमी के उपयोग की वस्तु है और वह भी वो वस्तु है कि आदमी की जिधर से जैसे इच्छा करे, खेती की तरह उपयोग करे। अन्य गैर विचारधारा वाले तो दूर इनकी स्वयं के अपने कहे जाने वाले बुद्धिजीवी जो महिला हो या पुरुष अपनी विचारधारा की गंदगी पर आवाज उठाने वालों को मौत का फरमान सुना दिया जाता है। जिनके प्राणों की रक्षा भी हमारी शरण में हो रही है जिसके उत्कृष्ट उदाहरण सलमान रश्दी और तस्लीमा नसरीन हैं, अभी हाल ही में भोपाल (म.प्र.) के ताजुल मस्जिद के सामने शाकाहारी ईद-उल-जुहा का सन्देश देने हेतु प्रदर्शन कर रहे पीपुल फॉर द एथिकल ट्रीटमेंट ऑफ एनीमल्स (पेटा) के सदस्यों जिनमें बेनजीर सुरैया जिन्होंने फल सब्जियों का बना बुरका पहन रखा था। इन कार्यकर्ताओं को उनके जीवमात्र की दया का शान्ति पूर्ण सन्देश समझने और स्वीकार करने के स्थान पर बुरी तरह पीटा गया। अगर पुलिस ने न छुड़ाया होता तो कोई अनेहोनी घटना घटित हो सकती थी। इन मानवतावादी मूल्यों का सन्देश देने वालों को पिटाई के साथ-साथ पुलिस द्वारा धार्मिक भावनाएं भड़काने के प्रकरण का भी सामना करना पड़ा। बताओं मांसाहार के स्थान पर शाकाहार के पक्ष में प्रचार-प्रसार करना धर्म है या अधर्म? किन्तु इस प्रकरण से सिद्ध होता है कि ईद-उल-जुहा के नाम से मूक प्राणियों को मारकर खा जाना धर्म का काम है और उसके विपरित मानवतावादी जागरुकता का शान्तिपूर्ण सन्देश देना अधार्मिक कार्य है! इसके मूल में है विचारधारा पर कोई तर्क पूर्ण चर्चा नहीं और कोई प्रश्न किया जाएगा तो उसका जवाब तलवार से दिया जावेगा। नाईजीरिया में बोको हराम, इराक-सीरिया में आई. एस., अफगानिस्तान -पाकिस्तान में अलकायदा-तालीबान आदि क्या कर रहे हैं सर्वविदित है। इस दूषित विचारधारा का पालन-पोषण आँखें मूंद कर बगैर कोई विचार किये अमानवीय तरीके अपनाकर बर्बर-नृशंस नरसंहार कर ही तो कर रहे हैं उसमें कोई अपने वाला भी सामने आये तो उसे भी नहीं बख्शते, प्राणों की खैर चाहना है तो उनकी विचारधारा के रास्ते पर चलो क्योंकि उनके अनुसार दुनिया का एकमात्र सत्य उनकी विचारधारा है और उसको नहीं मानने वाला जाहिल गँवार, काफिर और शैतान है उसे जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं ऐसा उनके मालिक का हुक्म है। औरत को चार आदमी रखने का अधिकार नहीं किंतु एक आदमी को चार औरते कानूनन रखने का तोहफा प्राप्त है बताओं क्या ये व्यवस्थाऐं मनुष्य समाज की है? एक-दो नहीं लगभग सभी मुस्लिम आंक्रांताओं ने भारत को लूटने-खसोटने के साथ बलात् इस्लाम कबूल करवाया और जिन्होंने इस्लाम कबूल नहीं किया उन्हें मौत के घाट उतार दिया गया उनकी बूढ़ी स्त्रियों को काट डाला गया और जवान औरतों को सैनिकों में बाँट दिया गया। एक-एक सैनिक के पास २०-२०, २५-२५ औरते रखने तथा अपने देशों में दो-दो, तीन-तीन रूपयों में बेचने का वर्णन इतिहास में पाया जाता है। पराजित राजाओं की युवा पुत्रियों को निकाह कर अपने हरम में डालने हेतु विवश किया जाता था। इनसे भयांक्रित होकर अनेकों राज परिवारों की अनेकों महिलाओं ने अपनी दुर्गती से बचने हेतु आत्महत्याएं की।

इतिहासकार और फिल्मकार अकबर को दयालु, उदार बताते हुए महान् दर्शाने के उधेड़बुन में जोधा-अकबर और अकबर द ग्रेट फिल्में प्रस्तुत कर भावी पीढ़ी को रक्त रंजित इतिहास से भटका रहे हैं। उनसे हमारा प्रश्न है कि अकबर अगर महान् था तो महाराणा प्रताप क्या चोर-डाकू थे? हमारा प्रश्न उन समस्त लेखकों, इतिहासकारों और फिल्मकारों से है जो इस रक्त रंजित इतिहास के स्थान पर आक्रांताओं को महिमा मंडित करने से नहीं चुकते वे बतायें कि 'जौहर प्रथा' जिसमें १४०००-१२००० स्त्रियों के एक साथ जिन्दा जल मरने की घटनाए इतिहास में दर्ज है यह जौहर प्रथा तथा रात्रिकालीन विवाह, बाल विवाह, घूंघट प्रथाए कब, क्यों तथा किसलिए भारत में प्रारम्भ हुई?

इसके विपरित वैदिक संस्कृति में महिलाओं का सम्मान का उत्कृष्ट उदाहरण छत्रपति शिवाजी का है जिन्होंने अपने सेनापति द्वारा पराजित मुस्लिम बादशाह के परिवार की महिला को लाकर उपहार के रूप में प्रस्तुत करने पर फटकार लगाई थी तथा सेनापति के कृत्य पर माफी मांगते हुए उस महिला को उसके परिवार को लौटाया था।

सूत्रों से पता चलता है कि ब्रिटीश काल में भी **'हसन निजामी'** नामक एक गिरोह देश में सक्रिय था जिसका कार्यक्षेत्र विशेषकर उत्तरप्रदेश था जिसका प्रमुख कार्य मुस्लिम लड़कों को हिन्दू लड़कियों को पटा-फुसलाकर जाल में फंसाने का होता था, इस कार्य हेतु आर्थिक सहयोग उस समय के मुस्लिम नबाबों, निजामों, जागीरदारों द्वारा मुहैया करवाया जाता था। इस गिरोह का भंडा फोड़ और विनिष्ट करने का कार्य उस समय कुरान के विद्वान् पं. रूद्रनारायण शास्त्री ने मुसलमान के रूप में इस गिरोह में सेंधमारी कर किया था। उस काल में आर्य समाजों के भवन कच्चे होते थे किन्तु आर्य समाज का व्यक्ति प्राणों को दाँव पर लगाकर धर्म, संस्कृति की

हार्दिक आभार एवं बधाई

आप समस्त स्नेहीजनों तथा शुभचिन्तकों के सहयोग-समर्थन से **'वैदिक संसार'** अपनी जीवन यात्रा के तीन वर्ष पूर्ण कर चतुर्थ वर्ष में प्रवेश कर चुका है। इस हेतु आप सभी महानुभावों का हृदय की गहराइयों से आभार एवं बधाई व्यक्त करता हूँ।

आशा करता हूँ कि धर्म, संस्कृति तथा राष्ट्रीय मूल्यों के संरक्षण संवर्धन हेतु वैदिक संसार द्वारा संपादित ज्ञान यज्ञ में आप महानुभावों द्वारा पूर्ववत अपना सहयोग व समर्थन प्राप्त होता रहेगा।

वेद एवं ऋषिकृत वाणी में कहीं कोई न्यूनता अथवा दोष नहीं है, प्रकाशन कार्य श्रमसाध्य होने तथा समय और साधनों के अभाव में जहाँ कहीं भी त्रुटी हुई हो वह मेरी अपनी है, उसके लिए भी इस अवसर पर क्षमायाचना करता हूँ।

-सुखदेव शर्मा
प्रकाशक-वैदिक संसार

thearyasamaj.org

रक्षार्थ दृढ़ व सच्चा होता था। विडम्बना है कि आज आर्य समाज के भवन पक्के हो गये किन्तु आर्य समाजी कच्चे हो गये।

कासगंज (उ.प्र.) के स्वामी नित्यानन्द जी, इन्दौर (म.प्र.) के लालाराम जी आर्य, धार (म.प्र.) के पं. रामलाल जी जैसे सैकड़ों महारथी ऐसे थे जो मजहबी भूखे भेड़ियों के चंगुल में फँसी बेटियों को प्राणों की चिन्ता किये बगैर निकाल कर लाते थे और अपने संरक्षण में रखकर उनकी मानसिक शुद्धि पश्चात् उनका विवाह आदि करवा कर उनका पुनर्व्यवस्थापन भी करते थे।

आज हमारी पीढ़ी हमारी संस्कृति युक्त शिक्षा और इतिहास के घटित घटनाक्रमों से विमुख है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सहशिक्षा के प्रति चेताया था तथा कहा था की लड़के-लड़कीयों के शिक्षा के केन्द्र दूर-दूर हों और लड़कियों की शिक्षा हेतु महिला आचार्यों की व्यवस्था हों। किन्तु देश के स्वतंत्र होने के ६८ वर्षों बाद भी हम उच्चतम सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों युक्त वैदिक शिक्षा तथा इतिहास में इस राष्ट्र और संस्कृति के लिये सर्वस्व होम करने वालों से अवगत करवाने वाली शिक्षा तथा भोगवाद से होने वाली क्षति और त्यागवाद के सुपरिणामों से अवगत करवाने वाली शिक्षा नीति स्थापित नहीं कर पाये। उल्टे विचारधारा के आधार पर देश के टुकड़े करवाने के बाद भी छद्म धर्म निरपेक्षता की पट्टी आँखों पर बांधकर जिस विचारधारा से सैंकड़ों वर्ष हम पीड़ित रहे उससे छुटकारा पाने हेतु ५५ करोड़ रूपये और हजारों वर्ग मील भूमि विभाजन के बाद दे देने के उपरांत भी जिहाद का विषधर आस्तीन में पालते आ रहे हैं। हमारी सजग सुरक्षा एजेंसियों के कारण तलवार का जोर तो चलता नहीं अब इन को एक नया रास्ता लव मैरेज की बिमारी के कारण से पथभ्रष्ट हुई हमारी भावी पीढ़ी को शिकार बनाने का शस्त्र इनके हाथ आ गया है।

जिसे हमारे सत्ता लोलुप नेताओं ने राष्ट्रवाद की बली चढ़ाकर तुष्टीकरण का खाद-पानी ही दिया है।

इस विचारधारा से मुक्ती का एक सुनहरा अवसर हमने हमारी संकिर्णता वाली सोच और हमारे तुष्टीकरणवादी नेताओं के कारण विभाजन से पूर्व स्वामी श्रद्धानन्द जी के शुद्धि आंदोलन के समय गँवा दिया। अगर सबने बढ़-चढ़कर शुद्धि आंदोलन को सहयोग किया होता तो संभव था देश विभाजन का दंश भी नहीं झेलता।

काश! हम समय रहते हमारे व्यवहार पर चिंतन कर

मुस्लिम बने दोनों युवक वापस हिंदू धर्म में आए

नगर पंचायत अध्यक्ष अनिता साहू ने अब भाई माना

मध्यप्रदेश के शिवपुरी जिले के बुकर्रा ग्राम के तुलाराम जाटव और मनीराम जाटव द्वारा धर्म परिवर्तन करने के बाद अपने परिवार रिश्तेदारों के २० सदस्यों के धर्म परिवर्तन करने की बात क्या कही हमारी दिखावेबाजी की नौटंकी शुरू हो गई। हमारे तथाकथित नेताओं-संरक्षकों की नींद खुली और फिर मनीराम, तुलाराम और उनके परिवारजनों की पुछ-परख हुई उन्हें अपने मूल धर्म में वापसी हेतु समझाया गया। मनीराम के दाढ़ी-बाल कटवाकर, नहलाकर शुद्धि उपरांत धोति-कुर्ता एवं यज्ञोपवित पहनाया गया इसके साथ ही क्षेत्र के खनियाधाना मंदिर में पूजा-अर्चना और हवन कर घर वापसी प्रक्रिया सम्पन्न की गई।

इस अवसर पर खनियाधाना की नगर पंचायत अध्यक्ष अनीता साहू ने सार्वजनिक रूप से मनीराम को अपना भाई माना तथा मनीराम की पत्नी को साड़ी, शाल श्रीफल भेंट किया।

इस मौके पर मनीराम का एक बेटा नीलेश व तुलाराम के परिवार के आठ सदस्य और क्षेत्र के गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे किंतु मनीराम का बेटा केशव उर्फ कासिम तथा उसका भाई रिंकू इस आयोजन से दूर रहे।

किसी घटना के घटित हो जाने पर तो हम खुब हमारी सक्रियता दिखाते हैं इसका दुष्प्रभाव होकर अन्यों को प्रोत्साहन प्राप्त होता है कि ऐसा करने से हमारी पुछ परख होगी हमें भी मान-सम्मान मिलेगा। अतः आवश्यक है हम समय रहते हमारे शोषित-पीड़ित सेवक वर्ग के साथ हमारे व्यवहार पर चिन्तन करे और किसी घटना की प्रतिक्षा किये बगैर उन्हें सचमुच गले लगाये, दिखावा नहीं! पूर्ण आत्मीय स्नेह प्रदान करे। जिस दिन ऐसा होगा उस दिन राष्ट्रवाद का ग्रहण जातिवाद समाप्त होकर हम हमसे बिछुड़कर अन्य मत में चले गये जो जिहाद के कंधे बन रहे हैं को भी घर वापसी कर पाने में सफल होंगे। समस्या का समाधान घृणा से नहीं जमीनी स्तर पर मधुर व्यवहार से होगा अन्यथा आवागमन से मानव मात्र के मूल वैदिक धर्म और आर्यावर्त की हानि ही होनी है।

जागो जागो जागो

इस जिहाद नामी विषधर से हमारे सांस्कृतिक, मानवीय मूल्यों एवं राष्ट्र को बचाना है तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के भरोसे चैन की बंसी बजाने से काम नहीं चलेगा प्राणी मात्र की कल्याणकारी इस संस्कृति और राष्ट्र के प्रति हितैषी प्रत्येक व्यक्ति को अतित की हुई भूलों से सबक ले निम्न कार्य करना होंगे।

१. जातिवाद को तिलांजली देकर राष्ट्रवाद को अपनाकर वर्षों से शोषित-पीड़ित वर्ग को गले लगाकर यथेष्ट मानवीय मान-सम्मान देना होगा जिससे इस वर्ग में दोनों विरोधी विचारधाराओं द्वारा तेजी से बढ़ती जा रही घुसपैठ पर विराम लग सके।

(३० अगस्त को शिवपुरी (म.प्र.) में तुलाराम जाटव से करीम बने व्यक्ति ने अपने परिवार के २० सदस्यों के धर्म परिवर्तन शीघ्र करने हेतु कहा है। यह मात्र एक उदाहरण है, हजारों लोग जा चुके हैं और जा रहे हैं)

२. हमें विशेष कर आर्य समाजों को पितृयज्ञ की अवहेलना करने वाले अवांछित प्रेम-विवाहों से आहत आर्यसमाज के उत्कृष्ट इतिहास पर लगे कलंक को धोना होगा और अविलम्ब इस पापकृत्य पर रोक लगाना होगी।

३. हमें वैदिक धर्म संस्कृति और आर्य समाज के उत्कृष्ट इतिहास और योगदान से हमारी भावी पीढ़ी और भटक चुके लोगों आदि जन-जन को अवगत करवाना होगा।

४. हमें हमारी भावी पीढ़ी और जन-जन को मित्र और शत्रु संस्कृति का परिचय देना होगा।

५. बंगला देश के निर्माता कालीपाद ब्राह्मण उर्फ कालापहाड़ के इतिहास से सबक लेकर अज्ञानतावश अथवा पस्थितिवश भटक चुके लोगों को सहानुभूति प्रदान कर उन्हें हर संभव सहयोग देना होगा। (यह घटना भी तो लव जिहाद ही थी हम पराये को अपना बनाना तो दूर अपने को भी अपना बना कर नहीं रख पाये। अगर हमारा व्यवहार सकारात्मक होता तो

शेष पृष्ठ-३२ पर....

"योग साधना-स्वानुभूति"

- स्वामी डॉ. ओमानन्द सरस्वती
वेद मंदिर महर्षि दयानन्द संस्थान, चन्दूखेड़ी
जिला-उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष : ०९७५४९३२१९१

"आत्म साक्षात्कार कहाँ, कैसे-विधि-जानें।" **"ओ३म् का अजपा जप-चिंतन-मनन निरन्तर करें।"** इस पर योग-प्रोक्त यम-नियम-आसन-प्राणायाम इत्यादि के द्वारा इसका विज्ञान प्राप्त हो जाता है। **"ततः क्षीयते प्रकाशावरणम्।।** (यो.द.२/५२) अर्थात्-प्राणायाम से सत्वगुण रूप प्रकाश का क्लेशरूप आवरण नष्ट हो जाता है।" **धारणासु च योग्यता मनसः।** (यो.द.२/५३) धारणा में मन स्थिर हो जाता है। **"ध्यानं निर्विषयं मनः"** मन विषय-वृत्तियों=विचारों से रहित होकर एकाग्र हो जाता है-तब समाधि स्थिति=बुद्धि भी न शोचति न कांक्षति=अर्थात्-चेष्टा-इच्छा नहीं करती है।

तब ध्यान में नाना प्रकाश-रंग=अनुभव होने लगते हैं, आन्तरिक दृष्टि से आन्तरिक दर्शन अनुभव होते हैं। जैसे:-

नीहार धूमार्का नला निलानां खद्योत-विद्युत्-स्फटिक-शशिनाम्।
एतानि, रूपाणि पुरः सराणि ब्रह्मण्यभिव्यक्ति कराणियोगे।।
-श्वेता.उप.२/११

अर्थ :-धुन्ध, धूआँ, धूप, आग, वायु (हरित), जुगनू, बिजली (विद्युत), काँच, चन्द्र, इन्द्र, गोप जैसे रूप योग में आरम्भ में सामने अनुभव में आते हैं। यही ब्रह्माभिव्यक्ति तक पहुँचाते हैं।

उपरोक्त पूर्व दृष्ट भूमध्य=भृकुटी में दिखने वाली यह ज्योति यद्यपि अन्दर सदा ही विद्यमान रहती है, परन्तु ध्यान योग के अनुष्ठान=पालन के बिना साधारण मनुष्यों को यह दिखाई नहीं पड़ती-यह मानव-सूक्ष्म-शरीर का **"दिव्यनेत्र"** है। इसी के द्वारा अब ध्यानस्थ होकर आप अपनी इस अष्ट चक्रा, नव द्वारा=अयोध्यानगरी=पवित्र, अन्तःकरण में सब आन्तरिक रूप देख सकते हैं एवं आन्तरिक विज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं। इसी **सक्ष्मनेत्र-दिव्यनेत्र-तृतीयनेत्र** के द्वारा प्रत्येक **"सूक्ष्म शरीर"** सदा **"सूक्ष्मपदाथो"** को देखा करता है। **"ध्यान-साधना"** विधि अनुभूत :- अष्टांग योग के प्रथम चारों अंगों का अनुष्ठान-पालन से अन्नमय कोश-स्थूल शरीर को तप :-पूत कर तथा "मन" को धारणा में कुशल बनाने के लिये श्रद्धा और उत्साह से निरन्तर-अभ्यासरत रहें। अब नित्य के अभ्यस्त आसन से शान्त-एकान्त में बैठकर, संकल्प-विकल्पों का अभाव करते हुए, थोड़े समय के लिये भी जब मन निश्चल-सा दिख पड़े तब **"उन्मूनी-मुद्रा"** द्वारा नेत्र मूंदकर भृकुटि-मध्य में ध्यान दृष्टि के द्वारा मन को स्थिर कर दें। यहाँ पर अपनी कल्पना से प्रकाश को देखने का प्रयत्न करें-मानो कि आप इस स्थान को अन्दर नेत्र खोल कर देख रहे हों किन्तु इस समय किसी भी विचार को उठने न दें। मस्तिष्क पर अधिक बल भी न डालें। दो-चार मिनट यहाँ सहज भाव से देखते रहें, फिर शान्त भाव से बैठे रहें, क्योंकि निरन्तर एक टक दृष्टि से देखने से मस्तिष्क थक जाता है और अनभ्यस्त मन भी उचट जाता है। परन्तु कुछ देर तक मानसिक व्यापार रोक देने पर निश्चल बैठ जाने पर, "मन" "बुद्धि" की शक्ति बढ़ जाती है। इसी क्रम से कुछ समय ध्यान करते रहने के बाद आपकी भावना एवं संकल्प बल से भूमध्य में अवश्य प्रकाश उत्पन्न होगा। चाहे पहले-धुन्धला व छोटा सा हो। आगे चल कर वह **"बृहद् ज्योति करिष्यतः"** महान प्रकाश-ज्ञान, शान्ति-आनन्द का अनुभव होगा। -निरन्तर अभ्यास से शरीर-मन-इन्द्रियाँ अभ्यस्त होकर फिर ये अपने-आप ही, ध्यान-समाधि में प्रवृत्त दर्शन करने लगेंगे।। इसका फल निराश व आलसियों को नहीं मिलता।। ●

ओंकार नाद चहूँ ओर

सुरीला संसार के सौजन्य से
-सत्यपाल शर्मा
वैदिक पुरोहित, प्रवक्ता एवं भजनोदेशक
आर्य नगर, देहरी, जिला-मन्दसौर म.प्र.
चलभाष- ०८४३५७४६४७४

शास्त्रीय संगीत नाद-साधना, प्राण योग का सनातन स्त्रोत है। आपने देखा होगा कि ओम् साधना से ओज की वृद्धि होती है एवं आध्यात्मिक सिद्धि मिलती है। ओ३म् में **'अ' ऋग्वेद, 'उ' सामवेद तथा 'म्' यजुर्वेद है। सिद्धि साधना व जीवन के सर्वतोमुखी विकास के लिए जब आराधना की जाती है, वह 'तत्व' अथर्ववेद है। पूरे ब्रह्माण्ड में ओंकार का सूक्ष्म नाद समाया हुआ है जो प्राणवायु आक्सीजन को सक्रिय करता है। धार्मिक दृष्टि से नहीं अपितु तात्विक दृष्टि से चिन्तन करने पर पता चलेगा कि "ओंकार" से स्वर योग, नाद योग, प्राण योग किया जाए तो अनेक बीमारियों से हम बच सकते हैं।**

शास्त्रीय संगीत में सोल थैरेपी है जिसमें स्वरों के ध्वनि स्पन्दन से स्पीच थैरेपी, न्यूरो थैरेपी एवं साइको थैरेपी के प्रभाव से आशातीत लाभ मिले हैं। ऐसे रोगियों पर जब किये वे जीवन में आशान्वित एवं लाभान्वित हुए हैं साथ ही उनका अभूतपूर्व आत्मबल बढ़ा है।

अनुनासिक, मुद्रितगमक, मुँह बंद करके गाने से नजला, सर्दी, जुकाम दूर होता है। तार सप्तक एवं तालू मूर्छा प्रधान गायन व अतितार स्वरों के प्रयोग से मस्तिष्क के रोग, श्लेष्मा, एपीलेप्सी, सिरदर्द पर प्रभाव पड़ता है। कंपित स्वरों से रोमांच होता है। अनुनासिका गायन से श्वास संस्थान, मंद्रमध्य गायन से पाचन संस्थान, पेन्क्रियास मंद गायन से कोष्ठबद्धता पर प्रभाव पड़ता है। हुंकित गमक स्वर संधान एवं नाद्योग से कुंडलिनी शक्ति व स्वर प्राणयोग साधन से वीर्य उर्ध्वगामी होता है। प्रीमैच्योर डिस्चार्ज ठीक हो जाता है। नाक, कान, गले के रोग दूर होते हैं। अचानक कुछ सुनने, बाहर जाने या काम आ जाने के पहले टायलेट जाना, नर्वस सिस्टम की कमजोरी, आत्मविश्वास की कमी, पसीना आ जाना, घबराहट होना इन सभी रोगों से निजात मिलती है। मुख मण्डल ओजस्वी बनता है। छूट सपाट की तान से उत्साह, ऊर्जा शक्ति व सामर्थ्य की तुरन्त वृद्धि होती है। मन-मस्तिष्क में त्वरित चेतना आती है। स्वर

शेष पृष्ठ-३२ पर....

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

गतांक से आगे - वेदों की ऋषिकाएँ

ऋषिका घोषा

-शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

घोषा ऋग्वेद मण्डल १० सूक्त ३९ तथा ४० की दृष्टा हैं। यह काक्षीवत् ऋषि की पुत्री थी। इसलिए वेद में इसका नाम काक्षीवत् घोषा मिलता है। बृहद् देवता में इसके सम्बन्ध में लिखा है कि अस्वस्थ रहने के कारण यह बहुत दिनों तक अविवाहित रही। फिर देवताओं के वैद्य अश्विनो की उपासना करके स्वस्थ हुई। दोनों सूक्तों के देवता अश्विनो हैं। दोनों सूक्तों के अध्ययन से विदित होता है कि घोषा सबके लिए अच्छे स्वास्थ्य एवं वास्तविक ज्ञान की कामना करती है। सूक्त ३९ में १४ तथा सूक्त ४० में भी १४ मन्त्र हैं। वैद्यों से प्रार्थना की गई है कि वे हमें ज्ञान और उत्तम स्वास्थ्य दें।

चोदयतं सूनृताः पिन्वतं धिय उत्पुरन्धीरीरयतं तदुश्मसि। यशसं भागं कृणुतं नो अश्विना सोमंनचारुं मघवत्सु नस्कृतम्।।
ऋ. १०.३९.२

पदार्थ-हे वैज्ञानिक और वैद्य। आप दोनों हमें उत्तम वाणी दो। बुद्धि से पूर्ण करो और प्रज्ञा दो। इन तीनों को हम चाहते हैं, हमें यशस्वी धन का भागी बनाओ। धनिकों अथवा यज्ञशीलों के मध्य हमें उत्तम सोम की तरह कीजिए।

रथ यान्तं कुह को ह वां नरा प्रति द्युमन्तं सुविताय भूषति। प्रातर्यावाणं विभ्वं विशेविशे वस्तोर्वस्तोर्वहमानं धिया शमि।।
ऋ. १०.४०.१

भावार्थ-हे अध्यापक और उपदेशक! आप सबके नेता हो। दीप्तिमान शरीर जो प्रातः काल यज्ञादि में भाग लेता है और प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन जाकर शिक्षा और उपदेश देता हो उसे वस्त्र, अन्नादि प्रदान करके कहाँ कौन अलंकृत करता है अर्थात् प्रजाजन और राजकीय पुरुषों के अतिरिक्त और कौन ऐसा करेगा?

अब विषय को विस्तार न देकर एक मन्त्र और देकर कलम को विराम देते हैं।

क्व स्विदद्य कतमास्वश्विना विक्षु दस्रा मादयेते शुभस्पती। क ईं नियेमे कतमस्य जग्मतुर्विप्रस्य वा यजमानस्य वा गृहम्।। ऋ १०.४०.१४

पदार्थ-हे अध्यापक और उपदेशक! दर्शनीय और शोभन पदार्थों के स्वामी आप दोनों आज कहाँ स्थित हो? किन प्रजाजनों में हर्ष प्राप्त करते हो? कौन आप दोनों को अपने पास रोकता है? किस यजमान अथवा मेधावी के घर जाते हो? ये प्रश्न इसलिए पुछे गए हैं जिससे यह ज्ञात हो जावे कि इन्हें वहाँ कोई असुविधा तो नहीं है। इतिशम्। ●

माननीय सम्पादक महोदय।
वैदिक संसार (मासिक) इन्दौर (म.प्र.)
सादर नमस्ते,

यह पत्र मैं आपकी पत्रिका को इस बात के लिए **'साधुवाद'** देने के लिए लिख रहा हूँ कि इसके माध्यम से मुझे मेरी लम्बे समय से अनुत्तरित चल रही जिज्ञासा का समाधान मिल गया।

मैंने कई समाचार पत्रों को कई बार लिखा है कि मंत्रदृष्टा ऋषियों की भांति क्या कुछ मंत्रदृष्टा ऋषिकाएँ भी हुई हैं?

दिसम्बर २०१३ के **'वैदिक संसार'** में आपने यही जिज्ञासा विषयक पत्र प्रकाशित किया था तो इसके उत्तर में आर्यजगत् के उद्भट विद्वान् शिवनारायण उपाध्याय, कोटा ने विगत अंकों से निरन्तर १-१ नारी ऋषिका का परिचय एवं उनके द्वारा दृष्ट सूक्तों, मंत्रों का विवरण दे रहे हैं।

पहले अंक में ऋषिका **'अदिति दाक्षायणी'**, दूसरे में **'सूर्या सावित्री'** तथा अंक जुलाई में **'लोपामुद्रा'** व अगस्त में **'विश्ववारा आत्रेयी'** का परिचय दिया है।

ऐसे गूढ एवं गवेषणात्मक प्रश्नों का उत्तर वही विद्वान् दे सकता है जो गंभीर अध्ययन कर चुका है। श्री शिवनारायण जी उपाध्याय वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध एवं तपोवृद्ध विद्वान् हैं। ऐसी खोजपूर्ण जानकारी देने के लिए आप बहुत ही साधुवाद के पात्र हैं।

मैंने विगत ५० वर्षों में काफी आर्ष साहित्य का अध्ययन किया है। यह तो कई विद्वान् अपने लेखों में लिखते हैं कि वैदिक काल में भारत में अश्वघोषा, लोपामुद्रा, गार्गी, कात्यायनी, मैत्रेयी आदि नारी विदुषियाँ हुई थी किन्तु किसी विद्वान् ने यह विवरण कहीं दिया हो कि **''वेद मंत्रों की दृष्टा महिला ऋषि कौन-कौन हुई तथा उन्होंने कौन-कौन से मंत्रों का रहस्य जाना''** यह मेरे सामने नहीं आया। प्रथम बार श्री शिवनारायण जी उपाध्याय की कलम से यह लिखा हुआ पढ़ने को मिल रहा है। इससे मेरी ही नहीं, मुझ जैसे हजारों लोगों की जिज्ञासा का समाधान हुआ है।

शिवनारायण जी ५ ऋषिकाओं का परिचय दे रहे हैं। अन्य किन्हीं ऋषिकाओं के विषय में भी किन्हीं विद्वान् को जानकारी हो तो वे भी दे सकते हैं।

मेरा यह **'साधुवाद सन्देश'** परम सम्माननीय शिवनारायण जी तक भी भिजवाने की कृपा करें।

-आचार्य राम गोपाल शास्त्री

संन्यासी - परमेश्वर से भिन्न किसी की उपासना न करे, न वेदविरूद्ध कुछ माने, परमेश्वर के स्थान में सूक्ष्म वा स्थूल तथा जड़ और जीव को भी कभी न माने, परमेश्वर को सदा अपना स्वामी माने और आप सेवक बना रहे, वैसा ही उपदेश अन्य को भी किया करे। -संस्कारविधिः, संन्यासप्रकरणम्

thearyasamaj.org

महात्मा ज्योतिबा फूले तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती

- आचार्य रामगोपाल सैनी
प्राचार्य - स्नातकोत्तर महाविद्यालय
फतेहपुर (सीकर), राज.
चलभाष-०९८८७३९३७१३

महात्मा ज्योतिबा फूले तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती दोनों ही भारत के विख्यात समाज सुधारक हुए हैं। इन दोनों का एक ही मिशन था। **इन दोनों ने समकालीन होते हुए भी कभी एक दूसरे का विरोध नहीं किया। विरोध करते भी क्यों? दोनों ही धर्म के नाम पर फैलाये जा रहे पाखण्डों का खण्डन कर रहे थे और दबे-कुचले वर्गों को ऊपर उठाने के लिए संघर्ष कर रहे थे।**

स्वामी दयानन्द उम्र में फूले से बड़े थे और उनका कार्यक्षेत्र व्यापक था। फूले ने केवल महाराष्ट्र में रहकर कार्य किया। स्वामी दयानन्द संस्कृत के एवं शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान् थे। अगस्त-सितम्बर १८७५ में पूना में महादेव गोविन्द रानाडे एवं कई अन्य समाज सुधारकों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को पूना में आमंत्रित किया और उनके प्रवचन करवाये। उन प्रवचनों को लिपिबद्ध करवाया तथा उन्हें पुस्तक रूप में छपवाया। आज भी '**पूना प्रवचन**' नामक पुस्तक में ये प्रवचन उपलब्ध हैं।

प्रवचनों के समापन पर सुधारवादियों ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को एक हाथी पर बैठाकर उनकी पूना शहर में शोभा यात्रा निकाली। इस जुलूस में हाथी के एक ओर महादेव गोविन्द रानाडे तथा दूसरी ओर महात्मा ज्योतिबा फूले पैदल चल रहे थे। महात्मा फूले के सत्य शोधक समाज के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में इस जुलूस में शामिल थे। इस सबसे जाहिर होता है कि

दयानन्द के समाज सुधार आन्दोलन का फूले बहुत सम्मान करते थे। स्वामी दयानन्द तथा फूले के कार्यों में समानता का जरा अवलोकन करें।

१. दोनों ही महापुरुषों ने ईश्वर का तथा धर्म का समर्थन किया है किन्तु धर्म के नाम पर किये जा रहे ढोंग, आडम्बर एवं लूट का विरोध किया है।

२. दोनों ही जातिगत आधार पर मानव-मानव के बीच ऊँच-नीच, भेद-भाव, असमानता का व्यवहार करने के विरोधी थे।

३. स्वामी दयानन्द ने वर्ण व्यवस्था को जन्मगत आधार पर नहीं माना अपितु गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर मनुष्य के वर्ण का निर्धारण करने पर जोर दिया। **स्वामी जी ने कहा कि जन्मतः शूद्र परिवार में जन्मा हुआ पुत्र विद्वान् एवं सदाचारी होने पर ब्राह्मण माना जायेगा जबकि ब्राह्मण का जन्मा हुआ नशेड़ी, अज्ञानी पुत्र शूद्र माना जायेगा।**

४. स्वामी दयानन्द ने छुआछूत को निंदनीय बताया। **स्वामी जी ने बिना जाति भेद के सभी पुरुषों एवं स्त्रियों को जनेऊ देने एवं वेद पढ़ने का समर्थन किया।** आर्य समाज के गुरुकुलों तथा डी.ए.वी. स्कूलों में अस्पृश्यता के कहीं दर्शन नहीं होते हैं।

५. आर्य समाज ने सभी जातियों के लोगों को पौरोहित्य कार्य करने का अधिकार दिया जिसके कारण आज पिछड़ी एवं दलित जातियों के भी लाखों लोग जनेऊ धारण कर सम्मानजनक पाण्डित्य कर रहे हैं। महात्मा फूले ने भी सभी जातियों के लोगों को धार्मिक संस्कार करवाने की छूट दी थी।

६. जन्म से ब्राह्मण होते हुए भी स्वामी दयानन्द ने ब्राह्मणवाद का घोर विरोध किया। **असली धर्म को छिपाकर तथा नकली धर्म को प्रचारित कर कर धर्म के नाम पर श्रद्धालु, आस्थावान लोगों को लूटने की ब्राह्मणों द्वारा की जा रही गलत चेष्टाओं का स्वामी दयानन्द ने प्रबल विरोध किया।** महात्मा फूले ने भी धार्मिक आडम्बरों का विरोध किया।

७. दोनों ही महापुरुषों ने कहा - ईश्वर है, उसे मानें, याद करें। दयानन्द ने भी निराकार ईश्वर '**ओम्**' को माना जबकि फूले ने भी निराकार ईश्वर को '**निर्मीक**' नाम से माना।

८. दोनों महापुरुषों ने मन्दिर एवं मूर्तिपूजा को नहीं माना। दोनों ने ही कहा है कि अपने घर पर ही एकान्त स्थान पर बैठकर ईश्वर का ध्यान करें।

९. महात्मा फूले ने सत्यशोधक समाज तथा दयानन्द ने 'आर्य समाज' संस्था बनाकर पाखण्ड पर हमला बोला।

१०. दोनों ने '**मानव-मानव एक समान इनमें कोई भेद न जान**' के सिद्धान्त का समर्थन किया।

११. दयानन्द ने कहा - प्राचीनकाल में भारत विश्वगुरू तथा चक्रवर्ती सम्राट था। भारतीय संस्कृति का वर्चस्व सम्पूर्ण भूमण्डल पर था। भारतीय वैदिक संस्कृति विश्व की प्राचीनतम, श्रेष्ठ एवं समृद्धतम संस्कृति रही है। इस देश को उसका प्राचीन गौरव पुनः प्राप्त हो।

१२. दोनों महापुरुषों ने प्रभूत मात्रा में साहित्य सृजन किया है। **स्वामी दयानन्द ने मानवतावादी शास्त्रों का प्रचार किया किन्तु धूर्ततापूर्ण धर्मग्रंथों का खण्डन किया।** दयानन्द ने मानवतावादी ग्रंथ वेदों का महर्षि पाणिनी कृत व्याकरणानुकूल पहली बार हिन्दी में अनुवाद करने का प्रयास किया।

१३. स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका आदि ४० ग्रंथ लिखकर ब्राह्मणवादी व्यवस्था की चूलें हिला दीं। उन्होंने सत् शास्त्रों का प्रचार किया और महान् भारतीय संस्कृति को बचाने का प्रयास किया।

१४. पिछड़ी जातियों एवं दलित जातियों को जगाने व आगे बढ़ाने में दयानन्द के आर्य समाज ने उल्लेखनीय कार्य किया। इसीलिए कमजोर वर्ग इस आन्दोलन से जुड़ा और उसका उत्थान हुआ। ऊँच-नीच की खाई को पाटने का सर्वाधिक श्रेय दयानन्द को जाता है।।

१५. भारत के प्रथम तथा द्वितीय स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज की बहुत बड़ी भूमिका रही है। भारत का प्राचीन गौरव लौटाने के लिए उन्होंने आम जनता को तो राष्ट्रवाद के रंग में रंगा ही किन्तु अनेक राजाओं के पास जा जाकर उन्होंने '**गुलामी का जुआँ**' उतार फेंकने का आह्वान किया। इसी अभियान के कारण उन्हें विष पिलाकर मार दिया गया किन्तु **वे कभी भी मृत्यु से डरकर सत्य मार्ग पर चलने और सत्य कहने से डरे नहीं उन्होंने अपने प्रमुख ग्रंथ का भी नाम रखा 'सत्यार्थ प्रकाश' अर्थात् सत्य के अर्थ का प्रकाश। सत्य का मण्डन एवं असत्य का खण्डन।**

स्वामी दयानन्द ने फूले का कहीं भी विरोध नहीं किया अपितु उन्होंने वे ही कार्य किये जो फूले कर रहे थे। **सत्यार्थप्रकाश को कुछ लोग बिना पढ़े व बिना उसकी विषयवस्तु जाने विरोध करते हैं। कुछ लोग दयानन्द को फूले का विरोधी चित्रित करते हैं, यह गलत है। पिछड़े एवं दलित वर्गों पर स्वामी दयानन्द का बहुत उपकार है।** ●

thearyasamaj.org

गतांक से आगे

स्वामी दयानन्द और विज्ञान

-शिवनारायण उपाध्याय
७३, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी, कोटा (राज.)
चलभाष-०७४४२५०१७८५

वेदों में $१०^{१८}$ तक की संख्याओं को सामान्य रूप से गणना कर बताया है-

इमामे ऽअग्नऽइष्टका धेनवः सन्त्वेका च दश च दश च शतं च शतं च सहस्त्रं च सहस्त्रं चायुतं चायुतं च नियुतं च नियुतं च प्रयुतं चार्बुदं च न्यर्बुदं च समुद्रश्च मध्यं चान्तश्च परार्द्धश्चैता मेऽअग्न ऽइष्टका धेनवः सन्त्वमुत्रामुष्मिँल्लोके।। यजुर्वेद १७.२

पदार्थ - हे (**अग्ने**) विद्वान् पुरुष! जैसे (**मे**) मेरी (**इमाः**) ये (**इष्टकाः**) इष्ट सुख को सिद्ध करने हारी यज्ञ की सामग्री (**धेनवः**) दुग्ध देने वाली गौओं के समान (**सन्तु**) होवें, आपके लिए भी वैसी हो जो (**एका**) एक (**च**) दशगुणा (**दश**) दश (**च**) और (**दश**) दश (**च**) दशगुणा (**शतम्**) सौ (च) और (**शतम्**) सौ (**च**) दशगुणा (**सहस्त्रम्**) हजार (**च**) और (**सहस्त्रम्**) हजार (**च**) दशगुणा (**अयुतम्**) दश हजार (**च**) और (**अयुतम्**) दश हजार (**च**) दशगुणा (**नियुतम्**) लाख (**च**) और (**नियुतम्**) लाख (**च**) दशगुणा (**प्रयुतम्**) दश लाख (**च**) इसका दशगुणा करोड़ (**अर्बुदम्**) दश करोड़ इसका दशगुणा (**न्यर्बुदम्**) अर्ब (**च**) इसका दशगुणा खर्ब , इसका दशगुणा निखर्ब इसका दशगुणा महापद्म, इसका दशगुणा शङ्ख इसका दशगुणा (**समुद्रः**) समुद्र (**च**) इसका दशगुणा (**मध्यम्**) मध्य (**च**) इसका दशगुणा (**अन्तः**) अन्त और (**च**) इसका दशगुणा (**परार्द्धश्च**) परार्द्ध (**एता**) ये (**मे**) मेरी (**अग्ने**) हे विद्वान्! (**इष्टका**) वेदों की ईंटे (**धेनवः**) गौओं के तुल्य (**अमुष्मिन्**) परोक्ष (**लोके**) देखने योग्य (**अमुत्र**) अगले जन्म में (**सन्तु**) हों वैसा कीजिए।

भावार्थ - जैसे अच्छे प्रकार सेवन की हुई गौ दुग्ध आदि के दान से सबको प्रसन्न करती है वैसे ही वेदी में चयन की हुई ईंटें वर्षा की हेतु होकर वर्षादि के द्वारा सबको सुखी करती है। मनुष्यों को चाहिए कि एक (१) संख्या को दश वार गुणने से दश (१०) दश को दश वार गुणने से सौ (१००) उसको दश वार गुणने से हजार (१०००) उसको दश वार गुणने से दश हजार (१००००) उसको दश वार गुणने से लाख (१०००००) उसको दश वार गुणने से दस लाख (१००००००) इसको दश वार गुणने से करोड़ (१०००००००) इसको दश वार गुणन करने से अर्ब (१०००००००००) इसको दश वार गुणन करने से दश अर्ब (१००००००००००) इसको दश वार गुणने से खर्ब (१०००००००००००) इसको दश वार गुणने से दश खर्ब (१००००००००००००) इसको दश वार गुणने से नील (१०००००००००००००) इसको दश वार गुणने से दश नील (१००००००००००००००) इसको दश वार गुणने से एक पद्म (१०००००००००००००००) इसको दश वार गुणने से दश पद्म (१००००००००००००००००) इसको दश वार गुणने से एक शङ्ख (१०००००००००००००००००) इसको दश वार गुणने से दश शङ्ख (१००००००००००००००००००) इन संख्याओं की संज्ञा पड़ती है। ये इतनी संख्या तो कही परन्तु अनेक चकारों के होने से और भी अंक गणित, बीज गणित और रेखा गणित आदि की संख्याओं को यथावत् समझें। जैसे भूगोल में ये संख्या हैं वैसे अन्य लोकों में भी हैं। जैसे यहाँ इन संख्याओं से गणना की और अच्छे कारीगरों ने चिनी हुई ईंटें घर के आकार को शीत, उष्ण, वर्षा और वायु आदि से मनुष्यादि की रक्षा कर आनन्दित करती हैं वैसे ही अग्नि में छोड़ी हुई आहुतियाँ जल, वायु और औषधियों के साथ मिलकर सबको आनन्दित करती हैं।

निम्न मंत्र में नौ की महिमा बताई गई है-

इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्य प्रतिष्कुतः।
जघान नवतीर्नव।। ऋ. १.८४.१३

इस मन्त्र में बताया गया है कि नौ के नौ से गुणनफल को नौ से ही वध करना होता है। जिसका मतलब है कि नौ के पहाड़े की प्रत्येक संख्या फिर नौ होती हुई पा जाती है। अर्थात् ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ और ९० के अंको का योग सदैव ९ ही रहता है। यदि इन अंको को उलट दे तो ९० से ९, ८१ से १८, ७२ से २७, ६३ से ३६, ५४ से ४५, ४५ से ५४, ३६ से ६३, २७ से ७२, १८ से ८१ बनेंगे जो ९ का हीं पहाड़ा है।

इस मंत्र में जोड़ के साथ ही नौ तक के अंको की पूर्ण महिमा दिखाई गई है एवं बता दिया गया है कि समस्त अंक गणित नौ तक के अंको से ही भरा हुआ है। इसी तरह इन्हीं के द्वारा संख्या जोड़, बाकी, गुणा और भाग बतलाया गया है जो अंक विद्या का मूल है।

वैदिक ऋषियों को अनन्त का ज्ञान था। वे जानते थे कि अनन्त में से अनन्त के योग करने से अनन्त ही आता है। अनन्त में से अनन्त घटाने पर भी अनन्त ही बचता है। अनन्त को अनन्त से गुणा अथवा भाग करने पर भी परिणाम अनन्त ही रहता है। इस विषय में निम्न मंत्र प्रस्तुत है-

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।

वेदों में रेखा गणित के विषय में भी भवननिर्माण तथा यज्ञ कुण्ड के निर्माण के संदर्भ में बतलाया गया है-

कासीत्प्रमा प्रतिमा किं निदानमाज्यं किमासीत्परिधिः कआसीत्।
छन्दः किमासीत्प्रउगं किमुक्थं यद्देवा देवमयजन्त विश्वे।।
ऋ. १०.१३०.३

(**यत्**) जब (**विश्वे**) सब (**देवाः**) साध्य देव (**देवम्**) परमदेव परमेश्वर को (**अयजन्त**) इस सर्गात्मक यज्ञ में निमित्त कारण प्रजापति रूप करते हैं तब (**प्रमा**) प्रमाण (**का**) किस प्रकार का (**आसीत्**) होता है? (**प्रतिमा**) मापने का साधन क्या होता है? (**निदानम्**) इष्ट क्या होता है? (**आज्यम्**) घृत वा सामग्री क्या होती है? (**परिधिः**) जिस प्रकार यज्ञ में परिधि क्या होती है? गायत्री आदि (**छन्दः**) छन्द (**किम्**) क्या (**आसीत्**) होता है? (**प्र उगम्**) प्रउग आदि (**उक्थम्**) उक्थ क्या रहता है?

भावार्थ- इस हवन कुण्ड का पैमाना क्या था? नक्शा क्या था? परिधि क्या थी? किन मन्त्रों से हवन किया गया था जिसमें देवों ने समस्त

thearyasamaj.org

देवों का यजन किया था? मंत्र में नाप, नक्शा और परिधि का वर्णन है।

इन रेखा गणित के साधनों के आगे त्रिकोण क्षेत्र का वर्णन निम्न प्रकार से है- **यो अक्रन्दयत् सलिलं महित्वा योनिं कृत्वा त्रिभुजं शयानः। वत्सः कामदुधो विराजः स गुहा चक्रे तन्वः पराचैः।।** अथर्व. ८.९.२

पानी की सतह को सच्चा मानकर तथा आधार और लम्ब को ठीक करके त्रिभुज चक्र क्षेत्र बनावे जिसके भीतर वत्स रूप से क्षेत्रफल बैठा है।

इस समकोण त्रिभुज का सिद्धान्त ३, ४, ५ है यदि लम्ब ३, आधार ४ है तो कर्ण ५ होगा। इन्हीं में गुणा करने से बाकी क्षेत्रफल ज्ञात हो जायेगा।

इसी तरह त्रित का वर्णन करते हुए गोल क्षेत्र का सिद्धान्त भी बतला दिया गया है। ऋग्वेद में तीन त्रितों का वर्णन है।

अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यतो रघ्वीरिव प्रवणे सस्रुरूतयः।
इन्द्रो यद्वज्री धृषमाणो अन्धसा भिनद्वलस्य परिधीरिव त्रितः।।

ऋ. १.५२.५

भावार्थ-वृष्टि की इच्छा से युद्ध करता हुआ इन्द्र अपने वज्र से बादलों का ऐसा छेदन करता है जैसे नापी हुई परिधि को त्रित छेद देता है। यहाँ व्यास को त्रित कहकर परिधि को छेदने वाला कहा गया है। परिधि और व्यास का सम्बन्ध २२/७ है। यदि परिधि २२ होगी तो व्यास ७ होगा। परिधि व्यास के तीन गुने से कुछ अधिक होती है। इसलिये लिखा है कि त्रित ने परिधि को छेद दिया, वार पार कर दिया अर्थात् ठीक न निकला।

दूसरे त्रित के विषय में लिखा है कि:-

त्रितः कूपेऽवहितो देवान्हवत ऊतये।
तच्छुश्राव बृहस्पतिः कृण्वन्नहूरणादुरू वितं मे अस्य रोदसी।।

ऋ. १.१०५.१७

भावार्थ-त्रित कुएं में गिर गया और उसने देवताओं को पुकारा किन्तु उसकी आवाज को केवल बृहस्पति (ज्ञानवान्) ने ही सुना और कुएं से निकाल कर ठीक कर दिया। तात्पर्य यह है कि यह भी ठीक न था पर गणितज्ञ ने तीसरे त्रित का २२/७ करके ठीक कर दिया। यह तीनों त्रितों की कथा का सार है और वेदों में त्रिकोण तथा क्षेत्रों के सिद्धान्तों का वर्णन है। रेखागणित के ये दो सिद्धान्त कोण और वर्तुल ही विस्तार से ज्यामिति शास्त्र में वर्णित हैं। इसलिए कह सकते हैं कि वेद रेखा गणित के मौलिक सिद्धान्तों का वर्णन करते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने संस्कार विधि में यज्ञशाला एवं भवननिर्माण के विषय में लिखते हुए भी रेखागणित पर विचार व्यक्त किये हैं। इसी प्रकार ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में गणित विषय पर लिखते हुए उन्होंने अंक गणित, बीज गणित तथा रेखा गणित पर आवश्यक जानकारी देने का प्रयत्न किया है ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में वे लिखते हैं-'अज्ञात पदार्थों की संख्या जानने के लिए जो बीज गणित होता है सो भी एका च मे इत्यादि मन्त्रों से ही सिद्ध होता है। जैसे (अ^{२}+क^{२}) (अ^{२}+क^{३})(क^{३}-अ^{३}) इत्यादि संकेत से निकलता है। यह भी वेदों ही से ऋषि मुनियों ने निकाला है। (अग्न आ.)

इस मन्त्र के संकेतों से भी बीजगणित निकलता है।

इस प्रकार हमने देखा है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गणित विद्या पर आवश्यक प्रकाश डालने का प्रयत्न किया है। **क्रमशः**

शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द को चुनौती देने से

स्वामी अग्निवेश आये चर्चा में

- आचार्य रामगोपाल सैनी
फतेहपुर (सीकर), राज.

भारत की चारों दिशाओं में स्थित ४ शंकराचार्य पीठों में से द्वारकापीठ एवं एक अन्य पीठ के अधिपति स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती को शास्त्रार्थ की चुनौति देने पर '**स्वामी अग्निवेश**' एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में हैं।

पिछले कुछ समय से श्री शंकराचार्य '**सांई बाबा**' के मन्दिर बनाने तथा हिन्दुओं द्वारा उनकी पूजा करने को गलत बता रहे हैं। श्री शंकराचार्य ने भारत के विभिन्न मतों के धर्माचार्यों की '**धर्म संसद**' बुलाकर 'सांई बाबा ट्रस्ट, शिरड़ी (महाराष्ट्र) के पदाधिकारियों को सांई बाबा के संत होने को प्रमाणित करने की चुनौती दी है। शंकराचार्य जी की इस चुनौती का देशभर में विरोध हो रहा है। अब स्वामी अग्निवेश ने शंकराचार्य जी को ही चुनौती दे दी है कि आप इस बात को प्रमाणित करें कि **''पण्डित लोग पत्थर निर्मित प्रतिमाओं में प्राण प्रविष्ट करवा देते हैं। यदि पण्डित लोग पत्थर की प्रतिमाओं में 'जीवन' डाल देते हैं तो आपके सामने एक मृतक का शव रखा जायेगा, आप उसमें पुनः प्राण .प्रविष्ट कराकर दिखा दें।''**

क्रान्तिकारी समाज-सुधारक स्वामी अग्निवेश आर्य समाज की शिरोमणि संस्था **''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा''** के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके हैं। वर्तमान में संरक्षक एवं मार्गदर्शक हैं। आप अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, बंगला आदि कई भाषाओं के विद्वान् हैं। आप हरियाणा से कई बार विधायक रह चुके हैं। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, हरियाणा के आप अध्यक्ष रह चुके हैं। ब्रह्मचर्य अवस्था से सीधे संन्यास आश्रम में प्रवेश लेने वाले स्वामी अग्निवेश संन्यास से पूर्व बंगाल में कानून के प्रोफेसर रह चुके हैं। बंगाल के मूल निवासी स्वामी जी ने कई उत्साही युवकों के साथ स्वामी सर्वानन्द जी से संन्यास लेकर स्वामी भगवान देव के सान्निध्य में '**सामाजिक क्रान्ति**' का शंखनाद किया। आर्य समाज में स्वामी अग्निवेश एवं स्वामी इन्द्रवेश के साथ वेश नामधारी संन्यासियों का संगठन अस्तित्व में आया। वर्तमान में इन्हीं के साथी '**स्वामी आर्यवेश**' अन्तर्राष्ट्रीय धर्मप्रचार संस्था '**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**' के अध्यक्ष है।

स्वामी अग्निवेश की पहचान अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर है। आप विश्वभर में अनेक '**सर्वधर्म सम्मेलनों**' में '**आर्य वैदिक धर्म**' के प्रतिभागी रह चुके हैं। आर्य समाज के भी कई '**इण्टरनेशनल सम्मेलन**' आप विदेशों में करवा चुके हैं। '**राष्ट्रीय बन्धुआ मुक्ति मोर्चा**' के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में आपने हजारों बन्धुआ मजदूरों को मुक्त करवाया है।

(राजनीति में गहरी पैठ रखने वाले स्वामी अग्निवेश जी का विवादों से नाता रहा है किन्तु अंधविश्वास और पाखण्ड निवारण हेतु उनका योगदान अहम रहा है - संपादक) ●

thearyasamaj.org

विद्वानों की दृष्टि में सोम

-महात्मा चैतन्यमुनि
सुन्दर नगर, जिला-मण्डी (हि.प्र.)-१७४४०१

महर्षि दयानन्द ने अपने भाष्यों में सोम का निर्वचन मुख्य रूप से तीन धातुओं से किया है। सु (पु षुञ् अभिषवे स्वादि) से प्राय: औषध, सोमलता के समान आह्लादक आसव, रोगनाशक महोषधि (सोम) का रस, सोमलता के समान सब रोगों (कष्टों) के नाशक राजादि अर्थ सोम के लिए किए गए हैं (वैद्यकशिल्पक्रियाया संसाधित ओषधीरस: (ऋ.१-४७-१), सोमवल्ल्यादि निष्पन्नमाहलादकमासवविशेषं (वा.सं. ८-१०), सर्वरोगनाशकं महौषधिरसम्-द्वितीया (ऋ.३-५३-६), सामवल्लीव सर्वरोगविनाशक (राजन्) वा.सं. ३४-२२)। यास्क ने भी इसी धातु से निर्वचन करते हुए इसका अर्थ औषधि (सोम) किया है (**ओषधि: सोमं सुनोतेर्यदेनभिषुण्वन्ति**। नि. ११-२)। सू (षु प्रेरणेतुदादि.) से सोम का अर्थ सबको शुभ कर्मों और गुणों की प्रेरणा देने वाला परमेश्वर अथवा विद्वान् किया गया है (शुभकर्मगुणेषु प्रेरक (परमेश्वर विद्वान् वा) ऋ.१-३१-३)। सु (**षु प्रसवैश्वर्यो: भ्वादि.**) से सोम का अर्थ सारे चराचर को उत्पन्न करने वाला परमेश्वर तथा ऐश्वर्ययुक्त परमेश्वर दोनों ही हैं (**सुवति चराचरमं जगत्**। वा.सं. ०३-५६, ऋ.१/९१/१२)। सोमलता या उत्तम औषध के आह्लादक गुण को देखते हुए सम्भवतया महर्षि दयानन्द ने इसका अर्थ '**आनन्द**' भी किया है। एक स्थल पर स्थल पर यजमान प्रतिज्ञा करता है कि मैं ईश्वर के उस सर्वत्र व्याप्त यज्ञ को आनन्द से हृदय में दृढ़ करता हूँ (**इन्द्रस्य परमेश्वरस्य तं भजनीयं यज्ञं सोमेनानन्दन दृढ़ीकरोमि।** वा.१/१/४)। भावना यह है कि यज्ञानुष्ठान् करते हुए मैं असुविधा नहीं अपितु आनन्द का अनुभव करता हूँ। **महर्षि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में सोम के अर्थ जगदीश्वर, विद्वान्, मनुष्य, राजा, सेनाध्यक्ष, संन्यासी, वैद्य, सोम नामक औषधि, सोम औषधि का रस, सोम आदि औषधियों से बनाया आसव, आनन्दरस, वीररस आदि किए हैं।**

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक 'विद्यामार्तण्ड' जी ने अपने भाष्यों में जीवन रस व ज्ञानमार्ग, उपासना रस, शान्तस्वरूप परमात्मा, मोक्षानन्द रस, अमृतपान-स्थान, सौम्य स्वभाव उपासक अर्थ किया है। **आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री जी ने** जीव, आनन्द, भोग्य पदार्थ, ऐश्वर्यकारी, परमेश्वर, आनन्दमय परमेश्वर, शान्तस्वरूप परमेश्वर, आत्मा, सोमरस, शान्त स्वभाव वाले, सूर्य, शान्त विचार वाला भक्तजन, ज्ञान प्राप्ति का स्थान, आत्मज्ञानी, सौम्य स्वभाव वाला, आत्मबल के रक्षक, सच्चा न्याय, गृहस्थ आश्रम, शास्त्र बोध, शास्त्रीय ज्ञान, उत्पन्न संसारी पदार्थ, ज्ञानी पुरुष, शरीर रक्षा, विद्वान् पुरुष, सोमलता आदि वनस्पति, वायु, पुरुष, प्राणी, आनन्दरस, बोध, उत्तम पदार्थों के रक्षक, संसार के भोग, ऐश्वर्य, ऐश्वर्य-शक्ति, संसार, शान्त गुण वाला आदि अर्थ किए हैं। पण्डित तुलसीराम स्वामी जी ने चन्द्रमा, सौम्य-भक्त, औषधि विरोध का रस, शान्तस्वरूप परमेश्वर, औषधि वा परमात्मा, सोमरस, अमृतस्वरूप परमेश्वर, सेवन किया हुआ परमेश्वर, परमात्मा रूपी अमृत, अमृत, औषधिरस, आत्मिकानन्द, सोमरस, सोमौषधि वा शान्तात्मा, प्रसिद्ध चौबीस प्रकार के साम, औषधिराज, शान्तामृतस्वरूप परमात्मा, कोमल हृदय, शान्तिधाम, औषधिगण, सेना का प्रेरक आदि अर्थ किए हैं।

इस लेख में हम विशेषत: श्री वासुदेवशरण अग्रवालजी का चिन्तन प्रस्तुत कर रहे हैं। वे अपनी पुस्तक '**ऊरू-ज्योति**' में लिखते हैं-'इन्द्र सोम पान करता है। वह सोम-सुत् है। यज्ञ का देवता है। यज्ञों में सोम पीता है। शरीरस्थ विधानों की पूर्ति एक यज्ञ है। श्री कृष्ण ने कहा है- **अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर।** (गी.८-१) इस देह में व्याप्त आत्मप्रक्रियाएँ ही अभियज्ञ है। देहस्थ समस्त कर्मों के द्वारा आत्मा की ही उपासना की जाती है। आत्मा के लिए सब कर्म होते हैं। इस यज्ञ में सोम क्या है, और उसका भाग इन्द्र को कैसे पहुँचता है?

वैदिक भाषा में ब्रह्माण्ड या मस्तिष्क स्वर्ग है। इन्द्र की इन्द्रिय-शक्ति का निवास ब्रह्माण्ड (Cerebrun) में ही रहता है। यहीं सब इन्द्रियों के केन्द्र हैं, जहाँ से इन्द्र प्राणों का संचालन करता है। बाह्य संस्पर्शों के आदान-प्रदान की शक्तियाँ (Sensory and Motor Function) प्राण है। उनका नियन्ता इन्द्र, ब्रह्माण्ड या स्वर्ग का अधिपति है। वह इन्द्र सोम पीकर अमरत्व लाभ करता है। यह सोम क्या वस्तु है? कोई सोम को एक बाह्य वनस्पति या वल्ली समझते हैं और उससे अनेक प्रकार की कल्पनाएँ करते हैं। किसी एक वल्ली को सोम मानकर बैठ जाना, सोम के विराट् अर्थ को पंगु कर देना है। सोम भौतिक रूप में एक लता भी हो, पर कहना यह है कि विशुद्ध वैदिक परिभाषा में सोम का अर्थ बहुत व्यापक है। समस्त लताएँ, वनस्पतियाँ और अन्न का नाम सोम है। शतपथ के अनुसार अन्न सोम है-**अन्नं वै सोम:**। (२-९-१-८)। इस अन्न के पाचन से जो शक्ति उत्पन्न होती है, वह भी सोम है। शतपथ, कौषीतकी, ताण्ड्य आदि आदि ब्राह्मणों में लिखा है कि प्राण का नाम सोम है। अन्न खाने के अनन्तर, स्थूल भाग के परिवर्तन से जो सूक्ष्म विद्युत् स्वरूप वाली शक्ति देह में उत्पन्न होती है, उसकी संज्ञा प्राण है, वही सोम है। और भी शक्ति का सबसे विशुद्ध और सब धातुओं के द्वारा अभिषुत उत्कृष्ट सार जो वीर्य या रेत है, वह भी सोम है। इसलिए सब ब्राह्मणकारों ने लिखा है-**रेतो वै सोम:**। श.१-९-२-९।

ब्रह्माण्ड या मस्तिष्क को शक्ति देने के लिए इस सोम या रेत से बढ़कर और दिव्य पदार्थ नहीं है। रेत जल का परिणाम रूप है। पृथिवरस्थ जल, सूर्य ताप से, द्युलोक-गामी बनता है। इसी प्रकार तप के द्वारा स्वाधिष्ठान-चक्र के क्षेत्र में स्थित जल-शक्ति, ब्रह्माण्ड मस्तिष्क या स्वर्ग में पहुँचती है। वहाँ दिवस्थ होकर ही सोम या रेत समस्त शरीर में प्राणों और इन्द्रियों का प्रीणन करता है। मनश्चक्र-रूपी इन्द्र को यही सोम अतिशय प्रिय है। इसी का नाम अमृत है। वीर्य-रूपी सोम की रक्षा अमरत्व देती है, उसका क्षय ही मृत्यु है। सोम की कलाओं की वृद्धि से अमृत की वृद्धि होती है। उन कलाओं के क्षय से मनश्चक्र क्षय की ओर उन्मुख होता है। चन्द्रमा के घटने-बढ़ने की पौराणिक कथा में इसी अध्यात्मतत्व का संकेत है। देवता अपने सोम का संवर्धन करते हैं। असुर उनका पान कर जाते हैं। आयु के जिस भाग में सोम की वृद्धि हो, वह शुक्ल पक्ष है। जिस भाग में क्षयोन्मुख हो, वह कृष्ण पक्ष है। इन्हीं दो भागों से मनुष्य आयु क्या, समस्त प्रकृति बनी है। कभी वृद्धि होती है, कभी ह्रास होता है। समस्त जीव, पशु, वनस्पति, अमृत और मृत्यु के चक्र में पड़े हुए हैं। वनस्पतियों की सोम-वृद्धि और सोम-क्षय प्राकृतिक विधान के अनुकूल होते हैं, पर मनुष्य अनेक प्रकार से प्रकृति का विरोध करता है। वह सचेतन और संज्ञान प्राणी है। ऋषिकाओं ने सोम को जीवन का मूल प्राण जानकर उसी की रक्षा और अभिवृद्धि के लिए अनेक उपदेश दिया है। सोम का संवर्धन ही ब्रह्मचर्य की सिद्धि है।'

'......इस प्रकार इन्द्र के सोम-पान में भारतीय ब्रह्मचर्य-शास्त्र का

thearyasamaj.org

गूढ़ तत्व समाया हुआ है। शरीर की शक्ति को शरीर में ही पचा लेने के रहस्य का नाम सोम-पान है। यह शक्ति अनेक प्रकार की है। स्थूल भौतिक सोम शुक्र है जिसके द्युम्न या तेज से रोम-रोम चमक उठता है। रेत के भस्म होने से जो कान्ति उत्पन्न होती है, उसका नाम भस्म है। उस प्रकार की भस्म का रमाना सब को आवश्यक है। शिव परम योगी है, उन्होंने अखंड ऊर्ध्वरेता बनने के लिए काम को भस्म कर दिया है। इसलिए उनके सदृश कान्तिमती भस्म से भासित तनु और किसी का नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति के ब्रह्माण्ड-रूपी कैलास में शिव का वास है। मस्तिष्क की इस शिवात्मक शक्ति को यदि इस प्रकार प्रबोधित किया जाए कि उसमें काम-भावना बिल्कुल तिरोहित हो जाए, तो वही फल प्राप्त होते हैं, जो इन्द्र के सोम-पान करने से सिद्ध होता है। एक ही महार्घ तत्व को द्विविध रूप से कहा गया है। शिवजी काम को भस्म करके षट् चक्रों की शक्ति को देह में ही संचित कर लेते हैं। इन्द्र या ब्रह्माण्ड स्थित महाप्राणाधिपति देवता शरीर के रेत या सोम का पान करके अमृतत्व की वृद्धि करता है। वैदिक परिभाषाओं की व्यापकता को जानने वाले विद्वानों के लिए इस प्रकार के कल्पना-भेदों का तारतम्य बहुत सुगम है। इसी तत्व का वर्णन गायत्री ने सुपर्ण बनकर स्वर्ग की यात्रा की और वहाँ से सोम का आहरण किया। गायत्री, त्रिष्टुप और जगती-जीवन के तीन भागों के नाम अनेक बार वेदों और ब्राह्मणों में दिए हैं (छा.उ. ०३/१६)।..... वह छन्द सुपर्ण या गरुत्म बनकर स्वर्ग से सोम-रूप अमृत लाता है। वीर्य या रेत के सूक्ष्मातिसूक्ष्म पवित्र अंश की संज्ञा सोम है। उसका निवास मस्तिष्क-चक्र में रहता है। वही मस्तिष्क के कोषों को वापी रस (Ventricular Fluid) बनकर स्वास्थ्य देता है। पहले आश्रम में धारण किए हुए ब्रह्मचर्य-व्रत से ही सोम का लाना संभव है। इसीलिए कथा में कहा गया है कि त्रिष्टुप और जगती सोम लाने के लिए उड़े, पर स्वर्ग न जाकर बीच से ही लौट आए। तात्पर्य यह है कि यौवन और बुढ़ापे में भी ब्रह्मचर्य की आवश्यकता के प्रति सचेत होने से लाभ होता है, पर जो लाभ प्रथम आश्रम में ही जागरुक होने से मिल सकता है, फिर बाद में संभव नहीं। अर्थ-शास्त्रों में अनेक प्रकार से एक ही तत्व का वर्णन और उपदेश किया जाता है। शिव का मदन-दहन, गायत्री का सोमाहरण और इन्द्र का सोम-पान, वे तीनों बातें मूल में एक ही रहस्य का संकेत करती हैं।'

इसी पुस्तक में वे एक स्थान पर लिखते हैं -'.....च्यवन ने जब अश्विनीकुमारों से यौवन मांगा, तब बदले में क्यों अश्विनीकुमारों ने यह शर्त रखी कि यदि तुम हमें यज्ञ में सोम-पान कराओ, तो हम तुम्हें यौवन दे सकते हैं। इसको जानने के लिए सोम को समझना आवश्यक है। वीर्य, रेत या शरीरस्थ रस का नाम ही सोम-रस है। केन्द्रिय नाड़ी-जाल (Central Nervous System) औषधि, वनस्पतियाँ है, जिनसे मिलकर सुषुम्णा जाल या मेरुदण्ड-रूप वनस्पति (Arbor Vitae) अथवा वानस्पत्य यूप तैयार होता है। जिनमें सोम-रस भरा रहता है। नाड़ी रस की शुद्धि ही स्वास्थ्य का लक्षण है।..... मस्तिष्क में भी यही रस भरा रहता है, जो नीचे सुषुम्णा नाड़ी की शाखा-प्रशाखाओं को सींचता है। इस रस पर ही मस्तिष्क की समस्त चेतना निर्भर है। इस रस (Cerebro-spinal Fluid) के सम्बन्ध में अर्वाचीन शास्त्री (Physiologists) भी अनेक आश्चर्यजनक महत्व की बातें बताते हैं। मस्तिष्क को सींचकर शुद्ध और बलवान् बनाना इसी रस का कार्य है। यह सोम रस, रेत या वीर्य-रूप से शरीर में संचित होता है। असंयम के कारण इसका शरीर से बाहर क्षय हो जाता है। जब तक प्राणापान-रूप अश्विनीकुमार इस सोम को पी सकते है, तब तक शरीर में जरा का आक्रमण नहीं होता। च्यवन की क्षीण शक्ति (Catabolic state of deplete energy) को फिर से ऊर्जित और वसिष्ठ बनाने के लिए यह आवश्यक है कि शरीर के सोम-रस से उत्पन्न शक्ति शरीर में ही रहे, अर्थात् प्राणापान उस सोम-रस का पान करें।

यह शरीर भी एक यज्ञ है। ब्राह्मण और उपनिषदों में बार-बार यह परिभाषा दोहराई गई है- **पुरुषो वै यज्ञः**। इसके भीतर जो प्राकृतिक क्रियाएँ होती हैं, उनका ही अनुकरण यज्ञ के कर्मकाण्ड में किया जाता है। शक्ति-संवर्धन के लिए सोम या रेत का ही शरीर में पाचन अनिवार्य है, इसी कारण अश्विनीकुमारों ने च्यवन से यह प्रतिज्ञा कराई कि हम तुम्हें यज्ञ में सोमपान का भाग अवश्य दिलावेंगे। च्यवन के तप से यह संभव हुआ। उसी की महिमा से च्यवन की जीर्णता दूर हुई। जो उचित प्रकार से सोम का पान करके मन और शरीर की स्वस्थता का संपादन करता रहता है, वही सदा अरिष्ट, अजर, अमर रह सकता है।..... प्राणापान का समीकरण ही शरीर-स्थिति का प्रधान-हेतु है। वृद्धि की संज्ञा भरद्वाज ऋषि है। ह्रास का नाम च्यवन ऋषि है। वृद्धि और ह्रास या प्राणापान का ही रूपान्तर अग्निसोम है, जिन को उद्दिष्ट करके अग्निहोत्र की आहुतियाँ दी जाती हैं। जीवन के प्रत्येक क्षण में, शरीर के सूक्ष्मातिसूक्ष्य परमाणु या कोष में भी यह अग्निहोत्र का द्वन्द्व गूढ़ रीति से अनुप्रविष्ट है। ब्रह्माण्ड या पिंड में कुछ भी ऐसा नहीं, जो इस द्वन्द्व से विनिर्मुक्त हो।..... सोम की स्थिति भी स्वर्ग में ही कही गई है। सोम कलश द्युलोक में प्रतिष्ठित है। वस्तुतः अध्यात्म-परिभाषा के अनुसार मस्तिष्क ही सोम से भरा हुआ कलश या पूर्ण कुंभ है। सोम ही अमृत है। अमृत भी द्युलोक में रहता है, वही सोम है। समाधि-युक्त विचार, सत्य संकल्प, पवित्र भाव, अमृत आशाएँ, सतोमयी बुद्धि, ब्रह्मचारियों की मेधा-इन सबका स्त्रोत या मूलकारण मस्तिष्क का पवित्र सोम ही है। अर्वाचीन शरीर-विज्ञान के अनुसार भी मस्तिष्क का रस (Cerebral Fluid) ही सब प्रकार के स्वास्थ्य और पवित्रता का कारण है। उसी की शुद्धि से मनुष्य में शक्ति और प्राण प्रदीप्त रहते हैं। इस प्रकार के तत्व को ध्यान में रखकर ऋषियों ने मस्तिष्क को ही सोम का द्रोण-कलश माना है।

.....वेदों में अनेक प्रकार से हिरण्य का वर्णन पाया जाता है। हिरण्य सतोगुण का वाचक है। चांदी रजोगुण और लोहा तमोगुण है। ये ही तीन पुर त्रिपुरासुर दैत्य ने स्वर्ग, अन्तरिक्ष और पृथिवी बनाए थे।

ततोऽसुरा एषु लोकेषु पुरश्चक्रिरे।
अयस्मयीमेवास्मिंल्लोके, रजतामन्तरिक्षे, हरिणी दिवि।

- शतपथ ३/४/४/३

अर्थात् असुरों ने इन लोकों में तीन पुर बनाए। अयस्मयी पुरी इस पृथिवी लोक में, रजतमयी पुरी अन्तरिक्ष में और हिरण्यमयी पुरी द्युलोक में वैदिक परिभाषा में त्रैगुण्य के ही ये तीन नाम हैं। इसके अनुसार हिरण्यमय लोक सर्वश्रेष्ठ तृतीय स्थान द्युलोक माना है। यह द्युलोक ही अध्यात्मक-शास्त्र में मानुषी मस्तिष्क है। मेरुदण्ड भाग पृथिवी-लोक है। इन दोनों के बीच में अन्तरिक्ष है, जिसमें मेरुकन्द (Spinal bulb) और मस्तिष्क का अधोभाग (Cerebellum) सम्मिलित है। सोम की स्थिति भी स्वर्ग में ही कही गई है। सोम कलश द्युलोक में प्रतिष्ठित है। वस्तुतः अध्यात्म-परिभाषा के अनुसार मस्तिष्क ही सोम से भरा हुआ कलश या पूर्ण कुंभ है। सोम ही अमृत है। अमृत भी द्युलोक में रहता है, जहाँ देवता उसकी रक्षा करते हैं। मस्तिष्क में भरा हुआ जो रस है, वही सोम है। समाधियुक्त विचार, सत्य

thearyasamaj.org

संकल्प, पवित्र भाव, अमृत आशाएँ, सतोमयी बुद्धि, ब्रह्मचारियों की मेधा इन सबका स्त्रोत या मूलकारण मस्तिष्क का पवित्र सोम ही है। अर्वाचीन शरीर-विज्ञान के अनुसार भी मस्तिष्क का रस (Cerebral Fluid) ही सब प्रकार के स्वास्थ्य और पवित्रता का कारण है। उसी की शुद्धि से मनुष्य में शक्ति और प्राण प्रदीप्त रहते हैं। इस प्रकार के तत्व को ध्यान में रखकर ऋषियों ने मस्तिष्क को ही सोम का द्रोण-कलश माना है। इस सोम को यज्ञ में सुवर्ण से मोल लिया जाता है। सुवर्ण क्या है और क्यों सोम-प्राप्ति के लिए सुवर्ण या हिरण्य देना पड़ता है? इस प्रश्न का उत्तर बहुत स्पष्ट है। शतपथ में लिखा है -

शुक्रं ह्येतत् शुक्रेण क्रीणाति, यत्सोमं हिरण्येन। (३/३/३/६)

अर्थात् हिरण्य के द्वारा जो सोम खरीदा जाता है, उसका तात्पर्य है कि शुक्र के द्वारा शुक्र मोल लिया जाता है। सोम भी शुक्र है और हिरण्य भी शुक्र है। शुक्र, वीर्य, रेत ये पर्यायवाची हैं। वस्तुतः सोम और हिरण्य भी वीर्य के नामान्तर हैं, यथा-**रेतः सोमः।** (शतपथ ३/३/२/१), **रेतः हिरण्यम्।** (तै. ३/८/२/४) वीर्य की शक्ति से ही समस्त रसों का पोषण होता है, वीर्य ही प्राणों को शुद्ध और पुष्ट करने वाला है, वीर्य ही मस्तिष्क को और समस्त नाड़ी-जाल को सींच कर हरा-भरा और वृद्धियुक्त बनाता है, इसलिए वीर्य की आहुति से सोम पुष्ट होता है। वीर्य को शरीर में ही भस्म करके, तेज में परिणत कर लेना, वीर्य के द्वारा सोम को खरीदना है। इसीलिए स्थूल यज्ञ में सुवर्ण से सोम के विनिमय का विधान है। जिसके पास सुवर्ण की पूंजी नहीं है, वह सोमपान का आनन्द कैसे उठा सकता है? हिरण्य से ही, प्राण, आयुष्य, तेज, ज्योति, ओज आदि की प्राप्ति होती है। हिरण्य या शुक्र ही सम्पूर्ण अध्यात्म-जीवन व नैतिक उन्नति का आधार है। हिरण्य की रक्षा ही महान् तप है। वैदिक कवि हिरण्य और सोम की महिमा का सहस्त्र मुख से वर्णन करते हैं। ऋग्वेद के पावमान सोम नामक नवम् मण्डल में इसी अध्यात्म सोम का वर्णन है, जिसका हमने ऊपर संकेत किया है।

शरीरस्थ प्राणाग्नि वीर्य या हिरण्य को पचा कर उसकी भस्म बनाकर उसे आकाश-संचारी बनाती है। यह परिणत रेत ही केन्द्रीय नाड़ी-संस्थान (Central Nervous System) अर्थात् सुषुम्णा के मार्ग से ऊपर उठता हुआ और उत्तरोत्तर तप से शुद्ध होता हुआ मस्तिष्क में पहुँचता है, वहाँ यह दिविस्थ सोम कहलाता है। वहाँ यह मस्तिष्क के सूक्ष्माति-सूक्ष्म यन्त्र से पवित्र किया जाता है। पुनः वह सुषुम्णा की ओर बहता है। जिस प्रकार सूर्य की रश्मियों से जल आकाशगामी होकर पुनः पृथिवी पर आता है, उसी तरह शरीरस्थ रसों के प्रवाह का चक्र भी परिपूर्ण हो रहा है। मस्तिष्क में चार वापी (Ventricles) हैं। उन में यह सोम रस शुद्ध किया जाता है। इन्हें यज्ञ परिभाषा में चमू कहते हैं। इन चारों के संधि स्थान त्रिकद्रक हैं, जहाँ बैठकर देवों ने सोमपान किया।

सोम और हिरण्य का अन्योऽन्याश्रय सम्बन्ध है। हिरण्य से सोम और सोम से हिरण्य पुष्ट होता है। दोनों ही शुक्र की संज्ञाएँ हैं। इस भाव से समझ कर अब हमें दाक्षायण हिरण्य पर विचार करना चाहिए। अथर्ववेद के प्रथम काण्ड के ३५ वें सूक्त में इस हिरण्य का प्रतिपादन है। टीकाकारों ने हिरण्य का अर्थ सोना मान कर कई कल्पनाएँ की हैं। कुछ के अनुसार इस सूक्त में सोने के आभूषण पहनने का उपदेश है, क्योंकि उससे आयु की वृद्धि होती है। किसी का मत है कि सुवर्ण को पर्पटी अथवा सुवर्ण-भस्म के रूप में खाना चाहिए, इससे भी आयु प्राप्त होती है। हमारी समझ में ये अर्थ स्थूल हैं और केवल एक अंश में ही सत्य हो सकते हैं। सूक्त का विशद् अर्थ अध्यात्मपरक ही है। वीर्य-रूप हिरण्य की रक्षा का यहाँ मुख्यतः उपदेश है। सब देवों की सुमनस्यमान (Harmonised) स्थिति से ही वीर्य की रक्षा हो सकती है। जब इन्द्रियाँ और प्राण एक चित्त होकर प्रयत्न करते हैं, तभी सब ओर से पवित्र विचारों का दृढ़ दुर्ग तैयार होता है। आयु की सौ वर्ष की वैदिक मर्यादा की प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य-आश्रम की निर्विकार स्थिति आवश्यक है। प्रथम आश्रम में जिसने अपने हिरण्य का संचय किया है, वही आयु की पूरी मर्यादा का भोग करता है। यह स्वर्ण देवों का सर्वश्रेष्ठ या प्रथमज ओज है। यह सब इन्द्रिय-तेजों में श्रेष्ठ और ज्येष्ठ है। इसके सामने पाप नहीं ठहर सकते। इस पावक में पाप-रूपी तिनके तुरन्त भस्म हो जाते हैं।

नैनं रंक्षासि न पिशाचाः सहन्ते।
देवानामोजः प्रथमजं ह्येतत्।। अथर्ववेद १-३५-२

आयु, वर्चस् और बल की प्राप्ति के लिए हिरण्य की रक्षा की जाती है, यह दाक्षायण है। दक्ष का तात्पर्य वीर्य अर्थात् शक्ति है। सब प्रकार की शक्तियों का अयन दाक्षायण है। रेत ही सब वीर्यों का अधिष्ठान है। प्रत्येक पुरुष शतानीक है। प्राण शतानीक है, वह विश्वतोमुख है अथवा वह सब सेनाओं का सेनानी है। सेनानी को भी अनीक कहते हैं। प्राण-रूप शतानीक के लिए दाक्षायणों ने हिरण्य को कल्पित किया। दक्ष वरूण की संज्ञा है। ऋतु मित्र को कहते हैं-

ऋतुदक्षौ ह वाऽस्य मित्रावरूणौ।
मित्र एव ऋतुर्वरूणो दक्षः।। (श. ४-१-४-१)

ऋतुदक्ष, प्राणापान, मित्रावरूण ये द्वन्द्व हैं। अपान से प्राण की ओर ले जाने वाली वायु स्वास्थ्य की सूचक है। दक्षिण से उत्तर को चलने वाली प्राणवायु मातरिश्वा कहलाती है। अपने शरीर में बिना इस वायु की सहायता के कोई ऊर्ध्वरेता हो ही नहीं सकता। स्वाधिष्ठान स्थान दक्षिण है, मस्तिष्क उदीची दिशा है। स्वाधिष्ठान ही वीर्य का क्षेत्र है। वहाँ से प्राण जब मस्तिष्क की ओर प्रवाहित होता है, तभी पुरुष ऊर्ध्वरेता बनता है। स्वाधिष्ठान प्रदेश में जलतत्व प्रधान है। वीर्य या रेत भी जल का ही रूप है। ऐतरेय उपनिषद् (खं. २) में लिखा है-**आपः रेतो भूत्वा शिश्नं प्राविशन्।** अर्थात् जल रेत में स्वाधिष्ठान चक्र में रहते हैं। यहीं से ये शरीर में व्याप्त होकर उसे पुष्ट करते हैं। जिस हिरण्य को हम बान्धना चाहते हैं, उसे ऋषि ने जलों का तेज, ज्योति, ओज और बल कहा है। जल ही रस है। रसों में अग्रणी रस रेत ही है। सब वनस्पतियों के वीर्य भी हिरण्यरूप ही हैं। स्थूल अन्न से ही रस उत्पन्न होता है। पुनः उसी के क्रमशः परिपाक होने से रेत बनता है।

प्रत्येक मास, ऋतु, अयन और संवत्सर में पिण्ड और ब्रह्माण्ड के अन्दर से प्राण-रूपी रस का नये-नये प्रकार से क्षरण होता है। शरीर के भीतर बाल्य, यौवन और जरा में विचित्र-विचित्र रस अपने समय से उत्पन्न होते हैं। उनका विधिपूर्वक शरीर में ही पूर्ण कर लेने से आयुष्य की वृद्धि होती है। इसी प्रकार वसन्त, ग्रीष्म और शरद् में तथा कृष्ण और शुक्ल पक्षों के ह्रास-वृद्धि क्रम में औषध-वनस्पतियों में अनेक रसों का प्रादुर्भाव होता है। उनसे वनस्पति पुष्ट होती है। वे रस हमारे लिए तभी अनुकूल हो सकते हैं, जब हम हिरण्य की रक्षा करते हैं। इन्द्र और अग्नि सात्विक प्राणापान के नाम हैं। वे हमारे लिए हिरण्य-रक्षा की अनुमति देते हैं।' ●

thearyasamaj.org

आस्था के दलदल में

-राजेन्द्र प्रसाद आर्य
आर्य समाज, मुज्जफ्फरपुर, बिहार
चलभाष-९८३५२०६६८८

आज लोगों को जिस नाम पर सबसे ज्यादा ब्लेकमेल किया जाता है वो नाम है भगवान का, और अपनी इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्राय: सभी धर्माधिकारियों ने अपने-अपने धर्मालम्बियों को इस बात की सख्त हिदायत दें रखी है कि धर्म और ईश्वर के विषय में बुद्धि का प्रयोग सर्वथा वर्जित है, यह पूरी तरह से आस्था का विषय है। यही कारण है कि लोग ईश्वर के विषय में बताई गई तमाम बातें ठीक उसी तरह मान लेते हैं उसके पश्चात् कुछ जानना भी नहीं चाहते। सिर्फ वैदिक धर्म में ही जिसका आधार वेद है में किसी बात को तर्क और प्रमाण की कसौटी पर कसकर बुद्धिमत्ता पूर्वक विचार कर मानने का निर्देश है। यदि आस्था के नाम पर व्यक्ति को यह स्वतंत्रता है कि वो जो चाहे माने तो आस्था के नाम पर ही ईश्वर को खुश करने वास्ते बलि और नरबलि देना गलत कैसे? इसे मात्र एक उदाहरण से समझा जा सकता है:-

इस बहुत कम लोग जानते होगें पर विज्ञान के अनुसार सूर्य का आकार पृथ्वी के आकार से १३ लाख गुणा बड़ा है अर्थात् १३ लाख पृथ्वी को मिलाकर एक सूर्य का आकार बनता है, और सूर्य की दूरी पृथ्वी से ९ करोड़ माइल दूर है, इतना ही नहीं सूर्य एक जलता हुआ आग का गोला है और सूर्य की ऊर्जा का मात्र २ अरबवाँ भाग ही पृथ्वी तक पहुँचता है, अगर सूर्य की सम्पूर्ण ऊर्जा पृथ्वी तक पहुँच जाय तो सबकुछ जलकर भस्म हो जाएगा। कुछ भी नहीं बचेगा। मगर इसी सूर्य के विषय में तुलसीदास ने लिख दिया कि सूर्य को हनुमान जी निगल गये। यह बात किसी के बुद्धि में समाहित नहीं हो सकती, फिर भी लोग इसे सत्य मानते इसलिए हैं कि रामचरित्र मानस के रचयिता और इतने बड़े रामभक्त भला गलत कैसे लिख सकते हैं। तो यह है अन्ध आस्था का प्रमाण।

अभी-अभी सांई पूजा को लेकर शंकराचार्य और सांई भक्तों के बीच बड़ी बहस छिड़ गई है जो कि एक बवंडर का रूप लेता जा रहा है हालांकि इसका कोई सार्थक परिणाम निकलने वाला नहीं है क्योंकि दोनों ही वेद विरूद्ध हैं, फिर भी हम चाहते हैं कि यह बहस किसी निर्णायक परिणति तक पहुँचे ताकि सत्य का अनावरण हो सके। शंकराचार्य का सांई बाबा पर सबसे बड़ा आरोप यह है कि हिन्दू धर्म में मात्र २४ अवतारों का ही उल्लेख है तो फिर पच्चीसवाँ अवतार के रूप में सांई बाबा कैसे? तो इस सम्बन्ध में हमारा यह कहना है कि हिन्दू धर्म के शास्त्रों में जब मात्र २४ अवतारों का ही उल्लेख है तो हम यह जानना चाहते हैं कि हिन्दू धर्म के किस शास्त्र में हिन्दू शब्द का उल्लेख है? और अगर नहीं है तो हम हिन्दू क्यों हैं वो क्यों नहीं जिसके नाम पर इस देश का पुरातन नाम आर्यावर्त रहा है। शंकराचार्य का दूसरा आरोप है कि सांई पूजा के नाम पर हिन्दू धर्म को बाँटने का षडयंत्र है। तो इस सम्बन्ध में हमारा कहना है कि हिन्दू धर्म तो पहले ही से अनेकों टुकड़ों में विभक्त है और जिस एक शब्द के वजह से हिन्दू धर्म अनेकों टुकड़ों में बटा हुआ है वो शब्द है अवतार। और जब तक शब्द अवतार विद्यमान रहेगा तब तक हिन्दुओं में एकता कभी भी स्थापित नहीं होगी। और आगे भी अवतार होता रहेगा तथा हिन्दू बंटते रहेंगे। अनुयायियों की तो बात छोड़िए हमारे धर्माचार्य सब भी अनेक टुकड़े में बंटे हुए हैं।

आज टी.वी. पर धर्माचार्यों की जो बड़ी बहस देखने को मिल रही है, उससे भी पता चलता है कि धर्माचार्यों में भी कितना विघटन है, इसे देखकर यह आश्चर्य होता है किसी भी धर्माचार्य को ईश्वरीय ज्ञान वेद से पूछने की जरूरत नहीं है कि आखिर वेद क्या कहता है जिसे मनुस्मृति ने लिखा है **''वेदोऽखिलो धर्म मूलम्''** अर्थात् वेद ही धर्म का मूल है। तो थोड़ा वेद से पूछकर देखें कि ईश्वर कौन है? उसके क्या सब गुण हैं, और वह क्या करता है? तो वेद के अनुसार:-

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामि, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है तो ये सब ईश्वर के गुण हैं इसलिए एकमात्र उसी की उपासना करनी चाहिए।

३. ईश्वर चूंकि अजन्मा है इसलिए मरण भी नहीं होता है। ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष का सृष्टि काल होता है इतना ही प्रलय काल होता है तो ईश्वर वो है जो सृष्टिकाल के पहले भी विद्यमान था और प्रलयकाल के बाद भी विद्यमान रहेगा। अवतार तो हम सभी का होता है, ईश्वर का नहीं। वह आने-जाने वालों में नहीं है क्योंकि वह तो कर्मकाल दाता है, कर्मफल भोक्ता नहीं। ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीन अनादि सत्तायें हैं। अवतार महान् आत्माओं का होता है, दिव्य आत्माओं का होता है परम आत्मा का नहीं।

ईश्वर कभी मरता नहीं, क्या लेवे अवतार!
जीव शरीर धारण करें, अपने कर्मानुसार।।

दुर्भाग्य है हिन्दू समाज का जिसने वेदों को लाल कपड़े में बांध कर रख दिया है और सिर्फ नाम भर लेते हैं। हमारे धर्माचार्य भी वेदों से इतना दूर क्यों हैं? इसके दो कारण हैं प्रथम तो यह कि वेदों तक उनकी पहुँच नहीं है और दूसरा यह है कि अगर वेदों तक उनकी पहुँच भी है तो उनमें वेदों के पन्ने को पलटने का साहस नहीं क्योंकि इसके बाद ढ़ोंग, पाखण्ड, गुरुडम, आडम्बर एवं अंधविश्वास को फैलाया नहीं जा सकता, उनका धर्म का व्यापार ही ठप पड़ जायेगा। वेदों के इस मंत्र का किसी के पास क्या जवाब है - **''न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यय:''** अर्थात् ईश्वर की कोई मूर्ति नहीं हो सकती क्योंकि उस महान् यश वाले ईश्वर का कोई आकार नहीं है। इसलिए इन धर्माचार्यों का बहस ही निराधार एवं वेद विरूद्ध है।

उनका कहना था कि सबका मालिक एक है तो क्या यह उन्होंने अपने बारे में कहा था, तो उनके भक्तजन उनकी भक्ति में क्यों नहीं लगते जिनके बारे में उन्होंने कहा था हालांकि यह कोई नई बात नहीं, वेद ने भी बहुत पहले ही कहा है कि **''एको विश्वस्य भुवनस्य राजा''** अर्थात् सम्पूर्ण भूमण्डल का स्वामी एक है तो सांई बाबा के पहले भी ईश्वर था और सांई बाबा के बाद भी ईश्वर रहेगा। अत: उनकी उपासना में सब लगें।

अगर धर्माचार्यों को बहस ही करनी है तो सारे धर्माचार्य मिल बैठकर इन समस्याओं का कारण और निराकरण खोजें कि आखिर क्यों?

१. दुनियाँ में सारे मुसलमान लगभग एक हैं, सारे ईसाई एक हैं, सारे बौद्ध एक हैं, सारे पारसी एक हैं तो फिर हिन्दू एक क्यों नहीं? यहाँ तक कि उनके मस्जिद, गिरिजाघर, बौद्धमठ एक हैं तो हमारे मन्दिर क्यों नहीं?

२. सारी दुनियाँ को एकेश्वरवाद का संदेश देने वाली आर्यजाति

शेष पृष्ठ २६ पर....

thearyasamaj.org

परमात्मा का दिव्य ज्योतिस्वरूप

- मृदुला अग्रवाल
१९ सी, सरत बोस रोड, कोलकाता-२०
चलभाष-०९८३६८४१०५१

सृष्टि की रचना, ब्रह्माण्ड, प्रकृति के कण-कण में वायु, जल, पृथ्वी, सूर्य, अग्नि, आकाश, चन्द्रमा, नक्षत्र, दिन-रात्रि, वनस्पति, औषधी, पशु-पक्षी, कीट-पतंग एवं मनुष्य आदि जितने भी जड़ और चेतन पदार्थ हैं, सबमें परमात्मा का दिव्य ज्योतिस्वरूप व्याप्त है। सब को अभय देने वाला सूर्य, चन्द्रमादि वसुओं से अलंकृत, सम्पूर्ण, ज्योतियों का शिरोमणि परमात्मा सुन्दर परमात्मरूप दिव्य ज्योतियों में प्रथम पूर्व-दिशा को भले प्रकार आश्रयण करके प्रकट होता है। उसको देखकर हर्षित हुए उपासक लोग कहते हैं कि यह देवताओं का मार्ग है हमें प्राप्त हो। उस परमात्मा की दिव्य ज्योति का ध्यान करने वाले विज्ञानी महात्मा इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र परिपूर्ण परंमात्मा का अनुभव करते हुए उसी की उपासना में प्रवृत्त होकर अपने जीवन को सफल बनाते हैं और परमात्मा की अचिन्त्य शक्तियों को विचारते हुए उसी में संलग्न होकर अमृतभाव को प्राप्त होते हैं। इसी भाव को **"प्राची दिगग्निरधिपति..."** इत्यादि संध्या के मन्त्रों में वर्णन किया है। प्राची आदि दिशाओं तथा उपदिशाओं का अधिपति एक परमात्मदेव ही है जो हमारा रक्षक, शुभकर्मों में प्रेरक और सम्पूर्ण ऐश्वर्य का दाता है। उसी अनन्त शक्तिमान् दिव्य ज्योतिस्वरूप परमात्मा की उपासना करनी योग्य है जिसकी महिमा सब संसार प्रकाशित करता है।

ईश्वर - युक्ति से भी ईश्वर का जन्म सिद्ध नहीं होता। जैसे कोई अनन्त आकाश को कहे कि 'गर्भ में आया या मूठ्ठि में धर लिया, ऐसा कहना कभी सच नहीं हो सकता, क्योंकि आकाश अनन्त और सबमें व्यापक हैं, इससे न आकाश बाहर आता और न भीतर जाता, वैसे ही परमात्मा के अनन्त और सर्वव्यापक होने से उसका आना-जाना कभी सिद्ध नहीं हो सकता। -सत्यार्थप्रकाश, सप्तमसमुल्लास

जिस प्रकार अग्नि से सहस्त्रों प्रकार की ज्वालायें उत्पन्न होती रहती हैं इसी प्रकार स्वत:प्रकाश परमात्मा के दिव्य ज्योतिस्वरूप से तेज की रश्मियाँ सदैव देदीप्यमान होती रहती हैं एवं उसकी ज्योति, उसके प्रकाशरूप गुण सदैव प्रकाशित होते रहते हैं।

अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः।
अग्निमिन्धे विवस्वभिः।। सामवेद, मन्त्र-१९

अर्थात् मनुष्य को चाहिये कि वह योग की अग्नि को प्रदीप्त करता हुआ मन के साथ बुद्धि को संयुक्त करे और ज्ञानज्योतियों से अपने हृदय के अन्दर परमेश्वर को प्रकाशित करे एवं श्रद्धा से उपासना करे न कि दिंखाने के लिये दम्भमात्र। ध्यान करके परमात्मा को हृदय में प्रकाशमान करना ही हृदयकुण्ड में ज्योतिस्वरूप अग्नि परमात्मा की सुलगाना है। इससे तमोगुण का अन्धकार क्षीण होता है एवं ज्ञान के प्रकाश की उन्नत्ति होती है। वह ज्योतिस्वरूप परमात्मा अपनी दिव्य ज्योति से उपासक के अन्त:करण में अज्ञान को छिन्न-भिन्न करके उसमें विमल ज्ञान का प्रकाश आलोकित करता है।

मुण्डकोपनिषद् में सत्तात्मक जगत् की चेतन सत्ताओं में मूर्धन्य सत्ता, पुरुषों के भी पुरुष विराट् पुरुष की व्याख्या करते हुए कहा है कि यह विश्व उसी पुरुष में है। कर्म, तप, ब्रह्म और परम अमृत सब उसी में है। जो प्रकाशमान है, सूक्ष्म से भी सूक्ष्म है, उसमें यह स्थूल लोक और उसमें वास करने वाले प्राणी भी निहित हैं। वह दिव्यस्वरूप परमात्मा, यह विराट् पुरुष सबका निवासस्थान एवं ज्योतिस्वरूप है। वही अक्षर ब्रह्म है, वही प्राण है, वही वाणी है, वही मन है, वही सत्य है, वही अमृत है। वही मनोमय है, धीर व्यक्ति हृदय और मस्तिष्क के मेल से उसका दर्शन करते हैं। उसकी ज्योति के सामने सूर्य की ज्योति क्षीण हो जाती है, चन्द्र, तारे, विद्युत तेजहीन हो जाते हैं। उसी की ज्योति से सब प्रकाशित होते हैं। उसके प्रकाश से ही सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रकाशित हो रहा है।

व्यु१ षा आवः पथ्या३ जनानां पंच क्षितीर्मानुषीबोधयन्ती।
सुसंदृग्भिरुक्षभिर्भानुमश्रेद्वि सूर्यो रोदसी चक्षसा वः।। ऋ. ७/७९/१

वह स्वत:प्रकाश पूर्ण परमात्मा जो अपनी दिव्य ज्योति से सम्पूर्ण भूमण्डल को प्रकाशित करता हुआ अपने विशेष ज्ञान से **"पंच जनाः"** - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और दस्यु इन पाँचों प्रकार के मनुष्यों को सत्यज्ञान का उपदेश कर रहा है जो सबके लिये परम उपयोगी है, हमारा कर्तव्य है कि हम यत्नपूर्वक उस स्वत:प्रकाश परमात्मा के स्वरूप को जानकर उसी का आश्रयन करें।

परमात्मा का यश उनके अपने स्वयं प्रकाश एवं प्रभुत्वभाव से सर्वत्र विराजमान है। **"वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्णं तमसः परस्तात्"** -यजु. ३१/१८ परम पिता प्रभु सूर्य के समान अपने तेजोमय रूप को सर्वत्र फैलाये हुए है। प्रभु की महिमा को जानने के लिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने **"गायत्री मन्त्र"** का उद्बोधन कराया। **"धियो यो नः प्रचोदयात्"** हम सबकी बुद्धियों को प्रेरित करें और हमारा मन **'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु"** मेरे मन का संकल्प शुभ व कल्याणकारी हो। परमात्मा की दिव्य अनुभूति अत्यन्त कल्याणकारी है। वह परमेश्वर उस दिव्य आनन्द रस का हमें आस्वादन कराता है वैसे ही जैसे माता प्रेमपूर्वक अपनी सन्तान को दुग्धपान कराती है।

अंगे अंगे शोचिषा शिश्रियाणं नमस्यन्तस्त्वा हविषा विधेम।
अंकान्त्समंकान् हविषा विधेम यो अग्रभीत् पर्वास्या ग्रभीता।।
अथर्व. १/१२/२

वह परमात्मा हमारे और सब व्यष्टि एवं समष्टि रूप जगत् के रोम-रोम में परिपूर्ण है। उस प्रकाश स्वरूप के गुणों को यथावत् जानकर हम लोग उस पर पूरी श्रद्धा से आत्मसमर्पण करें तो वह हमारे शरीर और आत्मा को बल देकर सहाय और आनन्द देता है।

"समाया है जब से तू नज़रों में मेरी।
जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।"
यहाँ भी तू वहाँ भी तू, ज़मी तेरी फ़लक तेरा।
मगर हमने पता पाया न हर्गीज़ आज तक तेरा।।"

thearyasamaj.org

संसार की प्रत्येक वस्तु में परमात्मा की अनुभूति ही उसके दिव्य ज्योतिस्वरूप को प्राप्त करना है।

''जानिये तब ऐ ज़फ़र है साफ़ दिल का आईना।
उसकी सूरत साफ़ उसमें जब नज़र आने लगे।।''

जब चित्त शुद्ध हो जाता है तब उसका दिव्य ज्योतिस्वरूप दिल के आईने में साफ़ नज़र आता है। ज्ञान और विवेक ही वह ज्योति है जिसके प्रकाश में हम सत्य, शुद्ध कर्तव्य को प्राप्त कर सकें। हमारा कर्तव्य है कि परमात्मा की दिव्य ज्योति से देदीप्यमान होकर अपने आपको प्रकाशित करें और नित्य नूतन वेदवाणियों से अपने रास्तों को साफ करके वेदोक्त धर्म मार्ग पर स्वयं चलें तथा औरों को भी चलावें। ''**बृहतीति बर्हिः - सबसे बड़ा**'' परमात्मा जो अपने प्रकाश से सबको पवित्र करता है और प्रवाह रूप से अनादि संसार को कार्यरूप करता हुआ अन्त में ''**हरतीति हरिः**'' अपने में लय कर लेता है। सब दिव्य वस्तुओं में ''**दीव्यतीति देवः**'' - जो सर्वोपरि दीप्तिमान है वह ध्यान द्वारा साक्षात्कार किया जाता है। यह ''**देव**'' जो सब दिव्य वस्तुओं में दिव्य स्वरूप है, इसकी व्याख्या नीचे लिखे वेद मन्त्र में स्पष्ट रीति से पायी जाती है:-

एषो ह देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो ह जातः सऽउ गर्भे अन्तः।
सऽएव जातः स जनिष्यमाणः प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुखः।।

- यजु. ३२/४

भावार्थ - यह प्रसिद्ध परमात्मा अपने उत्तम स्वरूप से जगत् को उत्पन्न कर प्रकाशित हुआ सब दिशाओं में व्याप्त हो के इन्द्रियों के बिना सब इन्द्रियों के काम, सर्वत्र व्याप्त होने से करता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थिर है। वह भूत भविष्यत् कल्पों में जगत् की उत्पत्ति के लिये पहले प्रगट होता है। वह ध्यानशील मनुष्य अर्थात् विद्वानों के ही जानने योग्य है।

विद्वत्ता एवं कवित्व भी उन्हीं लोगों का सफल होता है जो दिव्यज्योतिस्वरूप परमात्मा के गुणों को कीर्तन द्वारा सर्वसाधारण तक पहुँचाते हैं। वे मननशील ज्ञानी, मेधावी पुरुष, उस सनातन जीव का प्राणीमात्र के लिये सत्य से साक्षात् होने वाला, प्रकाशमान, ज्योति स्वरूप परमात्मा को ध्यान द्वारा उपासते हैं।

भगवद्गीता के १३वें अध्याय के १७वें श्लोक में भी वर्णन है:-

''ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।।''

अर्थात् - वह ब्रह्म ज्योतियों का भी ज्योति, माया से अति परे कहा जाता है तथा वह परमात्मा बोधस्वरूप और जानने योग्य है एवं तत्व ज्ञान से प्राप्त होने वाला और सबके हृदय में स्थित है।

''भक्तों पर अनुग्रह करने के लिये मैं स्वयं उनके अन्तःकरण में एकीभाव से स्थित हुआ अज्ञान से उत्पन्न हुए अन्धकार को प्रकाशमय तत्व ज्ञान रूप दीपक द्वारा नष्ट करता हूँ।'' -भगवत गीता, १०/११

मनुष्य शरीर बड़ा दुर्लभ है, परन्तु है नाशवान और सुखरहित। काल का भरोसा न करके अज्ञान से सुखरूप भासने वाले विषयभोगों में न फंसकर, उस ज्योतिस्वरूप परमात्मा का निरन्तर स्मरण करें। परमात्मा चाहते हैं कि हमारा आचरण, चरित्र, जीवन उनके ही गुणों की दिव्यता से परिपूर्ण हो, इससे परमात्मा को आनन्द प्राप्त होता है। उस दिव्य ज्योतिस्वरूप परमात्मा से हमारी प्रार्थना है कि सम्पूर्ण भू लोक को सदैव अपनी ज्योति से प्रकाशमान रखें। ●

सुनो स्वरूपानन्द जी! आप लगाकर ध्यान

स्वामी स्वरूपानन्द जी

जगत् गुरु दयानन्द थे, ईश्वर भक्त महान्।
देशभक्त धर्मात्मा, सत्वादी इंसान।।
सत्वादी इंसान, सदाचारी, तपधारी।
वीर साहसी बली, महात्यागी उपकारी।।
चरित्रवान्, गुणवान्, वेद प्रचारक नामी।
मानवता के पुंज, निराले थे वे स्वामी।।

भूल गया था वेद पथ, यह सारा संसार।
पोंगापंथी धर्म के, थे तब ठेकेदार।।
थे तब ठेकेदार, पाप का जोर यहाँ था।
पाखंडियों का आर्य वर्त में शोर यहाँ था।।
वेद विरोधी लोग, यहाँ आदर पाते थे।
ईश्वर भक्त महान्, यहाँ धक्के खाते थे।।

देव दूत दयानन्द ने, किया वेद प्रचार।
काँप उठे थे धूर्तजन, सुन ऋषि की हुंकार।।
सुन ऋषि की हुंकार, नास्तिक खल दहलाए।
वैदिक पथ पर चलो, सभी ऋषि ने समझाए।।
कुरान, पुराण, इंजील, झूँठ की है सब गठरी।
इन से कभी न स्वर्ग, बनेगी दुनियाँ सगरी।।

सुनो स्वरूपानन्द जी! आप लगाकर ध्यान।
वेदों के पथ पर चलो, यदि चाहो कल्याण।।
यदि चाहो कल्याण, पुराणों को तुम त्यागो।
निराकार कार जगदीश, मान लो, अब तो जागो।।
जग का स्वामी एक, न आप अनेक बनाओ।
सच्चाई उर धार, जगत् में आदर पाओ।।

ईश्वर का सुमरन करो, आप सुधारो भूल।
सांई पूजा का सुनो, जड़ पूजा है मूल।।
जड़ पूजा है मूल, राष्ट्र के पतन का कारण।
करो आप अवतारवाद का शीघ्र निवारण।।
जड़ पूजा से हुई, लूट भारत की भारी।
घातक है अवतारवाद की, यह बीमारी।।

जगत् गुरु दयानन्द के मानो तुम उपकार।
सुख पाओगे संत जी! तजदो बुरे विचार।।
तज दो बुरे विचार, महामानव बन जाओ।
आडम्बर दो त्याग, जगत् में नाम कमाओ।।
याद रखो! संसार, आपका यश गाएगा।
नाम स्वरूपानन्द, सार्थक हो जाएगा।।

-पं. नन्दलाल निर्भय, ''पत्रकार''
ग्राम-बहीन (पलवल), हरियाणा,
चलभाष-०९८१३८४५७७४

thearyasamaj.org

ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना के आठ मंत्रों पर एक दृष्टि

-ओम प्रकाश आर्य
आर्य समाज रावतभाटा, वाया-कोटा (राज.)
चलभाष-९४६२३१३७९७

महर्षि दयानन्द सरस्वती की महान् देन है-वैदिक संध्या। उन्होंने लुप्त हुई ऋषि परम्परा की उक्त खोज की। मानवमात्र के लिए यह संध्या एक समान है। हम ऋणी हैं उस ऋषि के। उसी क्रम में प्रत्येक कर्मकांड के पूर्व विचारणीय, पठनीय, चिन्तनीय स्वस्तिवाचन, शांतिकरण एवं ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना के मंत्रों का चयन किया है। हम यहाँ ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना के आठ मंत्रों के ज्ञान, विज्ञान व गूढ़ तथ्यों पर विचार करेंगे।

हम लोक में देखते हैं कि जितने महापुरुषों के नाम हैं उनमें भगवान माने जाने वाले महापुरुषों की लोग स्तुति करते हैं, प्रार्थना करते हैं और उपासना करते हैं। कुछ लोग जड़ देवताओं के साथ ऐसा करते हैं। कुछ लोग मानव के द्वारा कल्पित देवी-देवता व भगवान के प्रति ऐसा करते हैं। वास्तव में यह मानव की भ्रममूलक स्थिति है। महापुरुषों की स्तुतिप्रार्थनोपासना हो ही नहीं सकती। स्तुतिप्रार्थनोपासना तो केवल ईश्वर की होती है अन्य किसी की नहीं। महापुरुषों का जीवनचरित्र अनुकरणीय होता है। उस महापुरुष के जीवन से शिक्षा लेनी चाहिए न कि उनकी स्तुतिप्रार्थनोपासना करनी चाहिए क्योंकि उनका चरित्र ग्राह्य होता है। उनके चरित्र से सीख लेने पर कुछ मिल सकता है अन्य क्रिया-कलापों से कुछ नहीं मिलेगा।

> **स्तुतिप्रार्थनोपासना- मनुष्यों को योग्य है कि परमेश्वर की ही स्तुति, प्रार्थना और उपासना करें, उससे भिन्न की कभी न करें, क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु, महादेव नामक पूर्वज महाशय, विद्वान्, दैत्य, दानवादि निकृष्ट मनुष्य और अन्य साधारण मनुष्यों ने भी परमेश्वर ही में विश्वास करके उसी की स्तुति, प्रार्थना और उपासना की, उससे भिन्न की नहीं, वैसा हम सबको करना योग्य है।** -सत्यार्थप्रकाश, प्रथमसमुल्लास

इन तीनों की परिभाषा बताते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती '**स्वमंतव्यामंतव्यप्रकाश**' में लिखते हैं- **स्तुति**-''गुण कीर्तन, श्रवण और ज्ञान होना, इसका फल प्रीति आदि होते हैं।'' **प्रार्थना**-''अपने सामर्थ्य के उपरान्त ईश्वर के सम्बन्ध से जो विज्ञान आदि प्राप्त होते हैं, उनके लिए ईश्वर से याचना करना और इसका फल निरभिमान आदि होते हैं।'' **उपासना-''जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं वैसे अपने करना, ईश्वर को सर्वव्यापक अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहाती है। इसका फल ज्ञान की उन्नति आदि है।''** ये तीनों परिभाषाएँ महापुरूषों के साथ नहीं घट सकती और न ही किसी अन्य जड़ देवी-देवता में।

ईश्वर में असंख्य गुण हैं इसलिए उसी का गुणकीर्तन, श्रवण और ज्ञान हो सकता है। वह अनन्त सामर्थ्य से युक्त है, परम ऐश्वर्यवान है, पूर्ण ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण है, उसी से इन सब चीजों की प्रार्थना की जा सकती है अन्य किसी से नहीं। कारण यह है कि जो चीज जिसके पास है उससे वही चीज माँगने से मिल सकती है अन्य से नहीं। पूर्ण पवित्रता उसी में है अन्य में नहीं। इसलिए अन्य कोई भी उपास्य नहीं हो सकता। यदि कोई अन्य के साथ ऐसा करता है तो वह निरर्थक है। उसका कोई भी फल मिलने वाला नहीं है।

अब जरा विचार कीजिए-महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो ईश्वर स्तुतिप्रार्थनोपासना के आठ मंत्र बताये हैं उनमें से कौन सा मंत्र स्तुतिपरक है, कौन सा मंत्र प्रार्थनापरक और कौन सा मंत्र उपासनापरक है? पहला मंत्र ''**ओं विश्वानि...**'' है। इस मंत्र में '**सविता**' और '**देव**' यह स्तुतिपरक हैं क्योंकि इन दोनों पदों से ईश्वर के गुणों पर प्रकाश पड़ रहा है। ''**दुरितानि.....आसुव**'' तक के पद प्रार्थनापरक हैं क्योंकि इनमें ईश्वर से प्रार्थना की गई है। पहला मंत्र स्तुति और प्रार्थना से युक्त है। दूसरा मंत्र है-''**हिरण्यगर्भः.....हविषा विधेम।**'' इस मंत्र में ''**हिरण्यगर्भ.....द्यामुतेमां**'' तक के पद स्तुतिपरक हैं एवं ''**कस्मै.....विधेम**'' के पद उपासनापरक हैं। इस मंत्र में उसके गुणों का वर्णन एवं आत्मा को परमात्मा से जोड़ने का उल्लेख है। इसी प्रकार तीसरा मंत्र ''**य आत्मदा....मृत्युः**'', चौथा मंत्र ''**यः प्राणतो....चतुष्पदः**'', पाँचवां मंत्र ''**येन द्यौरूग्रा....विमानः**'' तक के सारे पद स्तुतिपरक हैं और ''**कस्मै....विधेम**'' के पद उपासनापरक हैं। '**कस्मै....विधेम**'' को छोड़कर शेष सारे पदों में ईश्वर के गुणों का वर्णन है। इन गुणों में ज्ञान भी है, विज्ञान भी है और बुद्धि की पूर्णता भी। छठवाँ मंत्र है ''**प्रजापते....रयीणाम्।**'' इस मंत्र में ''**प्रजापते....बभूव**'' तक के पद स्तुतिपरक है और ''**यत्कामास्ते....रयीणाम्**'' के पद प्रार्थनापरक है क्योंकि इसमें ईश्वर से याचना की गई है। सातवाँ मंत्र है ''**स नो....अध्यैरयन्त।**'' इस मंत्र में ''**स नो,....विश्वा**'' के पद स्तुतिपरक हैं और ''**यत्र देवा....अध्यैरयन्त**'' के पद उपासनापरक हैं। आठवाँ मंत्र है ''**अग्ने नय....उक्तिं विधेम।**'' इस मंत्र में ''**अग्ने, देव, विद्वान्**'' पद स्तुतिपरक हैं एवं शेष पद प्रार्थनापरक हैं। इसमें प्रार्थनापरक पद सर्वाधिक हैं।

स्तुतिपरक सारे पदों में परमात्मा के विज्ञान का रहस्य गुंफित है। उदाहरणार्थ - देव, हिरण्यगर्भ, पतिः, भूतस्य, आत्मदा, ईशे, रजसः, विमानः, जनिता, विश्वा, अग्ने आदि पद। इन पदों में ज्ञान और विज्ञान भरा है। इनके वैज्ञानिक अर्थों का चिन्तन करने से परमात्मा के प्रति स्वतः प्रीति बढ़ जाती है। साथ ही एक सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान शक्ति का बोध भी होता है। अकेले ''**हिरण्यगर्भ**'' पद सृष्टि-विज्ञान का प्रकाशक है। '**देव**' पद सम्पूर्ण लोक-लोकान्तरों का विधायक है। इसी प्रकार पति, ईशे, जनिता, अग्ने आदि पर सृष्टि के रहस्य का उद्घाटन करते हैं। ''**वैदिक सम्पत्ति**'' नामक पुस्तक में '**हिरण्यगर्भ**' की बड़ी वैज्ञानिक व्याख्या की गई है। इस विज्ञान का चिन्तन-मननकर परमात्मा की बुद्धिमत्ता का अनुमान लगाया जा सकता है। इससे मनुष्य में उत्साह आता है और उसको परमात्मा का सम्बल प्राप्त होता है।

विश्वशांति, मानवकल्याण, राष्ट्रप्रेम, एकता, सहिष्णुता, प्रेम, आनन्द, मानवता का विकास, आरोग्य, आत्मविश्वास जैसे गुणों का विकास एवं भावना इन मंत्रों में सन्निहित है। पहला मंत्र ''**ओं विश्वानि.**'' से जब मानव

thearyasamaj.org

के अन्दर से दुर्गुण, दोष, बुराइयाँ दूर हो जाएँगी तो विश्वशांति, मानवकल्याण, राष्ट्रप्रेम, आनन्द, प्रेम का संचार होगा। ''**वयं स्याम.**'' पदों में जब हम धन-सम्पत्तियों के स्वामी बनने की प्रार्थना करेंगे तो उससे मानवता का विकास होगा। परस्पर सहिष्णुता का भाव उत्पन्न होगा। '**हिरण्यगर्भ, देव, अग्ने**' जैसे पदों से एक सर्वव्यापक सत्ता का बोध होने से एकता और आत्मविश्वास का भाव उत्पन्न होगा। '**अग्ने नय सुपथा**' इन पदों में निहित भाव पर विचार करने से विदित होगा कि जब हर मनुष्य अच्छे रास्ते पर चलने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करेगा तो इस धरती पर हिंसा, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, वैमनस्य, स्वार्थ जैसी दुष्प्रवृत्तियाँ होगी ही नहीं।

कितना ज्ञान-विज्ञान और उच्च भाव भरे हैं इन मंत्रों में। पाठ मात्र से कुछ नहीं होता, ज्ञान कर्म का समन्वय होना चाहिए। ईश्वरानुभूति के लिए बाहर भटकने की कहाँ आवश्यकता है। सब कुछ तो अपने अन्दर है। आत्मा में व्याप्त परमात्मा की प्रेरणा का भाव तभी होता है जब मनुष्य सुपथ पर चलता है। ईश्वरीय कर्म (नेक कर्म) करता है। हमारा चिन्तन-मनन भी उसी प्रकार का होना चाहिए। ईश्वरीय प्रेरणा की एक छोटी-सी घटना बताना चाहूँगा। एक बार आर्य समाज में एक स्वामी जी पधारे। मैंने उनकी सेवा-सुश्रूषा की। तीसरे दिन जब वे जाने लगे तो आर्य समाज के दक्षिणा के अलावा मैंने अपनी ओर से कुछ दक्षिणा देने का विचार किया। सोचा कि अभी मैं अपनी ओर से कुछ दक्षिणा देता हूँ। संयोग से इसी बीच मुझे किसी आवश्यक कार्यवश आधे घंटे के लिए बाजार जाना पड़ गया। वहाँ कुछ विलम्ब हो गया। स्वामी जी आर्य समाज से प्रस्थान कर गए। जब मैं आया और देखा तो स्वामी जी नहीं थे। मन पश्चाताप से भर गया। विचार आया कि मुझे स्वामी जी की दक्षिणा देकर जाना चाहिए था। भरे मन से पश्चाताप करता हुआ जा रहा था। मन में सोच रहा था कि काश स्वामी जी मिल जाते। ईश्वरीय प्रेरणा कहूँगा कि स्वामो जी बस स्टैंड पर जिस बस की प्रतिक्षा कर रहे थे, उसके आने में समय शेष था। वहीं स्वामी जी बैठे मिले। उन्हें देखकर खुशी का पारावार नहीं रहा। तुरन्त उन्हें दक्षिणा दी और मन में अपार संतोष का अनुभव हुआ। कभी-कभीं ऐसी सात्विक अनुभूति जीवन में होती है। इसे ईश्वरीय प्रेरणा मानना पड़ेगा। ''**यत्कामास्ते....अस्तु.**'' पद यहाँ विचारणीय है। अतएव हमें इन मंत्रों के अर्थों पर विचार करना चाहिए। ●

राष्ट्रीय पर्व बनाम आर्य समाज

- ले. नरसिंह सोलंकी
मंत्री-आर्य समाज सूरसागर, जोधपुर(राज.)
चलभाष -९४१३२८८९७९

हम १५ अगस्त सन् १९४७ से हर साल भारतीय स्वतंत्रता दिवस एवं २६ ज़नवरी सन् १९५० से भारतीय संविधान लागू होने का गणतंत्र दिवस मनाते आ रहे हैं। १५ अगस्त को लाल किले पर प्रधान मंत्री द्वारा राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया जाता है और राष्ट्र को संबोधन देते हैं, जिसमें भावी नीतियों की झलक दिखलाई पड़ती है। २६ जनवरी को दिल्ली के राजपथ पर राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। जिसमें देश-विदेश के मेहमान, पदाधिकारी, नेता, गणमान्य लोग व आमजन भी सम्मिलित होते हैं। कार्यक्रम में मिलिट्री परेड, घातक हथियार प्रदर्शन, प्रदेशों की सांस्कृतिक झांकियाँ, वीर बालकों की सवारी, पदक वितरण एवं लड़ाकू विमानों आदि का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया जाता रहा है।

स्थानीय स्तर पर भी ये दोनों कार्यक्रम प्रदेश व जिला स्तर एवं सरकारी कार्यालयों व सरकारी एवं निजी विद्यालयों में बड़े उत्साह के साथ सरकारी आदेशानुसार मनाये जाते हैं। इनाम, प्रशंसा-पत्र व मिठाइयाँ भी खूब बाँटी जाती है। लेकिन दुःख की बात यह है कि जनता जनार्दन ने ये पर्व अपने स्तर पर स्वीकार नहीं किये हैं। कितना अच्छा होता यदि भारत का हर नागरिक अपने घर-संस्थान में तिरंगा झंडा फहराता, राष्ट्रीय गान गाता व मिठाई बाँटता। कुछ लोग तो यह भी मानते हैं कि तिरंगा तो कांग्रेस का है, इससे हमें क्या लेना देना। लेकिन यह तो स्पष्ट है कि तिरंगा झंडा ऊपर से केशरिया बहादुरी का, नीचे हरा हरियाली खेती का एवं बीच में सफेद शान्ति का प्रतीक है, जिसके बीच में अशोक चक्र की २४ पंखुड़ियाँ होती हैं व कुल साइज १x१.१ का अनुपात में रहता है। कांग्रेस के झंडे तिरंगे के बीच में हाथ के पंजे का निशान है। अलग-अलग राजनैतिक दलों के उनके अलग-अलग प्रकार के झंडे हैं, वैसे ही धार्मिक पंथों के भी तरह-तरह के झंडे हैं। राष्ट्रीय ध्वज के अलावा सभी प्रकार के झंडे चौबीसों घंटे लहराते रहते हैं। जहाँ तक राष्ट्र पर्व एवं राष्ट्रीय ध्वज का प्रश्न है वहाँ पार्टी अपना झंडा नहीं लगाकर केवल राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा ही फहरायेगी वह भी सुबह से शाम सूर्यास्त तक ही, चाहे न्यायालय हो अथवा प्रशासनिक भवन।

हमारे आर्य समाज एवं उच्च संगठनों में राष्ट्रीय पर्व पर तिरंगा ध्वज फहराने का रिवाज नहीं है। हाँ, अगर कहीं किसी ने पर्व मना भी लिया तो उसका उल्लेख सामने नहीं आता। हमने केवल ओ३म् का भगवा झंडा ही मान रखा है। कहने को तो हम बड़े गर्व से कहते हैं कि **भारत के स्वतंत्रता संग्राम में ९० प्रतिशत लोग जो शहीद हुए व यातनाएँ सही वो आर्य समाजी विचारधारा से प्रभावित थे। हमारे पूर्वजों ने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था तो उसका प्रतिफल राष्ट्रीय पर्व मनाने में पीछे क्यों रहें। हम भारतवासी जैसे होली, दिवाली, ईद-उल-फितर, गणेश चतुर्थी, क्रिसमस डे, लोहड़ी, दुर्गाष्टमी आदि पर्व बड़े उत्साह से मनाते हैं, वैसे ही राष्ट्रीय पर्व क्यों नहीं मनाते ?** क्या हममें किसी प्रकार की कोई राष्ट्रीयता की कमी तो नहीं है? हमें इस विषय में गंभीरता से सोच विचार की आवश्यकता है।

मैं (लेखक) नौकरी में अथवा सेवा निवृत्ति के बाद में भी जहाँ कहीं पर रहा उपरोक्त दोनों राष्ट्रीय पर्व मनाता आ रहा हूँ। मैंने प्रयत्न करके पं. कमलेश कुमार अग्निहोत्री का प्रवचन कार्यक्रम १५ अगस्त २००९ को श्री सरस्वती बालवीणा भारती सी.से. स्कूल, सिरोला बेरा, सूरसागर, जोधपुर में रखा था, जो अत्यंत ही प्रभावशाली रहा, लोगों ने खूब सराहा, जिसकी कैसेट भी मेरे पास उपलब्ध है। इसी प्रकार १५ अगस्त २०१३ को भी पं. रामनिवास गुणग्राहक का प्रवचन कार्यक्रम उसी स्कूल में रखा जो बड़ा प्रशंसनीय रहा (यह कैसेट भी मेरे पास उपलब्ध है), इससे पहले आर्य समाज सूरसागर एवं राजकीय बालिक सी.से. स्कूल सूरसागर के प्रांगण में झंडारोहण कर प्रवचन दिया गया।

हमें प्रयत्न करके हर आर्य समाज, आर्यवीर दल शाखा एवं उच्च स्तरीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं में राष्ट्रीय पर्वों को मनाने की शुरूआत करनी चाहिए। दर आयद, दुरूस्त आयद। हमने सारे संसार को आर्य बनाने का बीड़ा उठा रखा है, तो हमें सबसे पहले हमारी उच्च कोटि की राष्ट्रीयता भी प्रस्तुत करनी चाहिए। ●

thearyasamaj.org

ओ३म्   हमारा सदैव हित चाहने वाला मित्र कौन? एक विवेचन

हमारा मित्र

- अभिमन्यु कुमार खुल्लर
२२, नगरनिगम क्वाटर्स, लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.)
दूरभाष- ०७५१-२४२५९३१
ई.मेल. - khullar2010@gmail.com

इस संसार में आने के पश्चात् हम बचपन से ही मित्र बनाने लगते हैं। सांसारिक प्रवाह में अनेक मित्र जुड़ते हैं और अनेक मित्र पीछे छूट जाते हैं। जो पीछे छूट जाते हैं, न हम उन्हें याद करते हैं और न ही वे हमें। हमें बुरा भी नहीं लगता। शायद इसे ही संसार की रीत कहते हैं। यह समझने का मौका आयु के अंतिम पड़ाव में ही मिलता है, उससे पहले नहीं। मैं एक ऐसा मित्र जानता हूँ, जो होता जन्म के साथ है, पर जब आप उसे मित्र बनाकर चलना प्रारम्भ कर देते हैं तो वह आपका साथ कभी नहीं छोड़ता।

ईश्वर के साथ व्यक्ति ने अनेक सम्बन्ध बनाये हैं-माता-पिता, गुरु, दाता और न जाने क्या-क्या। ये सब सम्बन्ध ईश्वर को उच्चासन पर और भक्त को नीचे आसन पर बिठा देते हैं। मुझे ये संबंध जोड़ने में उतना आनन्द नहीं आया, जितना मित्र का संबंध जोड़ने से आया। **'मैत्री'** शब्द में अपनत्व की प्रगाढ़ता, विश्वास, खुलापन, और बराबर की हिस्सेदारी अन्तर्भूत है। सामान्यतया यही कहते हैं कि संकट में, विपत्ति में जो काम आए वही **'मित्र'** कहलाता है। यह पैमाना ठीक है, पर छोटा है। मित्र की यह परिभाषा जब दृष्टिगोचर हुई तो मैं उछल पड़ा - सच्चा मित्र वही है जो आपके अत्यन्त गुप्त भेद को, किसी भी संकट में पड़ने पर प्रकट नहीं करता।

मेरी यह बात वही समझ सकता है, जिसको यह बात अनुभव करने का मौका मिला हो। मौका, मिलता तो अनेक को है पर मित्रता की कलई उतारने का यह स्वर्ण अवसर बन जाता है। दूसरे को चाहे वह निकट संबंधी हों या घनिष्ठ मित्र नीचा दिखा कर, अपना महत्व सिद्ध करने की लालसा इतनी प्रबल होती है कि मित्रता भाड़ में झौंक कर भी वह, वह सुख उठाता ही है। पर, यदि ऐसा मौका मिले और आप परपीड़ा जनित सुख का लोभ संवरण कर पाएँ, जो आप अनचाहे उच्चासन पर विराजमान हो जाते हैं और सर्वाधिक विश्वसनीय बन जाते हैं।

मैं व्यक्तिगत जीवन से यथार्थ उदाहरण प्रस्तुत करना चाहूँगा। नाम-पते का उल्लेख नहीं कर सकूँगा। छदम् नाम-पता भी नहीं लिखूँगा। कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी ने जिनसे मेरा कोई घनिष्ट संबंध नहीं था और परिचय भी कुछ पुराना नहीं था; मुझसे पुछा कि कार्यालय के पश्चात् मैं उनके घर आ सकता हूँ। कारण पुछने पर कहा कि घर पर ही बताऊँगा। पता पुछ कर घर पहुँच गया। घर पर कहा-पास वाले मकान में चलो। वहाँ जो उन्होंने कथा सुनाई तो मुझे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि एक अनजान व्यक्ति पर उन्होंने इतना भरोसा कैसे किया और उन्हें कैसे विश्वास हुआ कि मैं उनकी सहायता करूँगा। पैतृक जीन्स में निडरता मिली है, शरीर भी काफी हृष्ट-पुष्ट था। मैंने स्वीकृति दे दी। किस्सा यह था कि उनकी नवयौवन पुत्री, एम.ए. की छात्रा, एक मात्र संतान एक आवारा गुण्डे के चंगुल में फंस गई थी। जाने किन परिस्थितियों में उसके घर में आना-जाना हो गया था। दिन ब दिन उस लड़के का शिकंजा कसता जा रहा था। जब पानी सिर से ऊपर हो गया तो उनके लिये जीवन-मरण का प्रश्न बन गया। कॉलोनी में वह और उसके यार-दोस्त चक्कर लगाते ही रहते थे। लड़की को भी निकालना और परिवार को भी। मैंने उनसे कहा लड़की को बुलाइए, मैं उसे अपने घर ले जाता हूँ। आप सपरिवार सुविधा अनुसार आ जाइए।' एक घण्टे में वे लोग भी घर पर आ गए। सुबह २ बजे पठानकोट एक्सप्रेस से वह लड़की को लेकर रिश्तेदारी में जाना चाहते थे। उनका घर स्टेशन के पास ही था इसलिये गुण्डों द्वारा घिर जाने की आशंका के कारण मुझे भी साथ ले गए। लड़की की व्यवस्था कर तीन-चार दिन बाद ही ग्वालियर लौट आए। आते ही कहा-एक काम और करो। अभी ग्वालियर में हमारा रहना नहीं हो पाएगा, कहीं रेसीडेन्ट ऑफिस में पोस्टिंग कराओ। यह काम बड़ा था। फिर भी मैंने हिम्मत की। संबंधित अधिकारी को जब बताया कि महाशय अपने माता-पिता के साथ मेरे घर पर टिके हुए हैं।

अधिकारी महोदय ने मेरी बात की सत्यता पर पूर्ण विश्वास कर ग्वालियर के बाहर तीन साल के लिये उनकी पदस्थापना तत्काल कर दी। प्रकरण हम दोनों के बीच ही रहा। अब तो मुझे भी सेवानिवृत्त हुए १७ वर्ष हो गये हैं। वह कहाँ है, मुझे ज्ञान नहीं। मुझे आज भी प्रकरण यादकर संतोष मिलता है, सुख मिलता है कि उनके परिवार की मर्यादा पर आँच नहीं आई। कुछ घटनाओं का वर्णन कर सकता हूँ पर इसलिये नहीं कर पाऊँगा कि पात्र जीवित है और आस पास घूम रहे हैं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि ऐसे कर्म ईश्वर जोड़ के खाते में अवश्य रख लेता होगा। इस जीवन में ऐसे प्रसंगों से आपका आत्मबल बढ़ता है। ईश्वर पर विश्वास गहराता है, क्योंकि ईश्वर स्वयं करोड़ों लोगों के अत्यन्त गोपनीय रहस्यों को प्रकटतया उजागर नहीं करता। एक तो यह मानवीय कार्य व्यापार है दूसरा आग लगाकर मजा लूटना भी उसका गुण-धर्म नहीं है।

ईश्वर की मित्रता में दूसरा गुण उसकी सहायता करने की अपार सामर्थ्य है। वह जैसी सहायता करता है, उसे देखकर हम अनायास ही कह उठते हैं, यह दैवीय सहायता है, प्रभु की कृपा है। वेद मर्मज्ञ पं. शिवनारायण उपाध्याय जी (कोटा) ने मुझे एक व्यक्तिगत पत्र में लिखा था कि दैवीय सहायता की अनुभूति उन्हें जीवन में अनेक बार हुई है और यही अनुभूति ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण है। मेरा व्यक्तिगत अनुभव भी यही कह रहा है। अपने जीवन के कतिपय प्रसंगों को लेखनीबद्ध करता हूँ-

(एक) पत्नि श्रीमती स्वदेश दोनों छोटे बच्चों, मनीषा व अमित को लेकर पठानकोट बस स्टेण्ड पर खड़ी थी। बस आ गई थी और धक्का मुक्की में लोग अपना सामान बस पर चढ़ा रहे थे। मैं भी भरी हुई बड़ी वी.आई.पी. की अटैची लेकर चढ़ गया। जब अंतिम सीढ़ी पर पहुँचा तो अटैची वाला हाथ हवा में लहरा गया और मैं अटैची साथ के नीचे गिरा। मुझे बिलकुल चोट नही आई। पहला विचार यही आया कि यदि एंगल से गिरता और दुर्घटनाग्रस्त हो जाता तो पत्नि बच्चों को कैसे संभालती और कैसे मुझे? क्या इसे ईश्वरीय सहायता के अतिरिक्त, कुछ कहा जा सकता है?

(दो) भानजे ज्योति के साथ उसकी स्टेण्डर्ड गाड़ी (बहुत छोटी) में ग्वालियर से मण्डी हिमाचल जा रहे थे। गाड़ी अच्छी स्पीड पर दौड़ रही थी, होटल पास में ही था कि ज्योति को स्टीरियों में कैसेट चेन्ज करने के लिये झुकना पड़ा। वह झुका और मुझे पेड़ों की हरियाली दिखाई देने लगी। मैं चीख उठा-ज्योति, ज्योति और ज्योति ने जो स्टीयरिंग काटा तो गाड़ी हाइवे पार कर नीचे झाड़ियों में रेत में घुस गई। पत्नि पिछली सीट पर थी और भैया अभी गर्भ में ही था। किसी को कोई चोट नहीं आई। दुर्घटना का असर अभी भी गहरा है।

thearyasamaj.org

(तीन) ११ फरवरी १४ को ब्रेन हेमरेज का पहला अटैक हुआ। तीन दिन आई.सी.यू. में रखने के बाद डॉक्टरों का निर्णय हुआ कि रक्त का थक्का घुल गया है और मुझे अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। २३ को फिर तबियत बिगड़ने लगी। दोपहर का खाना ४ बजे खाया। घुटने मोड़कर, बाहर की तरफ पैर निकाल कर लेटा रहा। ११ बजे तक पत्नि श्रीमती स्वदेश ने दो-तीन बार खाना खाने के लिये कहा तो मनाकर दिया। फिर हाँ, हूँ के अलावा कोई बात नहीं और धीरे-धीरे अचेतावस्था में चला गया। रात २:३० बजे पत्नि समीपस्थ भानजे को बुला लाई। यही निर्णय हुआ कि सुबह अस्पताल ले चलेंगे।

सुबह पूर्ण बेहोशी की स्थिति में परिवार अस्पताल (प्राइवेट) पहुँचाया गया। डॉक्टरों को बुलाया गया। डॉक्टरों की राय थी कि ब्रेन हेमरेज फिर हो गया है। आवश्यक जाँचों के पश्चात् तत्काल ऑपरेशन कराने की सलाह दी गई। पत्नि ने तत्काल कहा कि आप ऑपरेशन की तैयारी कीजिये। आवश्यक धन मैं काउण्टर पर जमा करा रही हूँ। सब तैयारी में शाम सात बज गये। सात बजे प्रारंभ हुआ ऑपरेशन साढ़े आठ बजे समाप्त हुआ। दूसरे दिन २४ घण्टे के बाद होश आया। दोनों हाथ पलंग से बंधे थे। दस दिन बाद घर आया। एक माह तक घर के बाहर जाने की इजाजत भी नहीं थी। टायलेट जाने के लिये भी पत्नि पीछे-पीछे चलती थी। डेढ़ माह के बाद मस्तिष्क की धुंध साफ होने लगी। मन में बार-बार यही विचार उठता था कि पत्नि से पूँछू कि रात १ बजे से शाम ८ बजे तक, ऑपरेशन प्रारम्भ होने तक, तुम्हारी मन:स्थिति क्या रही। पर ताजा घाव कुरेदने का मन नहीं हुआ, हिम्मत नहीं हुई, मन का यह संघर्ष चल ही रहा था कि .... अप्रैल २०१४ को वेदमर्मज्ञ पं. शिवनारायण उपाध्याय जी (कोटा) का पत्र मिला। उस पत्र में पण्डित जी ने दु:ख प्रकट किया कि जब आपकी पत्नि मर्मान्तक पीड़ा झेल रही थी तो उन्होंने हमें (पं. जी को) याद क्यों नहीं किया। मुझे अपनी बात करने का मौका मिल गया। मैने पत्र पढ़कर सुना दिया और पूछा कि जानना चाहता हूँ कि तुम्हारी मानसिक स्थिति कैसी थी? २० घण्टे से निश्चेत-अवस्था में पड़ा हुआ देखकर क्या विचार आ जा रहे थे? पत्नि ने बिना विलम्ब किये तत्काल कहा कि मुझे ईश्वर का पूरा भरोसा था कि आप बिलकुल ठीक हो जायेंगे। दूसरे मुझे डॉ. उदेनिया, न्यूरोफिजिशियन जो मेरे कार्यालय सहयोगी के सुपुत्र हैं, उन पर भी पूरा भरोसा था कि इलाज में वह कोई कसर नहीं छोड़ेगें। दोनों भरोसे में खरे निकले और आप ठीक हैं।

सवाल यह उठता है कि श्रीमती जी की वैदिक ईश्वर में इतनी प्रबल, दृढ़ आस्था न होती तो वह टोने-टोटके, गंडे-ताबीज, साधु-फकीर, मन्नतें, पचास चक्करों में पड़कर, रो-रोकर बुरा हाल कर देती। ऑपरेशन सायं ७:०० बजे प्रारंभ हुआ। सबकी वाणी मौन हो गई। पत्नि ने इसे सुअवसर समझ कर संध्या कर ली। परिवार व बाहर के सभी परिचित लोग उसके धैर्य, मस्तिष्क पर पूर्ण नियंत्रण रख कर, सभी आवश्यक काम व व्यवस्था का संचालन स्वयं करते हुए देख कर आश्चर्य चकित थे। आज भी हैं। मैं अपनी बात नहीं करता पर श्रीमती की बात सुन कर, समझ कर आश्चर्य चकित होता हूँ। स्वयं से ही पूछता हूँ कि क्या मैं ऐसा कर पाता? ईश्वर के प्रति एकान्त निष्ठा व कर्तव्य के प्रति जागरूकता ईश्वर कृपा का ही फल है, ऐसा मेरा मानना है और यही पत्नि श्रीमती स्वदेश ने करके दिखलाया। कर्तव्य-कर्म, पूर्ण विचार के बाद स्थिर करना यदि ईश्वर में आस्था का परिणाम नहीं है तो और क्या है?

अन्य घटनाओं से लेख का कलेवर नहीं बढ़ाना चाहता। महर्षि मानते हैं कि ईश्वर सहायता करता है पर कब? जब पूर्ण पुरूषार्थ करने पर भी किसी कठिन समस्या का निराकरण न हो रहा हो, तभी प्रार्थना करने पर वह अवश्यमेव सहायता करता है। कोई हल सुझाता है। किसी मित्र, सगे-संबंधित को भेज देता है। कोई न कोई ऐसा बहाना बना देता है, जिससे आपका काम बन जाए और काम न होने वाला हो तो संतोष प्रदान करता है। बस जरूरत है धैर्य की और विश्वास की। **उस पर विश्वास की कमी ही हमें इधर-उधर भटकाती है। और यही कमजोरी अमरनाथ, तिरूपति बालाजी, सोमनाथ व वैष्णोदेवी व शिरड़ी आदि अन्य अनेक स्थानों पर भटकन का कारण है। मैं इसे आस्था की पूर्ति हेतु यात्रा नहीं मान सकूँगा क्योंकि आस्था भटकाती नहीं, आश्रय देती है।** ●

ओ३म् ही गणेश है

गणपति बप्पा मोरिया, चार लड्डू चोरिया।
ऐसे मूर्ख जनन का, विवेक गन्दा होरिया।।
विवेक गन्दा होरिया, उसकी भूल दिखा दो।
माने नहीं बात तो, अजायब घर बता दो।।
उजाला न भाय उल्लू को, न दोषी उषउपति[1]।
मूर्ख न माने सत्य, ओ३म् ही वेदों में गणपति।।

१-उषउपति-सूर्य

तिलक जी का भ्रम

प्रथम पूज्य देव, गणपति बप्पा मोरिया।
सारे भक्त प्रभु को कहे, चार लड्डू चोरिया।।
चार लड्डू चोरिया की, है अपावन संस्कृति।
गणेश उत्सव द्वारा, आई भक्तों में विकृति।।
यहीं हिन्दुत्व एकता? कैसा तिलक भरम।
गणेश उत्सव का, त्रिफल प्रयास प्रथम।।

ओ३म उपासना ही गणेश पूजन

भक्तों के पूज्य देव, गणपति बप्पा मोरिया।
तेरी हँसी उड़ाते कहें, चार लड्डू चोरिया।।
चार लड्डू चोरिया से, कैसी शिक्षा पाये हम।
सच्ची वैदिक शिक्षा ही, मानो तुम सर्वोत्तम।।
आडम्बर सारे छोड़, पूजा वैदिक करो-तो।
ओम् उपासना सच्ची, गणेश पूजा है भक्तो।।

- भारतेन्द्र आर्य
खरसौद कलां, जिला-उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष-०९४२४५५३८९६

thearyasamaj.org

सत्य-असत्य निर्णय परीक्षा पंच विद्या

-स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती
योगस्थली आश्रम महेन्द्रगढ़
दुचौली रोड हरियाणा
चलभाष : ०९४१६१३३५९४

यूँ तो समस्त विश्व अंधविश्वास से ग्रसित है, परन्तु भारत में अंधविश्वास की जड़ें बहुत गहरी हैं और इसका अत्याधिक प्रचलन है। **महर्षि दयानन्द जी ने इस अंधविश्वास की बिमारी को भलीभाँति समझ लिया था। और उसका प्रतिकार का उपाय भी सुझाया था। जब प्रत्येक व्यक्ति वेदों का स्वाध्याय कर भलीभाँति समझेगा, तभी इस कष्टसाध्य व्याधि से छुटकारा पा सकेगा।** महर्षि दयानन्द ने एक सरल और सुगम उपाय बताया है कि जब कोई भी बात सुनें या देखें, तो उस की सत्यता या असत्यता का परीक्षण अवश्य करें। शास्त्रों में सत्य व असत्य परखने की एक कसौटी दी गई है। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय सम्मुलास में स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि अपने बच्चों को सत्य-असत्य जाँचने की पाँच विधियाँ बचपन में ही सिखा देनी चाहिए। जब बच्चा उपरोक्त पाँचों विधियों को भली प्रकार सीख जाता है तो भविष्य में कभी भी अंधविश्वास में फंसकर धोखा नहीं खाऐगा। ऋषि जी ने दर्शनों के प्रमाण देकर भलीभाँति समझा दिया है।

सत्य-असत्य निर्णय परीक्षा पंच विद्या अर्थात् सत्य-असत्य की परीक्षा पाँच प्रकार से की जाती है। ऋषि की मान्यता है कि मनुष्य का आत्मा सत्याऽसत्य का जानने वाला है, अर्थात् आत्मा में सत्य और असत्य का विवेक करने की शक्ति है, परन्तु स्वार्थ, हठ, दुराग्रह और अवधादि दोषों के कारण सत्य को छोड़ असत्य की ओर झुक जाता है। यदि हम सत्य को जानना चाहते हैं और हमारे मस्तिष्क के द्वार खुले हैं तो हम असंगत तथा तर्कहीन विचारों को छोड़कर सत्य की ओर बढ़ते जाएंगे। तर्क, तर्क के लिए नहीं, वरन् सत्य को जानने के लिए है। वह स्वयं साध्य न होकर साधनमात्र है। **'तत्वज्ञानार्थमूहस्तर्कः'** के अनुसार तर्क स्वयं तत्वज्ञान न होकर तत्वज्ञान में सहयोगी है। जब कोई व्यक्ति किसी विषय को तात्विक रूप से जानना चाहता है तो उसके पक्ष-विपक्ष में प्रमाण व हेतु जुटा गम्भीरता से मनन व चिन्तन करके किसी निर्णय पर पहुँचता है। सत्य के अन्वेषक का इस विषय में मार्गदर्शन करने के लिए सत्याऽसत्य की परख के निमित्त यहाँ पाँच कसौटियाँ निश्चित की गई है। जो क्रमशः इस प्रकार है-

१. श्रुतिसम्मतं सत्यम् - जो ईश्वरीय ज्ञान वेद के अनुकूल है, वह सत्य है, किसी भी मनुष्य के लिए पूर्ण ज्ञानी होना सम्भव नहीं। मानव का ज्ञान यत्किंचित् अज्ञानमिश्रित रहता है। ईश्वरीय ज्ञान पूर्ण, नित्य एवं निर्भ्रान्त है। मानव के लिए जितना अपेक्षित है, वह वेद के रूप में उसे प्राप्त है। उसका निर्पेक्ष प्रामाण्य होने से वहाँ जो विहित है वह अनुष्ठेय तथा जो निषिद्ध है, वह त्याज्य है। यथार्थ धर्म का स्वरूप वहीं से जाना जाता है। इसलिए ब्रह्मा से जैमिनिपर्यन्त आर्यो का यह परम्परागत विश्वास रहा है कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा भगवान ने सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यमात्र के कल्याण के लिए वेदों का प्रकाश किया जिससे वे परमाणु से लेकर परमेश्वरपर्यन्त समस्त पदार्थों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर उनका समुचित उपयोग करते हुए अभ्युदय तथा निःश्रेयस की सिद्धि कर सकें। समस्त प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य में वेद प्रति आस्था और विश्वास का यही स्वर यत्र-तत्र-सर्वत्र गूंजता है। वेदानुकूल होना सत्याऽसत्य की पहली कसौटी है।

२. सृष्टिक्रमाविरूद्धम् - जो बात सृष्टिक्रम के अनुकूल अथवा सृष्टिक्रम के अविरूद्ध है, वह सत्य है। सृष्टि की रचना और उसका संचालन ईश्वरीय व्यवस्था तथा प्राकृतिक नियमों के अधीन है। ये सभी नियम त्रिकालाबाधित हैं। प्रत्येक पदार्थ के गुण-कर्म-स्वभाव सदा एक से रहते हैं। जो बदलता है वह स्वभाव नहीं कहलाता। अभाव से भाव की उत्पत्ति, कारण के बिना कार्य, बिना फल भोगे कर्म का क्षय, बन्ध्या के अथवा माता-पिता के संयोग के बिना सन्तानोत्पत्ति, अग्न्यादि द्रव्यों द्वारा अपने स्वाभाविक गुणों का परित्याग, जड़ से चैतन्य की उत्पत्ति, जीव की सर्वज्ञता, ईश्वर की अज्ञता तथा उसका जीवों की भाँति जन्म-मरण के बन्धन में पड़ना आदि सृष्टिक्रम के विरूद्ध होने से मिथ्या है। संसार में कोई भी घटना सृष्टिक्रम के विरूद्ध नहीं घट सकती, भले ही हम अल्पज्ञ होने से उसकी व्याख्या नहीं कर सकें। जिन बातों को हम समझ नहीं पाते उन्हें जादू या चमत्कार का नाम दे देते हैं। अनेक मिथ्या विश्वासों के मूल में उनका सृष्टिक्रम के विरूद्ध होना है। यह सत्याऽसत्य के परख की दूसरी कसौटी है।

३. आप्ताचारोपदेशानुकूलम् - जो आप्त पुरुषों के उपदेश चारों और उनके आचरण के अनुकूल है वह सत्य है। सत्याऽसत्य का निर्णय करने में सहायक यह तीसरी कसौटी है। **'आप्त'** शब्द **'आप्लृ व्याप्तौ'** धातु से निष्पन्न होता है। किसी भी पदार्थ के यथार्थ ज्ञान का नाम **''आप्ति''** है। किसी कार्य में सर्वात्मना समर्पित व्यक्ति को ही इसकी प्राप्ति होती है। अपने सीमित क्षेत्र में अपने विषय की पूरी जानकारी रखने वाला कोई भी व्यक्ति उस विषय में साक्षात्कृतधर्मा होने से **'आप्त'** कहाता है। जो वस्तु जैसी हो उसको निश्चयपूर्वक उसी रूप में जानना, उसका **''साक्षात्कार''** कहाता है। ज्ञानोप्लब्धि के अनन्तर जब कोई व्यक्ति उस विषय की जानकारी अन्य लोगों को देने लगता है, तब वह **उपदेष्टा** है। उस रूप में उसके लिए छलादि, दोषरहित, धर्मात्मा यथार्थवक्ता एवं सदाचारी होना आवश्यक है। उसकी कथनी और करनी एक जैसी होनी चाहिए। ऐसे आप्त अर्थात् सत्यज्ञानी, सत्यमानी, सत्यवादी तथा सत्यकारी, परोपकारी और पक्षपातरहित विद्वान् जिस बात को माने, सबका मन्तव्य होने से वह सत्य तथा इसके विपरीत असत्य है। मनुस्मृति में **''विद्वद्भिः सेवितः सद्भिर्नित्य-मन्देषरागिभिः** में इसी कसौटी का निर्देश किया गया है।

४. स्वस्यात्मनः प्रियम् - जो अपनी आत्मा को प्रिय लगे, वह सत्य और इसके विपरीत असत्य है। जब आत्मा मन को और मन इन्द्रियों को किसी काम में प्रवृत्त करता है तो जीव के इच्छा, ज्ञान आदि सब उसमें केन्द्रित हो जाते हैं। उसी क्षण आत्मा में बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में निर्भयता, निःशंकता और आनन्दोत्साह के भाव उठते हैं। यह जीवात्मा की ओर से नहीं, परमात्मा की ओर से होता है। जिस व्यक्ति का जीवन जितना शुद्ध व पवित्र होता है उसके भीतर अन्तरात्मा की यह पुकार उतनी ही मुखर होती है। इसी भाव को कालिदास ने **''सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः** अर्थात् सत्पुरुषों को सत्याऽसत्य अथवा शुभाशुभ का निश्चय करने में कठिनाई होने की स्थिति में अपने अन्तरात्मा की वृत्ति को प्रमाण मानना चाहिए'' कहकर व्यक्त किया है। महर्षि वेदव्यास ने भी धर्म का सार बताते हुए कहा-**''आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्''** अर्थात् अपने आत्मा के प्रतिकुल आचरण किसी के प्रति न करे। यह चौथी कसौटी है और पाँचवी कसौटी है। ●

thearyasamaj.org

जेहि के जेहि सत्य सनेहू। सो तेहि मिलेहि न कछु संदेहू।।

-आचार्य दार्शनेय लोकेश
सी-२७६, गामा-१, ग्रेटर नोएडा (उ.प्र.)
चलभाष-०९४१२३५४०३६

एक शुभकामना संदेश

''श्रद्धेय आचार्य श्री (आचार्य दार्शनेय लोकेश), जन्म दिवस की बहुत-बहुत शुभकमानाएँ! परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि आपका आशीर्वाद सौ वर्ष तक हम पर बना रहे। वैदिक पंचांग को प्रतिष्ठापित करने का आपका संकल्प पूर्ण हो। इस पुनीत एवं महंत कार्य को एक अभियान बनाने हेतु - ११००/- ग्यारह सौ रूपये के २१ इक्कीस सदस्य बनाने का संकल्प लेता हूँ और सभी मित्रों से अनुरोध करता हूँ कि इस भागीरथ यज्ञ में अपनी आहुति अवश्य अर्पित करें।''

-**श्री राज कुमार अग्रवाल**, मुल्तान नगर, दिल्ली-५६

जेहि के जेहि सत्य सनेहू। सो तेहि मिलेहि न कछु संदेहू।।

उपरोक्त संदेश, आर्य समाज के एक सशक्त और समर्पित व्यक्तित्व का है। वे पूरे समाज में अपनी एक पृथक ही अभिज्ञा रखते हैं। उनकी एक समाधानक सोच है और कार्य की दिशा में कार्य करने का क्रियाशील ढंग है। एक होता है - किसी को मंजिल तक पहुँचने की शुभ कामना देना, दूसरा होता है - शुभ कामना के साथ-साथ मंजिल तक पहुँचने का रास्ता भी बताना और तीसरा होता है - उसके साथ होकर उसको मंजिल तक पहुँचा देना। निजी व्यक्तित्व के ये तीनों ही वरेण्यम् आयाम हैं। फिर भी महत्व की दृष्टि से तीनों का ही स्तर अलग-अलग है। तीसरा जो तरीका है वह श्री राज कुमार आर्य के तरीके को दर्शाता है जो सर्वथा विशेष है। यही कारण है कि उक्त शुभ कामना का अंशत: ही सही पर कैसे और क्या लिख कर धन्यवाद करूँ, ये बात सोचने में मुझे समय लग गया।

समग्र आर्य समाज में मुझे जो बहुत ही कम किन्तु एकदम व्यवहारिक व्यक्ति मिले हैं उनमें से क्रम की दृष्टि से सातवें किन्तु सहभाग की दृष्टि से पाँचवें व्यक्ति हैं-**प्रिय राजकुमार जी आर्य**। उन्होंने एक उदाहरण रखते हुए देशवासियों को जो प्रेरणा दी है उसके लिए में गद्-गद् हूँ और भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे अधिकारी व्यक्ति को अवश्य ही **''चिरंजीवी भव!''** के कोटिश: आशीष मिलें। **ये व्यक्ति हैं सर्व श्री - स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी, अरुण कुमार आर्यवीर, स्वामी ऋतस्पति जी, आचार्य विश्वपाल जयंत जी ''आधुनिक भीम'', राज कुमार जी आर्य, पंडित राज कुमार जी शास्त्री, ओम मुनि वानप्रस्थी जी और दयालाल जी पटेल**। श्री राज कुमार जी आर्य अपने यहाँ मेरा एक वक्तव्य भी आयोजित करा चुके हैं और स्वयं भी इस वर्ष ५०००/-रु. का सहयोग किया है। उन्होंने मुझसे अपनी कई शंकाओं को समाप्त किया है। मुझे अब ये अहसास हो गया है कि वे मेरे उद्देश्य के साथ कितने तदाकार हैं।

व्यवहार से परित्यक्त ज्ञान निहित बोझ होता है। जो हम जानते हैं उसे व्यवहार में मानें भी। इस मूल मंत्र से ही मेरे द्वारा अर्पित **'वैदिक पंचांग'** की प्रतिष्ठा हो पायेगी और इसी से मैं उपरोक्त लोगों का नामोल्लेख किये बिना नहीं रह पाया हूँ।

मुझे विश्वास है कि आर्य समाज ही नहीं समग्र हिन्दू समाज के संस्कृति निष्ठ लोग उनसे अवश्य प्रेरणा लेंगे और पंचांग सुधार के संस्कृति प्रधान, अतीव आवश्यक, इस वैदिक कार्य में सहभाग करेंगे।

हमारे अधिसंख्यक सनातन भाइयों की गलती ये है कि वे खगोलिकी और फलित ज्योतिष को एक ही समझते हैं जबकि हमारे अधिसंख्यक आर्य समाजी भाइयों की गलती ये है कि वे ज्योतिष को जन्मपत्री की ही विद्या के रूप में जानते हैं। दोनों ही गलत हैं। दोनों को इस बारे में गम्भीर अध्ययन की आवश्यकता है। आर्य समाजी ज्योतिष के में कुछ न जानकर भी टिप्पणी करते हैं। जैसे कि अभी-अभी ज्योतिष विश्वविद्यालय से निकल कर आये हो। सनातन समाजी कुंडली का आरेख बनाने भर की सीख से अपने को ज्योतिषाचार्य समझने लगते हैं। सच्चाई ये है कि ९५% से भी अधिक ज्योतिषियों को तो पता ही नहीं है कि निरयन और सायन (वास्तविक परिभाषा के लिए कृपया श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक-संवत २०७१ पृष्ठ-५ पर प्रकाशित डॉ. रहिमाल प्रसाद तिवारी जी का सन्देश देखें) वस्तुत: क्या होता है? किसका व्यावहारिक अनुकरण होना चाहिए और क्यों? क्षितिज पर उदित होता लग्न निरयन नहीं हो सकता तो क्यों? हमारे सिद्धांत ग्रन्थों ने लग्न निकालने की जो विधि लिखी है उससे निकला लग्न सायन ही होता है, क्यों? ....और अगर सायन लग्न सिद्धांत सम्मत है तो फिर विदेशी या पाश्चात्य कैसे कह सकते हैं? इत्यादि।

हम सब वैदिक आस्था से अनुप्राणित हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद और तैत्तरीय संहिता आदि में ऋतुओं के सन्दर्भ से मासों के होने और उनके निर्धारण का या कहिये उनकी अभिज्ञा का निर्देश है। अस्तु उस ही अभिज्ञा से हमारे व्रत पर्वों की अभिज्ञा सुनिश्चित करने वाला पंचांग ही वैदिक पंचांग होगा और उसी की सामाजिक प्रतिष्ठा सभी का एक मात्र उद्देश्य होना चाहिए। देश के इस ही एक मात्र वैदिक पंचांग का नाम है-**श्री मोहन कृति आर्ष तिथि पत्रक**। मैं इस **'एक मात्र वैदिक पंचांग'** का ही गणितकर्ता और संपादक हूँ।

श्री राज कुमार आर्य के संदेश से मेरी आशा व प्रयासों को नई स्फूर्ति मिली है। पंचांग बराबर छपता रहे और उसके यथावत् उपयोगकर्ता भी हों इसके लिए आवश्यक है सभी पुजारी, पुरोहित या कर्मकाण्ड ही नहीं आम व्यक्ति कम से कम एक पंचांग का सहयोग करे। जब तक इस आदर्श की व्यापकता प्रसारित हो पाती है तब तक श्री आर्य की तरह १००-५०० लोग कम से कम १० पंचांगों के वितरण के लिए सहभाग करते हैं तो यह मेरा प्रयास, मेरा जीवन सफल हो जाएगा। आपके इस बृहत्तर और सटीक कार्य से समझिए कि लक्ष्य साधना सुनिश्चित हो जाएगा। पूर्ण विश्वास है कि -

जेहि के जेहि सत्य सनेहू। सो तेहि मिलेहि न कछु संदेहू।।

श्री राजकुमार अग्रवाल के समर्थन और सत्प्रयास में मुझे अपने विश्वास के फलीभूत होने की दिशा और दशा दिखती है। ●

thearyasamaj.org

सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास पर चिन्तन

- सुरेश चन्द दीक्षित
आनन्द एन्टरप्राइजेज, माणक भवन
न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)

परमात्मा की सबसे श्रेष्ठ कृति मनुष्य योनी है। यह कर्म योनी तथा अन्य भोग योनियाँ है। मनुष्य में अन्य प्राणियों के अलावा कार्य क्षमता, बुद्धिमत्ता, कौशलता एवं विवेक अधिक होता है। यह मनुष्य पर निर्भर करता है कि वह अपनी शक्तियों व बुद्धि का उपयोग सद् कार्य में करता है अथवा हेय कार्य में। तुलसीदास जी ने भी मनुष्य जन्म को श्रेष्ठ बताया है और कहा है कि **बड़े जतन से मानुष तन पावा।** मनुष्य की यह कमजोरी रही है कि वह अपने आपको भूतकाल की घटनाओं और उनके प्रभावों से जोड़े रखता है। वर्तमान में तथा भविष्य के लिए सृजन नहीं कर पाता। इतिहास साक्षी है कि पुरानी घटनाओं या उनके दुष्प्रभावों में जकड़े होने के कारण महाभारत एवं प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध हुये। ये पुरानी रंजिश का परिणाम था। अगर उस समय के मनुष्य में सृजनात्मक सोच होती तो बड़े नरसंहार को रोका जा सकता था। इन हेय कर्मों में फंसने से मनुष्य मुक्ति, उपासना, सेवा, भक्ति एवं ईश्वरीय शक्ति के बारे में सोच ही नहीं सका। स्वामी दयानन्द ने नवम समुल्लास में मुक्ति, कर्म और कर्म का फल का विषद विश्लेषण प्रस्तुत किया है। चूंकि प्रश्नोत्तर विधि से समुल्लास लिखा गया है। इसीलिए पाठक को कई बातें समझने में कठिनाई होती है। अतः इस लेख के माध्यम से पाठक समुल्लास की मूल भावना को समझ सकेगा।

स्वामी दयानन्द जी ने नवें समुल्लास में विद्या एवं अविद्या के बारे में स्पष्ट उल्लेख किया है उन्होंने कहा है कि शुद्ध कर्म एवं परमेश्वर की उपासना से दुःखों से निवृत्त हुआ जा सकता है। कोई भी प्राणी और मनुष्य क्षणमात्र भी कर्म, उपासना और ज्ञान से रहित नहीं होता। इसलिए मनुष्य को मुक्ति पाना है तो उसे धर्मयुक्त, सत्यभाषण युक्त कर्म करना पड़ेगा व अधर्म को त्यागना पड़ेगा। स्वामी जी लिखते हैं कि जीव पाप कर्मों के फलस्वरूप बंधन में फंसता है तथा दुःख से छूटने का प्रयास कर परमानंद परमेश्वर को प्राप्त कर मुक्ति को भोगता है, देह तो जड़ है। इसको शीत व उष्मा का ज्ञान नहीं होता। चेतन प्राणी ही शीत व उष्मा को भोग सकता है। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार से संकल्प, विकल्प, निश्चय, स्मरण और अभिमान का करने वाला दण्ड और मान्य का भागी होता है। अच्छे बुरे कर्मों का कर्ता जीव सुख-दुःख को भोगता है। कर्मों का साक्षी तो परमात्मा है। जो कर्म करने वाला जीव है वही कर्मों में लिप्त होता है। स्वामी जी ने आकाश के नीचे रंग की व्याख्या वैज्ञानिक संदर्भ में तर्क सम्मत प्रस्तुत की है। आकाश की नीलिमा के बारे में पौराणिकों के पास कोई उत्तर नहीं है। पृथ्वी, जल और अग्नि के त्रसरेणु के कारण आकाश में नीलापन है। आकाश में पानी की उपस्थिति भी नीले आकाश का कारण है तथा धुंधलापन पृथ्वी से उड़ी हल्की धूल की उपस्थिति दर्शाती है। इससे नीलिमा हल्की हो जाती है। जीव के बारे में ऋषि लिखते हैं कि जीव चेतन को कहते हैं। ब्रह्म को जीव मानना मिथ्या ज्ञान नहीं तो क्या है? जीव तो एक देशी व अल्पज्ञ है। ईश्वर तो सर्वज्ञ व सर्वव्यापी है।

स्वामी जी ने मुक्ति के बारे में विषद विवेचन किया है। बंधन से छूटना ही मुक्ति है। जीव जब तक शरीर धारण किए हुए हैं, उसे जीवन चलाने के लिए कई कर्म करने पड़ते हैं, उनसे वह बंध जाता है। अगर इनसे किसी प्रकार छुटकारा प्राप्त करले तो मुक्त अवस्था में आ सकता है। अविद्या, कुसंस्कार, बुरे व्यसन से रहित होकर जीव शरीर धारण करते हुए भी स्तुति, प्रार्थना, उपासना, योगाभ्यास व परोपकारी कार्य कर स्वयं को बंधनों से मुक्त करा सकता है। यह मुक्ति है। मुक्त अवस्था में भौतिक शरीर व इन्द्रियों के गोलक जीवात्मा के साथ नहीं रहते किन्तु अपने स्वाभाविक शुद्ध गुण में रहते हैं। बल, पराक्रम, आकर्षण, प्रेरणा, गति, इच्छा, ऐसे चौबीस प्रकार के सामर्थ्य मुक्त जीव हैं इससे जीव मुक्ति में भी आनन्द को भोगता है। मुक्ति में जीव दुःखों से छूटकर सर्वव्यापक अनंत परमेश्वर में आनंद की अनुभूति करता है। व्यास मुनि के अनुसार शुद्ध सामर्थ्य मुक्त जीव मुक्ति में बना रहता है। जब शुद्ध मन युक्त पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ जीव के साथ रहती हैं और बुद्धि का निश्चय स्थिर होता है। उसको परमगति अर्थात् मोक्ष कहते हैं। परमात्मा जरा, मृत्यु शोक, क्षुधा व पिपासा से रहित है जो परमात्मा को जानके मोक्ष के साधन और अपने को शुद्ध करना जानता है तो वह मुक्ति को प्राप्त होकर स्मरण करता है। यह स्थूल शरीर मराधर्मा है। इसलिए यह जीव सुख और दुःख से सदा ग्रस्त रहता है क्योंकि शरीर सहित जीव की सांसारिक प्रसन्नता को निवृत्ति होती है।

परन्तु मुक्त जीव को दुःख-सुख का स्पर्श भी नहीं होता और आनंद में रहता है। मुक्ति के बाद पुनः जीव माता-पिता के दर्शन कर जीवन को प्राप्त करता है। अनंत आनंद को भोगने का असीम सामर्थ्य, कर्म और साधन जीव में नहीं, इसलिए अनंत सुख नहीं भोग सकते। मुक्ति से जीव संसार में न लौटे तो संसार का उच्छेद अर्थात् जीव निश्शेष हो जाने चाहिए। परमेश्वर नये जीव भी उत्पन्न करता है। जिस कोष में आमदनी कम हो तथा व्यय अधिक हो तो कोष समाप्त हो जायेगा। इसलिए यह व्यवस्था ठीक है कि मुक्ति में जाना और वहाँ से पुनः आना एक प्रक्रिया है। संसार में जीव का अच्छे कर्मों के करने से मुक्ति तथा मुक्ति के बाद पुनः जन्म लेना निरन्तर प्रक्रिया है। मुक्ति पाने के लिए अधर्म को छोड़, धर्म अवश्य करें क्योंकि दुःख का पापाचरण और सुख का धर्माचरण मूल कारण है प्रत्येक जीव को पंच कोषों की जानकारी व उनकी साधना जानना आवश्यक है। अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आन्न्दमय कोषों की जानकारी ही जीव को कर्म-उपासना और ज्ञानादि व्यवहारों का ज्ञान करायेगी।

जीव के दो शरीर है। स्थूल जो दिखता है तथा सूक्ष्म शरीर जन्म, मरणादि में भी जीव के साथ रहता है। सूक्ष्म शरीर के भी दो भेद हैं। एक भौतिक रूप दूसरा अभौतिक जो मुक्ति में भी साथ रहता है। एक तुरीय शरीर होता है। जिसमें समाधि से परमात्मा के आनन्दमय रूप में जीव मग्न होता है। जीव कर्ता एवं भोक्ता है क्योंकि यह जीव ही जड़ पदार्थों के सुख-दुःख व पाप-पुण्य को भोगता है। मन इन्द्रियों और आत्मा के साथ संयुक्त होकर प्राणों को प्रेरणा करके अच्छे और बुरे कर्मों में लगता है, तब वह बहिमुर्खी हो जाता है। जो शिक्षा के अनुसार बरतता है वह मुक्ति जन्म सुखों को प्राप्त करता है अन्यथा बंध जन्य दुःख भोगता है। मनुष्य को षटकर्म का अभ्यास करना चाहिए। वैराग्य व मुमुक्षत्व को जानने वाला जीव मोक्ष का अधिकारी है। इसके लिए तमोगुणा का त्याग करना आवश्यक है।

जीव के अनेक जन्म होते हैं। जीव अल्पज्ञ होने के कारण पूर्व जन्मों की बातें याद नहीं रख पाता। ईश्वर प्रत्येक जीव के साथ न्याय करता है। प्रत्येक जीव को कर्मानुसार फल देकर न्याय करना ईश्वरीय कार्य है। जीव

thearyasamaj.org

सब प्राणियों में एक जैसा है परन्तु पाप व पुण्य के कारण मलिन व पवित्र है। कर्म के अनुसार जीव को उच्च व नीच योनियाँ मिलती हैं। जीव का शरीर से निकलना मृत्यु व संयोग होना जन्म है। मुक्ति अनेक जन्मों में होती है। मुक्ति में जीव परमेश्वर से अलग रहता है क्योंकि जीव ही मुक्ति का सुख भोगता है। ईश्वर मुक्ति से ऊपर है। मुक्ति में जीव सब लोक लोकान्तरों में भ्रमण करता है तथा मुक्ति में जीव निर्मल होने से पूर्ण ज्ञानी होकर उसको सब सन्नहित पदार्थों का भान यथावत होता है। विषय, तृष्णा में फंसकर जीव नर्क को भोगता है, ईश्वर की कृपा से जीव अनंत सुख भोगता है। तमोगुण, रजोगुण व सत्वगुणों का भान होना चाहिए और उसी रूप में कार्य करने चाहिये। इसी अनुरूप उसे कर्मफल मिलता है।

सांख्य सूत्र कहता है-जो आध्यात्मिक अर्थात् शरीर संबंधी पीड़ा, अधिभौतिक जो दूसरे प्राणियों से दु:खी होना, आधिदेविक जो अतिवृष्टि, अतिताप, अतिशीत, मन इन्द्रियों की चंचलता से होता है। इस विविध दु:ख को छुड़ा कर मुक्ति पाना ही पुरूषार्थ है।

भगवान् बुद्ध ने कहा है कि बंधनों से मुक्ति ही मोक्ष है और अपने बंधन स्वयं को खोलने पड़ते हैं। आत्मा को आनन्द मिलने के लिए जिस मार्ग पर चलना पड़ता है, उस रास्ते को श्रेय मार्ग कहते हैं। इस रास्ते पर चलकर सुकर्म करती हुई आत्मा मुक्ति तक पहुँच सकती है। जिससे शरीर को फायदा मिलता है उसे प्रेय मार्ग कहते हैं। प्रेय मार्ग मनुष्य को असुर बना देता है तथा उसकी इच्छाएँ असीम व तीव्र हो जाती हैं तथा वह नरकगामी होकर बंधनों में फंस जाता है। अत: स्वामी दयानन्द के बताये मार्ग पर चलकर प्रत्येक मनुष्य को सुकर्म करते हुये बंधनों से मुक्त होकर मोक्ष मार्ग का चिंतन करना चाहिये। ●

पृ. १६ का शेष

आस्था के दलदल में....

आज खुद क्यों बहुदेवतावाद के दलदल में फँस गई है?

३. कभी दुनियाँ में केवल आर्य धर्म था और आर्य धर्म से ही सभी उत्पन्न हुए फिर आज हम क्यों विश्व समुदाय के सामने अल्पसंख्यक हैं।

४. पुरी दुनियाँ में केवल सनातन वैदिक धर्म ही धर्म है बाकी सभी मत पंथ एवं सम्प्रदाय हैं क्योंकि उन मतों के कोई न कोई प्रवर्तक हैं पर क्या कोई बता सकता है कि आर्यधर्म के प्रणेता कौन हैं? फिर भी हमारी स्थिति ऐसी कैसे बन गई कि हम विनाश के कगार पर आ गए।

५. आज भारत दुनियाँ में गो माँस का निर्यातक एक प्रमुख देश बन गया है जिस वजह से अमृत समान दूध देने वाली गायों की हत्या प्रतिवर्ष एक करोड़ की हो गई है।

६. आज पूरे देश में हत्या लूट, बलात्कार और अपहरण का बाजार गर्म है और माँस और शराब का भयंकर सेवन हो रहा है, जिस वजह से पूरे समाज में अपराध का बोलबाला है।

७. आज इस देश में बेजान नारी मूर्तियों की तो पूजा हो रही है पर जीवन्त नारी को भोग की वस्तु के अलावा कुछ नहीं समझा जाता और रोमांस अपने चरम सीमा रेप टील डेथ तक पहुँच गया है।

अत: हम सभी धर्माचार्यों से मार्मिक अपील करते हैं कि मनुष्य को मनुष्य ही रहने दीजिए उसे भगवान मत बनाइये और समाज को ढ़ोंग आडम्बर, पाखण्ड और अंधविश्वास में मत ढ़केलिये। आप सब नैतिक शिक्षा और चरित्र निर्माण के कार्य को अपने हाथ में लेकर देश को सबल बनावें। सधन्यवाद ! ●

'वैदिक संसार' प्रकाशन की आवश्यक सूचनाएं एवं रचनाकार महानुभावों से विशेष अनुरोध

* **वैदिक संसार** में प्रकाशित प्रकाशन सामग्री के लिए '**वैदिक संसार**' का सहमत होना आवश्यक नहीं है, यह लेखकों के अपने दृष्टिकोण एवं प्राप्त जानकारी अनुसार है।

* '**वैदिक संसार**' से संबंधित किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा।

* '**वैदिक संसार**' आपका अपना समाचार पत्र है। विज्ञापन, सहयोग निधि (स्वैच्छिक दान) एवं प्रकाशन सामग्री से सहयोग करने की कृपा करें।

* वैवाहिक आवश्यकताएँ, प्रतिभा समाचार, लेख, कविताएँ, अन्य समाचार, सूचनाएँ एवं शोक समाचार नि:शुल्क प्रकाशित किए जाते हैं। कृपया प्रकाशन सामग्री स्पष्ट लिखी हुई, हस्ताक्षर युक्त, पूर्ण डाक पते एवं मोबाइल नं. सहित भेजें।

* प्रकाशन सामग्री की श्रेष्ठ गुणवत्ता एवं समाचार पत्र में स्थान उपलब्धता पर ही प्रकाशन संभव हो सकेगा।

* वेद विरुद्ध, सृष्टि नियम विरुद्ध, भूत-प्रेतादि, चमत्कारी, भविष्यफल आदि कपोल-कल्पित, कथा-कहानियों का प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

* वेद सम्मत, ज्ञानवर्धक, मार्गदर्शक, प्रेरणास्पद, सत्य आधारित रचनाओं/समाचारों का स्वागत है। रचनाएँ संक्षिप्त (तीन पृष्ठों से अधिक नहीं) तथा मौलिक हों। दो मास में एक रचना के अनुपात से अधिक रचनाएँ न भेजें।

* रचनाकार विद्वान्, महानुभाव प्रथम बार अपना चित्र भेजने का कष्ट अवश्य करें।

* '**वैदिक संसार**' में प्रकाशित किसी सामग्री पर किसी महानुभाव को कोई शंका, जिज्ञासा, शिकायत होने पर संबंधित लेखक से सीधे सम्पर्क करें तथा हमें भी अवगत करवाये एवं कोई सुझाव हो तो हमें पत्र द्वारा अवश्य अवगत करवाएँ, हमें आपके पत्रों, रचनाओं एवं आर्थिक सहयोग की प्रतीक्षा है।

* पत्रों के अतिरिक्त अनेक स्नेहीजनों के द्वारा दूरभाष पर मौखिक समर्थन, बधाई तथा हर्ष के संदेश सतत् प्राप्त होते हैं, समस्त स्नेहीजनों का '**वैदिक संसार**' परिवार हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

* '**वैदिक संसार**' स्वास्थ्य संबंधी एवं महिलाओं, बच्चों से संबंधित, स्वास्थ्य रक्षक-वर्धक, हितकारी, ज्ञानवर्धक, रुचिकर, उत्साहवर्धक, प्रेरणादायी सामग्री प्रकाशित करता है। अत: विद्वान् महानुभाव संबंधित सामग्री भेजने का कष्ट करें। प्रकाशन सामग्री के ऊपर निर्देशित करने का कष्ट करें कि सामग्री किस परिशिष्ट से संबंधित है।

* महापुरुषों की जन्मतिथि/पुण्यतिथि तथा वैदिक पर्वो से संबंधित आलेख कम से कम दो माह पूर्व भेजने का कष्ट करें।

* अस्वीकृत रचनाएं लौटाना संभव नहीं होगा। - **संपादक**

thearyasamaj.org

गोहत्या एवं गोमांस भक्षण निर्दयता का परिचायक

- स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
एम.ए., दर्शनाचार्य, वैदिक गुरुकुल
भवानीपुर, जिला-कच्छ, गुजरात
चलभाष- ०९९९८५९४८१०

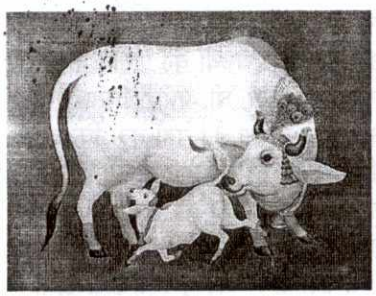

गाय की हत्या करना, करवाना या इसमें सहयोग करना, गोमांस का क्रय-विक्रय करना अथवा गोमांस पकाना, परोसना वा गोमांस खाना या गोमांस खाने-खिलाने की अनुमति देना यह सब घोर पाप है एवं अपवित्रता, क्रूरता तथा दानवता का परिचायक है। गोहत्या करना अथवा गोहत्या को बढ़ावा देने की क्रिया को सर्वथा बंद करना चाहिए। क्योंकि-

१. गोहत्या करना-करवाना भारतीय संस्कृति (वैदिक संस्कृति) के विरूद्ध है। इससे भारतीय भावनाओं का हनन होता है।

२. यह भयंकर हिंसा एवं निर्दयता का प्रतीक है।

३. जिसका हम दूध पीते हैं ऐसे दूध देने वाली गो जाति की हत्या करना अतिकृतघ्नता का परिचायक है।

४. गोहत्या करना-करवाना मातृहत्या करने-कराने के समान है।

५. गोहत्यारे एवं गोहत्या के समर्थक को ईश्वर की ओर से भयंकर दंड मिलता है।

६. गोहत्या करना ईश्वर की आज्ञा के विरूद्ध तथा घोर नास्तिकता का उदाहरण है।

७. गो को मारना-मरवाना मनुष्य के विनाश का कारण बन सकता है।

८. मांसाहार तामसिक भोजन है, इससे मन में पाप की वृत्ति जागृत होती है।

९. यजुर्वेद में स्पष्ट कहा है-''**पशून् पाहि**''अर्थात् पशुओं की रक्षा करो। गाय जैसी सीधी सरल प्राणी की हत्या करना वेद की आज्ञा का स्पष्ट उल्लंघन है।

१०. स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित '**गौ करूणानिधि**' के अनुसार एक गाय के शरीर से दूध-घी, बछड़ा-बछड़ी उत्पन्न होने से उसकी एक पीढ़ी से चार लाख पचहत्तर हजार छः सौ मनुष्यों को सुख मिलता है। ऐसे परोपकारी गौ की हत्या करना-करवाना अतिशय मूर्खता एवं अज्ञानता का प्रमाण है।

११. गोहत्या करना-करवाना वेद आदि सत्य शास्त्रों के विरूद्ध है। जैसे ऋग्वेद में कहा है-''**मा गामनागामदितिं वधिष्ट**'' अर्थात् अवध्य गाय की हिंसा (वध) मत करो।

१२. गो की हत्या का अर्थ है-मानवता की हत्या।

१३. गोहत्या को बढ़ावा देना पश्चिमी संस्कृति-सभ्यता का अन्धानुकरण करना है।

१४. गोहत्या एवं गोमांस भक्षण का समर्थन करना हमारे ऋषि मुनियों, सन्त-महात्माओं, महापुरुषों तथा भारत के गोप्रेमी-गोसेवी-गोभक्तों के साथ द्रोह करना है।

१५. भारत जैसे धार्मिक देश में गोमांस का वितरण, विक्रय एवं सेवन करना अधार्मिकता का खुला प्रचार है।

१६. स्वतंत्र भारत देश में भी गोहत्या एवं गोमांस सेवन को रोक नहीं पाना विदेशी गुलामी की विद्यमानता का प्रतीक है।

१७. महाभारत में कहा गया है-''**जो दूसरों के मांस से अपना मांस बढ़ाना चाहता है, वह जहाँ कही भी जन्म लेता है, चैन से नहीं रह पाता।**'' इस प्रकार गोमांस भक्षक पुनर्जन्म में बैचेन ही रहेगा।

१८. मनुष्य स्वभाव से मांसाहारी प्राणी नहीं है क्योंकि मांसाहारी जीवों के दांत व नाखुन नुकीले तथा घातक होते हैं किन्तु मनुष्यों के दांत व नाखुन ऐसे नहीं होते।

१९. मनुष्य का पाचन तन्त्र शाकाहार हेतु जितना अनुकूल है उतना मांसाहार के लिए अनुकूल नहीं है।

२०. आज समाज में बढ़ रहे व्यभिचार, भ्रष्टाचार एवं दुराचार का बहुत बड़ा कारण मांसाहार है।

२१. मांसाहार को आज के अनेक विश्वप्रसिद्ध डॉक्टरों ने रोग उत्पादक कहा है।

२२. गोमांस का सेवन मन, बुद्धि एवं आत्मा को कलुषित करने वाला है।

२३. गोहत्या हेतु सैकड़ों हजारों बूचड़खानों के खुलने के कारण पर्यावरण प्रदूषण में वृद्धि हो रही है।

२४. गोहत्या के निर्बाध गति से बढ़ने के कारण प्राकृतिक संतुलन बिगड़ रहा है।

२५. मांसाहारी व्यक्ति को मरने के बाद में मनुष्य जन्म नहीं मिलता है।

२६. गोहत्या करने-करवाने का हमारे महापुरुषों ने घोर विरोध किया है। जैसे-स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गोहत्या बंद करने के लिए करोड़ों लोगों के हस्ताक्षर कराकर तत्कालीन महारानी विक्टोरिया के पास भेजने का अभियान चलाया था।

२७. महात्मा गांधी जी भी गोहत्या के प्रबल विरोधी थे। जिसका प्रमाण उनके पुस्तक '**सत्य के प्रयोग**' से मिलता है।

२८. गुरु गोविन्दसिंह भी गोहत्या के कट्टर विरोधी थे। इसलिए वे कहते थे-''**गौ घात का दुःख जगत से हटाऊं।**''

२९. आचार्य चाणक्य का कथन है कि ''**जो मांस खाते हैं और शराब पीते हैं उन पुरुषरूपी पशुओं के बोझ से पृथ्वी दुःख पाती है।**''

पशुहत्या

हे परमेश्वर! तू क्यों इन पशुओं पर जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या इनके लिए तेरी न्यायसभा बन्द हो गई है? - गोकरूणानिधिः

thearyasamaj.org

३०. श्रीकृष्ण भगवान तो गोरक्षा को अपना परमधर्म मानते थे। इसलिए वे कहते थे-''**गावोममाग्रतस्सन्तु गावः पृष्ठत एव च। गावश्च सर्वगात्रेषु गवां वसाम्यहम्।।** अर्थात् गाय मेरे आगे हों, गाय मेरे पीछे हों, गाय मेरे सभी अंगों में हों और गायों के बीच में ही में बसता हूँ।

३१. ऐसे-ऐसे महापुरुष जिस गो की रक्षा एवं वृद्धि के लिए सदैव तत्पर हों उनके विरूद्ध चलकर गोहत्या को बढ़ावा देने वाली गोमांस भक्षण का प्रचलन बढ़ाना अथवा समर्थन करना घोर निन्दनीय है।

उपसंहार :- विश्व स्वास्थ्य संगठन (W.H.O.) के वर्ल्ड हैल्थ मेग्जीन, अनेक देशी-विदेशी डॉक्टर और नोबल पुरस्कार विजेता डॉ. ब्राउन आदि का यही निर्णय है कि मांसाहार से हृदय रोग, कैन्सर, टी.बी., अपेन्डिक्स, मोटापा, ब्लडप्रेशर आदि अनेक रोग होते हैं। अतः स्वस्थ सुन्दर शरीर व दीर्घायु की प्राप्ति के लिए शाकाहारी भोजन गाय का दूध, घी, फल, साग, सब्जी, अन्न का सेवन करें और मांसाहार का सर्वथा त्याग करें।

निष्कर्ष :- गाय को वेद में विश्व की माता कहा गया है। जैसे ''**गावो विश्वस्य मातरः**'' (अथर्ववेद) यह प्रमाण है। वास्तव में गाय में माता कहलाने के सभी गुण हैं जैसे वह अपने दूध से बच्चों का पालन करती है तथा अपने दूध से बनने वाले दही, छाछ, मक्खन, घी, पनीर, मिठाई, मावा आदि के द्वारा लोगों को हृष्ट, पुष्ट व स्वस्थ करती है। यहाँ तक कि अपने गोबर तथा गोमूत्र से भी अनेक रोगों को दूर करने में सहायक होती है। ऐसे महान् उपकारी प्राणी की हत्या करना और उसका मांस खाना भयंकर अपराध तथा पाप है। अतः विचारशील मनुष्यों को गोहत्या निषेध करने हेतु कड़े कानून बनाने चाहिए तथा गोमांस सेवन पर पूर्ण पाबन्दी लगानी चाहिए एवं गोरक्षा के लिए पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए। ●

शिष्टाचार

- नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'
६०२, जी.एच.-५३, सैक्टर-२०, पंचकूला (हरि.)
चलभाष-०९४६७६०८६८६

मनुष्य का आचरण एक दर्पण के समान है जिसमें उसका प्रतिबिम्ब साफ दिखाई देता है। उसके शिष्टाचार से पता चलता है कि वह कुलीन है अथवा अकुलीन। जिस प्रकार एक साफ गिलास में यदि गंदा पानी भर दिया जाये तो भी वह पीने के योग्य नहीं हो सकता ठीक उसी प्रकार सुंदर शरीर होने के बावजूद यदि मनुष्य का आचरण शिष्ट नहीं है तो वह सम्मान नहीं पा सकता। शिष्टाचार मनुष्य के आंतरिक सौंदर्य का पैमाना है। शास्त्र पढ़कर ज्ञान होने पर भी यदि उस पर आचरण ना किया जाये तो उस ज्ञान का कोई लाभ नहीं वस्तुतः वह पढ़ा लिखा मूर्ख है। विद्वान् वही है जो पढ़े और सुने हुए वेदादि शास्त्रों के अनुकूल शिष्ट आचरण करता है। वेदादि शास्त्रों को पढ़े, चिंतन-मनन करे लेकिन उसे एक बार पढ़कर चिंतन-मनन किये ज्ञान पर आचरण बार-बार लगातार करे। शिष्टाचार केवल किताबों में पढ़कर सपनों में नहीं सीखा जा सकता उसे तो मनुष्य अपने जीवन में हर बार लगातार करते हुए यथार्थ की कठोर शिलाओं पर घिस कर मूर्त रूप देता है।

प्रशंसनीय - जो मनुष्य विज्ञान को बढ़ाते, दुष्टों का निवारण करते और द्वेषादि दोषों से रहित हुए सनातन सत्य को धारण करते हैं, वे अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं। -ऋ. ५/४५/५

शिष्टाचार मनुष्य जीवन का एक अत्यंत आवश्यक अंग है इसलिए जीवन में प्रगति के लिए इसे धारण करना अत्यंत आवश्यक है। धर्मसूत्र में शिष्ट के लक्षण लिखते हुए कहा गया है

शिष्टाः खलु विगमत्सराः , निरंहकाराः कुम्भीधान्या
अलोलुपाः , दम्भ दर्प लोभ मोह क्रोध विवर्जिताः।

अर्थात् धर्मसूत्र के अनुसार शिष्ट उन्हें कहते हैं जिनमें ईर्ष्या, अभिमान, धनसंग्रह की इच्छा, लालच, दम्भ, दर्प, लोभ, मोह, क्रोध नहीं होता। मनुष्य के शिष्टाचार से उसके गुणों, शिक्षा, रूचि और सभ्यता का पता चलता है। महान् दार्शनिक देव दयानन्द स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में शिष्टाचार और शिष्ट को परिभाषित करते हुए लिखते हैं ''**शिष्टाचार जो धर्माचरण पूर्वक ब्रह्मचर्य से विद्या ग्रहण कर प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सत्य असत्य निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग करना है, यही शिष्टाचार है और जो इसको अपने जीवन में करता है वह शिष्ट कहलाता है।**'' शिष्टाचार मानव द्वारा जीवन में अपनाने योग्य आचरण है। एक सामान्य व्यवहार भी यदि हम जीवन में पालन करें तो शिष्ट बन सकते हैं। जिस प्रकार का व्यवहार हम अपने लिए दूसरों से अपेक्षित करते हैं वैसा शिष्ट व्यवहार और आचरण हम स्वयं दूसरों के साथ किया करें।

जिस प्रकार यज्ञ की अग्नि और धुआँ उँचाई की ओर जाता है और सभी को लाभान्वित करता है उसी प्रकार मनुष्य अपने जीवन में शिष्टाचार और त्याग की अग्नि प्रज्जवलित करके सद्कर्मों की आहुति देते हुए अपनी कीर्ति को बढ़ा सकता है। शिष्टाचार बुरे लक्षणों को नष्ट करता है और इससे कीर्ति और आयु बढ़ती है। केवल शास्त्रों की पुस्तकें पढ़ने से कुछ नहीं सीखा जा सकता जब तक कि उस पढ़े या सुने हुए वेदादि शास्त्रों के ज्ञान को शिष्टाचार के रूप में जीवन में आचरण में ना अपना लिया जाये। इसीलिए वेद का आदेश भी है

सं श्रुतेन गमेमहि । मा श्रुतेन विराधिषी ।।

शिष्टाचार के लिए कोई पहले से तैयार राजपथ नहीं है। माता पिता और आचार्य शिष्टाचार सिखाने के कारखाने हैं इससे विद्या पाकर परिस्थिति के अनुसार शिष्ट आचरण करने वाला बालक ही ज्ञानी बनता है। आर्य संस्कृति तो शिष्टाचारियों के उदाहरणों से भरी पड़ी है। मर्यादा पुरूषोतम श्री राम, योगेश्वर श्री कृष्ण वर्तमान काल में महर्षि देव दयानन्द सरीखे अनुकरणीय जीवन हमारे सामने हैं। हम यदि इनके जीवन वृतांत से सीख लेकर अपने जीवन में शिष्टाचार के उन गुणों को धारण करके जीवन यापन करते हैं तो निश्चित रूप से अपने शिष्टाचार के कारण जीवन में सदैव सफल होंगे। ●

thearyasamaj.org

देवताओं का साम्राज्य था सामंत शाही

-अमरजा टोपे शेकदार
मंत्री- आर्य संस्कृति संस्कार प्रतिष्ठान
शैलगी, सोलापुर, महाराष्ट्र
चलभाष-८०५५४४५८४७

सृष्टि निर्माण के अन्त में त्रिविष्टिप (वर्तमान तिब्बत) देश के मानस सरोवर के पंचक्रोषी में हिरण्यगर्भ नामक गर्भ में मानव जाति की रचना हुई। ईश्वर प्रद्दत्त मानवों में जो अति पवित्र ऋषि थे उन के हृदयाकाश में, अन्त:करण में, अन्तरात्मा में, समाधिस्थ बुद्धि में ईश्वर ने अपनी वाणी सरस्वती द्वारा ज्ञान-विज्ञान रूपी वेदों को प्रकाशित किया था। वह पवित्र स्थली हिमगंगा भागीरथी नदी के किनारे ब्रह्मावर्त में वेदों का प्रकाश हुआ।

तत्कालीन ऋषियों ने जान्हवी नदी के तटपर बैठकर ब्रह्मावर्त में समागम कर के विश्व के चक्रवर्ती साम्राज्य की संस्थापना कर के साम्राज्य के पहले चक्रवर्ती सम्राट के रूप में सूर्यवंशीय आदित्य पत्र राजर्षि स्वायंभूव मन जी को मनोनित किया था। उन्होंने ब्रह्मावर्त नगरी बसाकर वहाँ मानव जीवन शास्त्र मनुस्मृति नामक ग्रंथराज की रचना की।

विश्व का अंतिम चक्रवर्ती सम्राट चंद्रवंशीय गुरुकुल के धर्मराज युधिष्ठीर थे। उनकी राजधानी यमुना के तट पर इन्द्रप्रस्थ थी।

विश्व क चक्रवर्ती सम्राट महाराजा परिक्षीत के समय विश्व साम्राज्य का विधान होकर सप्त खण्डों में विभाजीत हुआ तब परिक्षीत महाराज रेवाखण्ड के सम्राट रहे जो वर्तमान एशिया है।

रेवाखंड का सम्राट महाराजा परिक्षीत की तीसवी पीढ़ी का पौत्र महाराजा क्षेमकर्ण का प्रधान विश्रवा ने सम्राट की हत्याकर साम्राज्य पर आधिकार करने पर उन का सामंत ''गवर्नर जनरल'' ने इन विवाद से पृथक होकर वे अपनी जागीरी ''राज्य'' यमुना के तट पर का त्याग कर वे पूर्वोतर भारत की ओर से दक्षिण भारत होकर जब पश्चिम सागर किनारे परशुराम भूमि पहुँचने पर उन्होंने उस भूप्रदेश पर अपना अधिकार कर के साम्राज्य की स्थापना की उस साम्राज्य को सामंत शाही नाम दिया गया उस संस्थापक सम्राट का नाम सुमंत नयन हरी प्रभुदेव सुशर्मा था उन्होंने कोद्वार नामक नगरी बसाई थी उस नगरी को सुदान भी कहा जाता था इस नगरी को राजधानी बनाई इस नगर को वर्तमान में कुडाल कहा जाता है वह महाराष्ट्र के कोकण के सिंधुदुर्ग जिले का केंद्र है।

सुशर्मा सामंत सम्राट संस्कृत भाषा के व्याकरणाचार्य तथा योगाचार्य आयुर्वेदाचार्य दर्शनाचार्य, वेदालंकार, विद्यावाचस्पति दर्शनाचार्य एवं ज्योतिषाचार्य उपाधि से युक्त रहते थे उन्हें देव कहा जाता था वे प्रतापी योद्धा होते थे तब तत्कालीन भरत खंड वर्तमान (दक्षिण एशिया के सप्तसिंधु प्रदेश के सप्त सम्राट के गुरु के स्थान में विराजमान रहते थे।

भरतवर्ष का पश्चिम सागर किनारे के भूप्रदेशों पर सामंतों का साम्राज्य रहा इस साम्राज्य के सम्राटों के ४८ पीढ़ियों ने २०५६ वर्ष तक राज्य किया था।

सामंत शाही का अंतिम सम्राट सुमन नयन हरी महादेव सुशर्मा जी का दारून पराभव भून्तरगढ़ युद्ध में अल्लाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक गफूर ने मराठों, राजपूतों तथा सिखों के सहायता कर के सामंतों का साम्राज्य सन १५९९ संवत् १६५६ शके १५२१ में समाप्त किया।

सम्राट एवं साम्राज्य को मिटने पर उनका परिवार भूमिगत होकर तत्कालीन वऱ्हाड प्रांत में ज्ञानगंगा नदी के किनारे पिम्पलग्राम राजा नामक गांव में भूमिगत होकर छूप गया।

सामंत युवराज ने नाम गोत्र बदलकर वह तत्कालीन खान्देश के पारोला गांव में पहुँचकर वहाँ कुलकर्णी ''पटवारी'' का काम करने लगे थे इन का पुत्र केशवदेव जी तत्कालीन सत्पणी जनपद के हिरडस ''वीरदश'' ग्राम में देशपाण्डे का हौदा पर कार्य करने लगे इन के पुत्र महाप्रतापी योद्धा माधव देव बाजी नाम से प्रख्यात थे प्रभदेव नाम लगाकर रहते थे वे तत्कालीन विजापर का सुल्तान आदिलशाहा का सरदार बाजोराव बान्दल के सचीव थे।

बाजी बान्दल के मृत्यु उपरान्त सन् १६४८ पश्चात् देशपाण्डे बाजीराव प्रभुदेव जावली के चंद्रराव मोरे के दास बने थे जब जावली पर छत्रपति शिवाजी महाराज का अधिकार होने पर प्रभुदेव पारोलकर स्वराज्य के सेवा में दाखिल हुए थे।

प्रभुदेव का पुत्र सदाशिव छत्रपति संभाजी महाराज की सेवा में थे इन का पत्र विनायक देव को छत्रपति राजाराम जी ने कुडाल की देशमुखी दी थी।

छत्रपति महाराणी तारकेश्वरी देवी के सेनापति धनाजीराव जाधव जी का मानसपुत्र तथा छत्रपति शाहु जी का पेशवा बल्लाल भट्ट के साढू तथा छत्रपति के दीवान देशमुख विनायक देव जी का पुत्र सरदार वासुदव हरी का पुत्र सुबेदार त्र्यंबकहरी का पुत्र दीवान पाण्डुरंगहरी की द्वितीय धर्मपत्नी रूकमिणी का पुत्र रामचंद्र तात्या टोपे जी ब्रह्मावर्त तथा ग्वालियर के सेनापति थे वे १८५७ की क्रांति सरकार आजाद हिन्द सरकार के सम्राट ब्रह्मावर्त नरेश धोण्डोपंत नाना साहब पेशवा के संरक्षण मंत्री तथा सेनाध्यक्ष थे इनके पुत्र सखाराम सामंत १८५९ से १८८० तक नाम गोत्र बदलकर कोकण में रहते थे इनके पुत्र विठ्ठलपंत सुबेदार १८८० से १९१३ तक धारवाड़ में रहते थे इनके पुत्र नारायणराव शेकदार (टोपे) १९१४ से १९६१ तक सोलापुर में रहते थे इनके पुत्र श्रीमंत भगवान राव के पुत्र त्रिभुवन उर्फ स्वामी उमाशंकर सांख्यायन सरस्वती तथा पुरूषोत्तम, दत्तात्रय, रामकृष्ण, नारायण, मुकुदराव।

सामंतों के वंशज

युवराज अनंत देव	/	महारानी लक्ष्मीदेवी
केशवदेव	/	युवराज्ञी देवकी
माधव देव	/	पद्मावती देवी ज्येष्ठ
सदाशिव	/	गौरी देवी
विनायक	/	सरस्वती
वासुदेव	/	लक्ष्मीदेवी
त्र्यंबकहरि	/	पर्वती देवी
पाण्डुरंग हरी	/	रूकमिणी (द्वितीय)
रामचंद्र तात्या टोपे	/	जानकी देवी
सखाराम	/	अहिल्या देवी
विठ्ठल	/	मथूरा देवी
नारायण	/	तुलसी देवी
भगवान	/	शंकुतला देवी
रामकृष्ण	/	वसुन्धरा
विष्णुपंत		

thearyasamaj.org

योगस्थली आश्रम दुचौली रोड़, महेन्द्रगढ़ (हरि.)-आंखों देखा एक परिचय

हरियाणा प्रान्त के जिला मुख्यालय महेन्द्रगढ़ के दुचौली रोड़ पर करीब ७ एकड़ भूमि पर ११ मई १९९५ को स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती द्वारा योगस्थली आश्रम की स्थापना की गई। योगस्थली आश्रम पर प्रतिमाह अन्तिम रविवार को वैदिक सत्संग आयोजित किया जाता है। शारीरिक व्याधियों का निदान कर निःशुल्क आयुर्वेदिक औषधियों के द्वारा उचित निदान किया जाता है। योगदर्शन के आधार पर योगसाधना का प्रशिक्षण दिया जाता है। आश्रम के प्रवेशद्वार पर विशालकाय वृक्षों के मध्य चहारदिवारी से घिरी यज्ञशाला है, जहाँ पर प्रतिदिन देवयज्ञ किया जाता है। यज्ञशाला के समिपस्थ सार्वजनिक आर्ष पुस्तकालय स्थित है, जिसकी स्थापना वर्ष २००६ में डॉ. फतेहसिंह जी डागर कमीश्नर हरियाणा तथा दानवीर चौधरी मित्रसेन जी के सहयोग से की गई। जहाँ पर प्रचुर मात्रा में वैदिक साहित्य जिज्ञासुजनों के स्वाध्याय हेतु उपलब्ध है।

यज्ञशाला के आगे की ओर मुख्य मार्ग पर प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग चिकित्सा केन्द्र की स्थापना ७ मई २००७ में जन सहयोग से की गई। जिसके मुख्य सहयोगी राधेश्याम शर्मा उद्योगपति दिल्ली थे। प्राकृतिक चिकित्सा से संबंधित समस्त अत्याधुनिक मशीने उपलब्ध हैं, जिनमें हाईड्रोकोलन मशीन (आतों की सफाई हेतु) एक्सरे साईज की मशीने, पेट पर मिट्टी की पट्टी लगाने वाली मशीन, ठंडे एवं गर्म पानी की वाष्प देने की मशीन (जोड़ों के दर्द एवं गठिया रोगों का वाष्प उपचार द्वारा निवारण), शिरोधारा मशीन (सरदर्द, पक्षाघात, मिरगी आदि मस्तिष्क विकार निवारण हेतु) तथा महिला रोग जैसे-मासिक धर्म की अनियमितता, स्टेरिया आदि समस्त रोगों का उपचार महिला विशेषज्ञ द्वारा किया जाता है। जल नेति, कुंदल क्रिया, भाप आदि प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा शारीरिक व्याधियों का उपचार योग्य विशेषज्ञों की उपस्थिति में किया जाता है।

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती-एक परिचय

आपका जन्म १४ जून १९२७ को श्री आनन्द राम जी आर्य, माता-श्रीमती रामबाई के यहाँ जांगिड बहुल ग्राम (करीब १०० परिवार) गागड़वास में हुआ। आपका जन्म नाम ब्रह्मदेव नामकरण संस्कार द्वारा रखा गया। आपके १ बड़े भाई ब्रह्मस्वरूप तथा पाँच बहने जिनके नाम ब्रह्मवती, ब्रह्मशान्ति, ब्रह्मदेवी, ब्रह्मवाचस्पति, ब्रह्मकला थीं।

शिक्षा-आपको बाल्यकाल से ही आर्ष विचारों तथा वैदिक सिद्धांतों की घुट्टी मिली थी। गुरुकुल घरोंडा से आपने शास्त्री की शिक्षा प्राप्त की उसके बाद आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेद वाचस्पति, आयुर्विद्यावाचस्पति, हिन्दी विशारद, आयुर्वेद युनिवर्सिटी झाँसी से शल्य चिकित्सा की उपाधि प्राप्त की। आपका पैतृक व्यवसाय कृषि, कारपेन्टरी तथा फारेस्ट कान्ट्रेक्टर का था। आपके पिता धर्मनिष्ठ होकर ईश्वर पर पूर्ण आश्रित थे इस कारण व्यवसाय पर कम ध्यान देकर स्वाध्याय सत्संग पर ज्यादा ध्यान देते थे।

आपने शिक्षा के पश्चात् अपने ग्राम तथा आस-पास के ग्रामों में चिकित्सा सेवा को अपना लिया सेवा भावी होने के कारण आपने ख्याति अर्जित की इस कारण ग्राम के सरपंच चुने गये तथा एक बार पंचायत समिति के सदस्य भी रहे। आपने अपने ग्राम में कन्या पाठशाला की स्थापना की जिसके भवन निर्माण का सम्पूर्ण व्यय आपने वहन किया।

अपनी निजी भूमि पर कुँआ खुदवाकर पूरे गाँव के पेयजल की व्यवस्था की, करीब ३५ वर्ष की आयु में आपने डॉ. संतोष देवी, सुपुत्री-श्री शिवदत्त राय निवासी-हिसार से विवाह किया। पश्चात् आपने महेन्द्रगढ़ में निजी आयुर्वेदिक चिकित्सालय को व्यवसाय के रूप में अपना लिया जहाँ पर आप आर्य समाज के प्रधान चुने गये। श्रम स्थापना के अतिरिक्त आर्य समाज महेन्द्रगढ़ के भवन निर्माण तथा नारनौल आर्य समाजों की यज्ञशालाओं के निर्माण में अहम् योगदान दिया। आपका जीवन आर्य जगत् को समर्पित होकर वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार में आपका अहम् योगदान रहा है जो अब भी जारी है।

वर्ष १९४० में प्रजा मण्डल के प्रधान रहे। ग्राम-ग्राम का भ्रमण कर प्रजा मण्डलों की स्थापना की। प्रजा मण्डल की गतिविधियों पर अंग्रेजों की पैनी निगाह रहती थी। इस संदर्भ में फरीदकोट सत्याग्रह में, पाटोदी, दूजाना, लोहारू सत्याग्रहों में सक्रिय भाग लिये तथा जेल यात्राएँ की फरीदकोट जेल में आप ज्ञानी जेलसिंह, रामनाथ सेठी, श्रीं वृषभान सिंह (पूर्व मुख्यमंत्री पंजाब) हीरासिंह चिनारिया, निहालसिंह तक्षत, ईश्वरसिंह आजाद, कामरेड रामकिशोर, श्री अयोध्या प्रसाद पूर्व विधायक नारनौल, विद्या देवकी नन्दनवी नागल चौधरी पूर्व उपमंत्री पेप्सू ख्यातनाम स्वतंत्रता सेनानी एवं राजनीतिज्ञों के साथ करीब ३ माह रहे।

आपके सेवा कार्यों को देखते हुए नगर पालिका प्रशासन ने शहर में प्रवेश करते ही राव तुलाराम चौक के बाद वाले चौक का नामकरण आपके नाम पर ब्रह्मदेव चौक किया है।

आपने संन्यास आश्रम की दीक्षा १९९७ में कर्मठ त्यागमूर्ति स्वामी ओमानन्द जी गुरूकुल झज्जर के संस्थापक से ग्रहण की।

साहित्य सृजन - आपने पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य के अतिरिक्त जीवात्मा-परमात्मा, गाय और इस्लाम (इस्लाम मत में गाय के महत्व पर), विश्वकर्मा दिग्दर्शन, वेद और दयानन्द, पंच महायज्ञ पर विशेष परामर्श तथा वैदिक संसार द्वारा बड़वानी में आयोजित अथर्ववेद पारायण यज्ञ पर प्रकाशित उद्बोधन आदि पुस्तकों के माध्यम से वैदिक मन्तव्यों को जन साधारण तक पहुँचाया। आयुर्वेद षट अनुभव प्रकाश पुस्तक पर लेखनकार्य जारी है। ८८ वर्ष की आयु में भी स्वामी जी महाराज एक युवा की तरह कार्य करते हैं, जड़ी-बूटियों से औषधियों को तैयार करना, आयोजनों की रूपरेखा बनाना, दूरभाष पर सूचित करना, व्यवस्थाएँ जुटाना तथा रोगियों को निःशुल्क औषधि वितरण आदि कार्यों में आपकी दिनचर्याएँ पूर्ण होती हैं।

इस अवस्था में भी आपकी आँखों को चश्में की आवश्यकता नहीं है, दाँत पुरी तरह कायम हैं, श्रवण शक्ति भी पूर्ण रूपेण कार्य कर रही है। आपने अपने जीवन में **'मनुर्भव जनया देव्यं जनम्'** वेद के सन्देश को सार्थक करते हुए, एक सुपुत्र डॉ. शिव शर्मा तथा एक सुपुत्री डॉ. पूर्णप्रभा (प्रो. गवर्नमेण्ट कन्या महाविद्यालय नारनौल धर्मपत्नी-डॉ. हेमन्त कुमार एम.डी. हृदय रोगविशेषज्ञ, संचालक हेमंत अस्पताल, महेन्द्रगढ़ रोड़, नारनौल) दैनिक अग्निहोत्री तथा आर्षग्रन्थों की स्वाध्यायशील दिव्य गुणों की संतानों को जन्म दिया है।

वैदिक संसार परिवार स्वामी जी के दीर्घायु होने की कामना करता है ताकि आपके द्वारा जलाई जा रही वेद ज्ञान ज्योति से अधिक से अधिक जन लाभान्वित होंवे। - सम्पादक

किसकी सुनें - किसको चुनें

-प्रो. चन्द्रगोपाल खले
अग्रवाल कॉलोनी, सेंधवा (म.प्र.)
चलभाष-९९२६८६७१५४

देश के लगभग प्रत्येक पत्र-पत्रिकाओं और टी.व्ही. पर ज्योतिष, वास्तु तथा आध्यात्मिक विषय से संबंधित विज्ञापन, लेख एवं भविष्यफल आदि सैकड़ों वर्षों से छपते आ रहे हैं और आगे भी आते रहेंगे क्योंकि धर्म की आड़ में फैली विसंगति से डरा मानव खासकर उसके बुरे दिनों में जो जैसा करने को कहे, वैसा करने को तैयार रहता है, चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित, अब तो नेता-अभिनेता सब पंक्ती में खड़े हैं।

पिछले दिनों एक पहुँचे हुए ज्योतिषी के कहने पर मेरे मित्र को अपने दाहिनें हाथ की चारों अंगुलियों में अन्य ज्योतिषियों के परामर्श पर पहनी हुई रंगबिरंगी अंगुठियाँ इसलिये उतारकर फेंकना पड़ी कि इन्हें पहनकर आग में घी का काम कर लिया है। तुरन्त इन्हें उतारें, नर्मदा या गंगा में बहाएँ और हमारे द्वारा सुझाए गए उपायों को अपनाकर जिन्दगी को स्वर्ग बनाएँ।

इनका लोकलुभावन अभिमत यह है कि जिस तरह हर बीमारी में एक ही दवा कारगर नहीं हो सकती, बल्कि गलत दवा मृत्युमुख की ओर भी अग्रसर कर सकती है, ठीक इसी तरह विभिन्न ग्रहों की स्थिति का अध्ययन करके यह निर्धारित किया जा सकता है कि मनुष्य की परेशानी का समाधान किस बिधि से किया जाना संभव है? इनके शास्त्र में यंत्र, मंत्र, तंत्र, दान, पूजा एवं अनुष्ठान जैसी अनेक विधियाँ हैं। चूँकि हर व्यक्ति की पत्रिका अनुसार उसे लाभ दिलाने वाली विधियाँ अलग होती हैं, अत: उसका आकलन कोई विद्वान् ज्योतिषी ही कर सकता है। विधि का गलत चयन जीवन बरबाद भी कर सकता है। **''इसलिए मिट्ठूछाप भविष्यवाणी के बजाए गाँधीछाप की शरण में आकर मरण को सार्थक कीजिए तथा हमारे कथन को अन्यथा मत लीजिए।''**

ऊर्जाशक्ति द्वारा सफलता प्राप्त करने का दम भरने वालों का कहना है कि प्राणी मात्र का कल्याण करने के लिए इस वसुंधरा पर समर्थ गुरु रामदास, गजानन महाराज, संत तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर एवं सत्य सांईबाबा जैसे अनेक संतों ने जन्म लिया है। इन कइयों में से किसी एक की शरण में जाने से ऊर्जाशक्ति प्राप्त की जा सकती है। आत्मा और परमात्मा के एकाकार होने पर इस शक्ति का जन्म होता है। इस शक्ति को प्राप्त कर लेने वाले व्यक्ति के चारों ओर एक अभेद सुरक्षा कवच बन जाता है। परिणाम स्वरूप बीमारियाँ दूर हो जाती हैं, शत्रु पक्ष परास्त हो जाता है, आत्मबल सशक्त हो जाता है एवं सुख, शांति तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होकर, अनेक मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। शर्त ये है कि, दिल साफ और मन में श्रद्धा होनी चाहिए, यानी **मन चंगा तो कठौती में गंगा** की कहावत साकार हो जाती है। सभी जानते हैं कि आज भी हमारे तथाकथित बौद्धिक समाज में बिना पत्रिका मिलान के शादी ब्याह नहीं होते। किन्तु यह जानकर पाठकों को आश्चर्य होगा कि, आजकल अनेक ज्योतिषी जन्म पत्रिकाओं को मूर्ख बनाने का जरिया मानते हुए डंके की चोट पर यह कहते हैं कि जन्म पत्रिका, कुंडली मिलान, पितृदोष तथा कालसर्प योग आदि कोरी बकवास है, जो अंधविश्वास को बढ़ावा देते हुए न जाने कितने परिवारों को वैवाहिक संबधों द्वारा पास आने से रोकते हैं और फिर जीवन भर अपने भाग्य को कोसते हैं।

राजा-महाराजाओं के समय में एक पहुँचे हुए ज्योतिषी की ख्याति सुनकर उनके सम्मान हेतु राजदरबार से बुलावा आया। जबकि परीक्षा हेतु स्वागतकक्ष में आते ही उनके अपमान की व्यवस्था कर दी गई थी। जब घटित इस हादसे की शिकायत राजा से की गई तो जवाब मिला कि आपको तो पल-पल का पता रहता है, फिर भी आप सम्मान की जगह अपमान का पता लगाने में कैसे चूक गए? खैर! क्या आप अपने ज्योतिष के माध्यम से जान सकते हैं कि आप कितने वर्षों तक जीवित रहेंगे? **''हाँ पिन्चानवे वर्ष तक की उम्र है मेरी।''** राजा ने तलवार निकाली और ज्योतिषी का सिर धड़ से अलग करते हुए कहा कि-**''जिसे खुद के भविष्य का पता नहीं, वह दूसरों का भविष्य क्या बता पायेगा?''**

एक आदमी ने तो हद कर दी। उसने शरारतन अपनी पाली हुई गाय द्वारा जने गए बछड़े का जन्म समय नोट करके जन्म पत्रिका बनवा ली तथा उस इलाके के प्रसिद्ध ज्योतिषी को वह पत्रिका दिखाई। बहुत देर तक माथा पच्ची और जोड़ गणित के बाद उन्होंने बताया कि-''बहुत ही तेजस्वी और विलक्षण बुद्धि का निकलने वाला यह बालक अपने माता-पिता और कुल का नाम रोशन करेगा। विदेश यात्रा के योग के साथ-साथ यह अनेक वाहनों का स्वामी भी रहेगा। इसकी पत्नि गुणवान होगी। दो संतान के योग हैं। लेकिन इसके शनि और मंगल कष्टकारक हैं। इसके लिये पूजा और दान करवाना होगा।

अब समझने वाली बाते ये हैं कि जिस पत्रिका से यह भी पता न चल सके कि यह किसी जानवर की है या इंसान की, औरत की है या किन्नर की उस पत्रिका से भला किसी का भविष्य कैसे पता लग सकता है? इसलिए कहने वाले सच कहते हैं कि लोगों को मूर्ख बनाने और लूटने का साधन है- जन्म पत्रिका। क्या आपने कभी कोई ऐसा व्यक्ति देखा है जो व्यापम घोटाले में मिली सफलता को छोड़कर गंडे, ताबीज तथा टोने-टोटके के

बुनियाद

दो वर्ष पूर्व हमारे एक मित्र के बेटे ने हायर सैकेण्डरी परीक्षा में बहुत अच्छे अंक एवं स्थान प्राप्त किया था। संयोग की बात कि जब रिजल्ट आया तो वे हरिद्वार के एक मंदिर में थे। किशोर के मन में यह बैठ गया कि उस का बढ़िया रिजल्ट इस कारण आया क्योंकि वे उस समय मंदिर में थे।

इस बार बी.एस.सी के परीक्षाफल की तारीख की घोषणा हुई तो वह अड़ गया कि वे हरिद्वार चलें जायें ताकि उस समय वे उसी मंदिर में हों। इकलौती औलाद की इस बेतुकी जिद के आगे पढ़े-लिखे समझदार माँ-बाप अंतत: हार गए और उन्हें जाना पड़ा।

मन में प्रश्न उठता है कि ऐसे अंधविश्वास की बुनियाद पर टिके इस युवक का भावी जीवन कैसा होगा?

-ओमप्रकाश बजाज

thearyasamaj.org

बल पर डॉक्टर, वकील, सी.ए., एक्टर, सफल व्यवसायी या इंजीनियर बना हो? शायद आप भूल गये होंगे कि जनवरी दो हजार छः में इन्दौर के रविन्द्र नाट्यगृह में तत्कालीन राज्यपाल श्री बलराम जाखड़ की अध्यक्षता में देश-विदेश के तकरीबन पाँच सौ से अधिक विद्वान् ज्योतिषियों की उपस्थिति में उस समय की महापौर उमाशशी शर्मा ने यह प्रश्न पूछकर, सबकी बोलती बन्द कर दी थी कि एक ही समय और एक ही स्थान पर जन्म लेने वाले बच्चों का भाग्य एक जैसा क्यों नहीं होता? एक सफल व्यवसायी बन जाता है तो दूसरा मजदूर। ऐसा क्यों?

चलते-चलते एक नजर देश-प्रदेश के प्रतिष्ठित समाचार पत्रों में प्रतिदिन छपने वाले क्लासीफाईड विज्ञापनों पर नजर डालें तो, आप और हम आश्चर्य चकित रह जायेंगें कि, महज कुछ ही घंटों में, वो भी सिर्फ मोबाईल के द्वारा घर बैठे समाधान करने वाले गारंटेड स्पेशलिस्ट ज्योतिषियों तथा तांत्रिकों के वशीकरण, लवमैरिज, सौतन एवं दुश्मन से छुटकारा, गृह कलेश, मुठकरणी, प्यार में धोखा, बिछड़ा प्यार, कर्जे से छुटकारा, गड़ा धन, ग्यारंटीड सट्टा नम्बर, जादू-टोना, संतान सुख, विदेश यात्रा, परीक्षा में सफलता, मुकदमे में जीत, प्रेत-बाधा, रोगों से मुक्ति, ऊँची नौकरी, नि:संतान, माता-पिता को मनाना, सास-बहू में अनबन आदि की परेशानी में जूझने वालों से ऐलानिया कहते हैं कि **''क्यों होते हो परेशान जब हाजिर हो समाधान''** बस अपनी जन्म तारीख बताईये और समस्याओं से हमेशा-हमेशा के लिये छुटकारा पाईए। ऐसे अनेकों प्रलोभन देकर सदियों से अपनी दुकाने चलाकर आँख होते हुए भी अन्धों को लूटने वालों को क्या कहा जाए जरूर बताना और हो सके तो मुझ जैसे असंख्य लोगों की इस जिज्ञासा का समाधान अवश्य करते जाना कि **''हम किसकी सुनें और किसको चुनें।''**

(दुनिया भर के ठग-मक्कारों और धोखों से पाना है मुक्ति और अपने आत्मबल में वृद्धि करना है तो महर्षि दयानन्द के संदेश 'वेदों की ओर लौटो' को सुनो तथा मानों और एक मात्र सत्य का प्रकाश करने वाला ''सत्यार्थ प्रकाश'' चुनों - सम्पादक)

पृ. ०७ का शेष **संपादकीय.....**

कालीपाद मुस्लिम नहीं बनता और आज न बंगला देश होता न घुसपैठियों की समस्या होती)

६. जिहादी विचारधारा अधिक शक्तिशाली है अथवा **'वसुधैव कुटुम्बकं'** की संस्कृति अधिक शक्तिशाली है इसका निर्णय करने का अमोघ शस्त्र जामा मस्जिद के मंच से प्रवचन करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने शुद्धि आंदोलन के रूप में हमें दिया है। हमें इस शस्त्र का उपयोग कर भटके हुए हमारे बंधुओं की सहानुभूति पूर्वक उनकी मानसिक और वैचारिक शुद्धि (ब्रेनवाश) कर घर वापसी करना होगी।

७. घर वापसी (शुद्धि आंदोलन) ही इन विचारधाराओं को समाप्त करने का एक मात्र उपाय है तथा यह तभी सफल है जब हम समस्त मानव मात्र के लिये वैदिक धर्म तथा वैदिक धर्म सिद्धांतों को सम्पूर्ण संसार में व्याप्त विचारधाराओं से श्रेष्ठ सिद्ध कर पाने में सफल होंगे और घर वापसी किये हुए बंधुओं को पूर्ण आत्मियता स्नेह और सम्मान देना होगा। उन्हें जातिवाद के तराजु में न तोलकर मानववाद और राष्ट्रवाद की सुदृढ़ता के एनक से देखना होगा।

८. सरकार पर पूर्ण दबाव बनाना होगा कि वह वैदिक सिद्धातों तथा इतिहास में दर्ज अत्याचार, शोषण, आक्रांताओं, राष्ट्र संस्कृति के लिये सर्वस्व होम करने वालों के विशुद्ध इतिहास को एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के समस्त समुल्लासों को क्रमश: प्रथम कक्षा से सबके लिये समान रूप से शिक्षानीति में समावेश करे तथा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्देशित लड़के-लड़कियों के पृथक-पृथक विद्यालय तदनुरूप पृथक-पृथक वैदिक संस्कृति से युक्त आचार्य व आचार्या की व्यवस्था करें।

९. सरकार पर पूर्ण दबाव बनाना होगा कि वह समान कानून एवं शिक्षा व्यवस्था मनुस्मृति अनुकूल लागू करें।

१०. सरकार को चाहिये कि कोई विचारधारा सीर चढ़कर बोलने का प्रयास करे तो उनसे पुछा जाये की उनके इस राष्ट्र तथा यहाँ के निवासियों पर क्या उपकार हैं तथा उन्हें सिखाया जाये कि जहाँ का खाते हो, जहाँ पर अधिकार जताते हो, वहाँ के प्रति उनके कुछ कर्तव्य भी बनते हैं।

इन उपायों को अगर हम नहीं कर पाये तो निश्चित मानिये हम हमारी भावी पीढ़ी को बली का बकरा बनते स्वयं देखेंगे और हाय तौबा मचाने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर पाऐंगे। आज तो हम दूसरों के घरों में लगी आग का तमाशा देख रहे हैं किन्तु एक दिन ऐसा भी आयेगा की किसी का भी घर नहीं बच पायेगा सब कुछ जलकर नष्ट हो जायेगा। जिस गति से पश्चिमी सभ्यता के भोगवाद का साम्राज्य और जिहादी विचारधाराएँ सिर उठा रही हैं उस अनुसार विनाश के दिन ज्यादा दूर नहीं! जागो...जागो...जागो... ●

पृ. ०८ का शेष **ओंकार नाद.....**

विस्तार विलंबित गायन मन-मस्तिष्क के उद्वेग को दूर कर अशांत मन-मस्तिष्क को शान्त करता है व आनन्द उत्साह से भर देता है, इससे आभा उभर आती है।

नाद योग-शास्त्रीय संगीत जैनेटिक डिसीज यानी परम्परागत बीमारी की रोक थाम करता है। जैसे-डिप्रेशन, डिस्पेसिया कोरोनरी, हाई प्राब्लम, हाई बी.पी., हाईपरटेंशन, स्पलीन, लीवर, डायजेशन डिस आर्डर होना, अन्य कई रोगों के उपद्रव कोलेस्ट्राल ट्राईग्लिसिराइड एल. डी. एल. को नियन्त्रित करता है तथा एच.डी.एल. को बढ़ाता है। अनिद्रा रोग दूर होता है। पाचन शक्ति बढ़ती है। मेटाबॉलिज्म सुव्यवस्थित होता है। दुर्गुण और दुर्व्यसनों से रोगों को निमन्त्रण मिलता है। शास्त्रीय संगीत के प्रत्येक स्वर से प्राण एक्यूप्रेशर होकर सेल्स सजीव होकर गतिशील बनते हैं। ब्रह्माण्ड में ओंकार की ध्वनि से हमारे शरीर में तरंगायित ध्वनि के स्पन्दन से फ्रीक्वंसी मिल जाती है यही शास्त्रीय संगीत के स्वर, योग, नाद तत्व का चमत्कार है। दसों प्राणों की शक्ति को हम ओंकार और हुंकार में केन्द्रित कर जब बड़ी चट्टान खिसकाना या उठाना हो तो हुम-हुम की आवाज करते हैं इसी आवाज में ओंकार की ध्वनी से दसों प्राणों की शक्ति एक हो जाती है। चन्द्रयान स्पेस में जाने से पहिले ऑटो स्वीच से चालू होते ही एक नाद ध्वनि पैदा होकर ऑन होता है, उस ध्वनि से ऊर्जा को लेते हुए जर्क लगता है, उस धक्के से अग्नि पैदा होती है तब वह यान स्पेस में चला जाता है। हवाई जहाज भी भारी होने के बावजूद नाद एवं ध्वनि के प्रभाव से भारी पन को शून्य में बदल देता है। ठीक इसी तरह नाद योगी साधक भी जमीन से १०-१२ इंच ऊपर उठ जाते हैं, जिसे लोग चमत्कार कहते हैं। यह सभी नाद योग प्राण तत्व साधना व ध्वनि का ही प्रभाव है। ●

thearyasamaj.org

प्रेम विवाह-हिन्दू विवाह संस्था को विघटित कर रहा है

-सूरजमल त्यागी
प्रधान-आर्य समाज मीमासा मण्डी, कोटा (राज.)
चलभाष-०९३५२६४४२६०

हिन्दू विवाह संस्था में सुधारवादियों द्वारा इसमें व्याप्त रूढ़ियों, आडम्बरों, अवैज्ञानिक, अशास्त्रीय, झंझटों से मुक्त किया है। विवाह को तो धार्मीक कर्त्तव्य की अनिवार्यता, पितृ ऋण, देव ऋण, ऋषि ऋण से मुक्ति, स्थाई वंशावली के लिये अनिवार्य माना गया है। विवाह में गोत्र, जाति, प्रवर, पिण्ड की सुरक्षा का विधिवत ध्यान रखा जाता है। संयुक्त परिवार में विवाहित को आर्थिक समस्या नहीं थी। अविवाहित रहने पर धर्महीनता ही समझा जाता था।

आज विवाह संस्था का स्वरूप बदल रहा है। नव युवक जब तक अपने पैरों पर खड़ा नहीं होता, तब तक वह अपने लिये विवाह का शब्द नहीं सुनता। वर्तमान शिक्षा-दिक्षा में, नव युवकों, युवतियों को **मातृदेवो भवः, पितृ देवो भवः, आचार्य देवो भवः** जैसी शिक्षा का पूर्ण अभाव रहता है। **'सत्यं वद, धर्मं चर'** आत्मावलोकन जैसे सूत्र शिक्षा से गायब हो गये। **जीवन और शिक्षा का उद्देश्य जो कुछ भी बनना है-धनोपार्जन के लिये एक महँगा मजदूर बनना है।** आज का युवक पितृ ऋण, देव ऋण, आचार्य ऋण की धारणा स्वीकार नहीं करता। विवाह की अनिवार्यता, विवाह बन्धन को भी नकार रहा है। बस-अपने पैरों पर खड़े होने पर, विवाह के आधार-भूत तत्वों को भुलाकर, प्रेम विवाह की ओर दौड़ता है। विवाह, स्मृतिकारों के कानून, विधि-विधान को अस्वीकार कर देता है। उसे स्वच्छन्द-प्रेम की आजादी अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। तब जाति-गोत्र-धर्म-प्रवर भी प्रेम विवाह के सन्मुख तिनके की तरह हवा में उड़ जाते हैं। माता-पिता असहाय, मजबूर, दिल मसौस कर ठगे से रह जाते हैं।

> **अच्छा क्या है? यह खूब सोचकर अच्छी तरह समझ लेने के बाद फिर निरन्तर कार्य करते रहना चाहिये, क्योंकि सोचते समय कार्य किया नहीं जा सकता और कार्य करते समय सोचा नहीं जा सकता।** - चिन्तन

प्रेम विवाह का आधार भूत तत्व, एक भावनात्मक उन्माद है। प्रथम दृष्टि में ही अनजाने को देखकर प्रेम हो जाता है। एक नव युवक, षोड्स वर्षीया युवती को देखता है। उसकी आँख मिलते ही अपने को खो बैठता है। असीमित उन्माद में तड़पता-छटपटाता है, अपने स्व को भूल जाता है। उसके बिना मैं जिन्दा नहीं रह सकता। उसे दैवीय सौन्दर्य की मूर्ति समझता है। समझने और होने में बहुत अन्तर होता है। हनीमून के बाद ही, प्रेम के उन्माद का नशा ढलने लगता है। अभी तक दोनों एक दूसरे के गुण-कर्म स्वभाव से अनभिज्ञ थे। जिस सौन्दर्य के अथाह सागर में तैर रहे थे। ये दैवीय आँखें वस्तुतः अर्थात् वे दैवीय न होकर, मानवीय आँखें थी।

कंचन काया में तो हाड़-मांस-मल-मूत्र भी भरा है। तब स्वभाव की भिन्नता, सद् भाव, सद् व्यवहार की हीनता से प्रेम उन्माद के घने-गहरे बादल, वर्षा से पूर्व ही छिन्न-भिन्न होने लगते हैं। प्रेमपाठ की मुहारनी का पढ़ना रुक जाता है। प्रेम उन्माद का नशा जो पानी के पम्प द्वारा सातवीं मंजिल के शिखर तक चढ़ा था। वह भावनात्मक आलम्बन के खिसकने पर पाईप के द्वारा/गंदी नाली और गटर तक आ गिरता है। जब एक-दूसरे के बिना रहना कठिन था। अब एक साथ रहना असम्भव लगता है। समाधान होता है, भागें या भगायें, आत्म हत्या, जेल की कोठरी, तलाक पर पूर्ण विश्राम लग जाता है। वास्तव में प्रेम विवाह, तो विवाह के अर्थ को खो चूका है।

दाम्पत्य विवाह और प्रेम विवाह में मौलिक अन्तर है। दाम्पत्य विवाह में ऋषियों ने, श्रेष्ठ गौरवमयी सामाजिक रचना का नैसर्गिक विधान किया है। दाम्पत्य विवाह को संज्ञान से आत्मिक प्रेम का केन्द्र मान कर अपने से निकल कर, दूसरे में झलकने लगता है, स्वार्थ का अंश पर्दे के पीछे-हटने लगता है। इस में प्रेम का उन्माद नहीं, अपितु विशेष दायित्व के वहन करने का गाम्भीर्य का संकल्प भरा होता है। **'जो मेरा हृदय है, वह अब तेरा है, तेरा हृदय मेरा है'**। एक-दूसरे में सखाभाव खोजते ही स्वाभाविक प्रेम पति-पत्नी में हिलौरे मारने लगता है। दो को बाँधने के लिए गठबंधन करते हैं। इस गठबंधन की गाँठ में हल्दी की गाँठ, अक्षत, सरसों रख कर गाँठ बाँधी जाती है। जो सौभाग्य की प्राप्ति, अखण्डित, स्नेह का इतना गहरा संकल्प होता है। शीलारोहण, सप्तपदी, यज्ञाग्नि की प्रदक्षिणा तो जीवन संहिता की वसियत के अभिलेख पर मोहर (सील) लगाने जैसी भीष्म प्रतिज्ञा होती है।

पति-पत्नी हाड़-माँस की देह ही नहीं होते। प्रेम के लिए किसी पाठशाला में नहीं जाना पड़ता। सन्तान प्राप्त होते ही, एक प्राकृतिक-ईश्वरीय पाठशाला से शिक्षा प्राप्त करने लगते हैं।

ऐसी शिक्षा-बच्चा कहीं, जाग न जाय! बच्चे को कहीं सर्दी न लग जाय!! बीमार होने पर दोनों रात-रात भर जागते हैं!!! दुनिया भर के बच्चों में अपने बच्चे की झलक देखने लगते हैं। वैदिक विवाह मनुष्य को भिन्नताओं से खींचकर एकता के संगठन की ओर ले जाता है। वेद का निर्देश है कि **'पतियो यज्ञ संयोगे' 'पत्नी यज्ञ संयात'** (यजुर्वेद) यज्ञ से पति-पत्नी बनते हैं। यज्ञ से ही पति-पत्नी के प्रेम का उद्वेग शुरु होता है। पत्नी उसी को कहते हैं जो पति से संयुक्त होकर ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ एवं बलिवैश्व देवयज्ञ को सम्पादित करती है।

अतः प्रेम विवाह, भारतीय संस्कृति की अवधारणा नहीं है। पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा का दुष्प्रभाव, नव युवक-युवतियों को, भोग विलास के गर्त में धकेल रहा है। इससे भारतीय विवाह संस्था विघटित हो रही है। जिसके कितने दुष्परिणाम सर्वत्र प्रत्यक्ष रूप से देख रहे हैं। इस भयंकर प्रकोप से सुरक्षा के उपाय करने ही होंगे। पेट भरो! आराम करो!! ऐश करो!!! यह प्रेम विवाह की सोच है। हमें काम, क्रोध, लोभ, रागद्वेष के प्रबल शत्रुओं को पराजित करने वाला पुत्र प्राप्त हो। यह वैदिक विवाह का दर्शन, विवाह बंधन दोनों में है। एक बन्धन नीचे गिरने के लिये, दूसरा बन्धन ऊपर चढ़ने के लिये होता है। दोनों के परिणाम पृथक-पृथक है। ●

एक पत्र पूर्ण विकसित द्वीप सिंगापुर से

-आचार्य आनन्द पुरूषार्थी
अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक मिशनरी, होशंगाबाद (म.प्र)
चलभाष-९४२५४९५२४६

समा. आर्यप्रवर, सादर नमस्ते,

ईश्वर कृपयात्र कुशलं तत्रास्तु। ३ मई २०१४ को प्रात: ११ बजे एशिया के सर्वाधिक वैभवशाली देश सिंगापुर के चांगी एयरपोर्ट पर हम एयरएशिया के वायुयान से पहुँचे। ये हमारी आठवी विदेश यात्रा है। ९ मई को दोपहर ३ बजे सिंगापुर में भारत की महामहीम राजदूत (Indian High Comissioner) श्रीमती विजय ठाकुर सिंह जी से एक शिष्ट मंडल के साथ जाकर मुलाकात की। आप हिमाचल प्रदेश की हैं। इसके पूर्व ८ मई को लोकसभा के सांसद, सत्तारूढ़ पीपुल्स एक्सन पार्टी के वरिष्ठ नेता, अनेक कंपनियों के स्वामी व सफल उद्योगपति, लोकसभा के पूर्व उपसंभापति सरदार श्री इंद्रजीत सिंह से उनके कार्यालय में जाकर हम भेंट कर चुके थे। दोनों ही महानुभावों को हमने वैदिक साहित्य भेंट किया और नवंबर में आर्य महासम्मेलन सिंगापुर के अन्तर्राष्ट्रीय उत्सव में आने का आग्रह किया। दोनों ने ही इसकी स्वीकृति प्रदान की। अनेक संस्कृतियों व सभ्यताओं को मानने वाले निवासियों की स्थली सिंगापुर ६३ छोटे-छोटे द्वीपों के समूह का नाम है। ये कोलकाता से ३००० व दिल्ली से ४५०० किलोमीटर की दूरी पर है। इसका क्षेत्रफल मात्र ७१६ वर्ग किलोमीटर होने से लगभग बैंगलोर के बराबर है। प्राचीन काल में सिटो का द्वीप होने से यह सिंहपुर से सिंगापुर हो गया। सुमात्रा के राजा श्री विजया जी का इस पर अधिकार था। ग्यारहवी शताब्दी में दक्षिणभारतीय सम्राट श्री राजेन्द्र चोल जी ने इसे जीत लिया। १६१३ में पुर्तगालों ने आग लगाकर इसे तहस नहस कर दिया था परन्तु ब्रिटेन से करारी हार के बाद पुन: ब्रिटिश कालोनी बन गया। ३१ अगस्त १९६३ में इंग्लैंड ने इसे आजाद तो किया पर इसे मलेशिया से संयुक्त होना पड़ा। नेताओं के सैद्धान्तिक मतभेदों के चलते ९ अगस्त १९६५ को यह पृथक स्वतन्त्र राष्ट्र बना और तब से इसने अद्भुत उन्नति की है। यहाँ की जनसंख्या ५४ लाख है जिनमें बौद्ध ३४%, ईसाई १८%, मुस्लिम १४%, हिन्दु ५%, अन्य ३% और १६% ऐसे भी लोग हैं जो किसी भी धर्म को नहीं मानते हैं। मुख्य रूप से यहाँ ४ भाषायें बोली व लिखी जाती हैं चायनीज, अंग्रेजी, मलय व तामील। कुछ लोग हिन्दी भी बोलते हैं। यहाँ की नागरिकता प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में भारत सहित अनेक देशों के गुलाम मजदूर अंग्रेजों ने लाये थे। उनकी चौथी पीढ़ी चल रही है। जो अत्यन्त समृद्ध सभ्य व शिक्षित है। यहाँ की मुद्रा को सिंगापुर डालर $ कहते हैं जो भारत के ५% के बराबर है। समस्त छोटे नोट प्लास्टिक के होने से उनके कटने फटने गलने की समस्या नहीं है। पूरे देश में २१ जिले हैं जिससे ८० सांसद निर्वाचित होते हैं। अल्प संख्यकों के कल्याण व स्वपार्टी का शासन दीर्घकाल तक बना रहे इससे पूरे देश को कुछ निश्चित भागों में बाँट कर एक साथ ३-४-५ व कहीं २ व १ भी सांसद खड़े किये जाते हैं और एक पार्टी को मिले गये संबंधित क्षेत्र के कुल वोटों के आधार पर सभी को चुना गया माना जाता है चाहे उनमें कोई हारा भी क्यों न हो। पूरे देश में हर राजमार्ग पर गगनचूंबी इमारतों व हरियाली को सर्वत्र देख सकते हैं। एक भी गाँव नहीं है। ८०% निवासी मांसाहारी हैं। ११ लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते हैं। दंगा, चोरी, मिलावट, बलात्कार, रिश्वत लेना-देना, यातायात उल्लंघन, ड्रग्स आदि किसी भी अपराध में कोड़ों से मारना, अत्यधिक दण्ड देश निकाला से लेकर अनिवार्य मृत्यु का प्रावधान होने से किसी को अपराध करने की हिम्मत नहीं पड़ती है। पूरे देश में सभी जगह कैमरे लगे हुये हैं। संसार के सबसे कम भ्रष्ट देशों में इसे एक माना गया है। देश में आठ हवाई अड्डे हैं। दुनियाँ के सबसे ज्यादा व्यस्त बंदरगाहों में एक सिंगापुर का है क्योंकि समुद्री व्यापार बहुत बड़े पैमाने पर है। गर्मी व बरसात होती है ठंड नहीं पड़ती है। नौ हजार कंपनियों में लाखों युवक-युवतियाँ भारत सहित कई देशों से आकर सेवारत है। पाश्चात्य कंपनियों के समय आधार पर रात ११, १२ व १ बजे तक काम करना पड़ता है। जिससे जीवन यंत्रवत् हो गया है। अनेक लोगों के घर में काम के लिये जिन सेविकाओं को रखा है उन्हें २५०००/- वेतन दिया जाता है। खुलापन बहुतायत में है। ६०-७० प्रतिशत युवक-युवतियाँ, देवियाँ हाफपेंट पहनते हैं। हर युवक को सैनिक शिक्षा अनिवार्य है। मंहगाई बहुत ज्यादा है। ७० चर्च, ६३ मस्जिदें, ६ गुरुद्वारे, १ जैन मन्दिर, २३ हिन्दू मंदिर व एक आर्य समाज है। १९२७ में आर्य समाज की स्थापना हुई। बाद में डी.ए.वी. वैदिक हिन्दी स्कूल की प्रमूखता बन आई। डी.ए.वी. की तरफ से १२० शिक्षिकायें पूरे देश में हिन्दी पढ़ाती हैं। भारत में जिस हिन्दी की नई पीढ़ी उपेक्षा करती है यहाँ माता-पिता को हजारों रूपये उसके ही अध्ययन हेतु व्यय करने पड़ते हैं। अपने प्रवास में लक्ष्मी-नारायण मंदिर, आर्यसमाज व इस्कान विचारधारा के बांगलादेशी हिन्दुओं में हमें प्रवचन का अवसर प्राप्त हुआ। दो श्रद्धालु परिवारों में उपदेश के अतिरिक्त, कुछ हिन्दी न जानने वाले तमिल महानुभावों से भी विस्तार से हमने सिद्धांत विषयक चर्चा की। व्याख्यानों में वेदों के अवतरण, विषयवस्तु, आर्यों का पराभव, उत्कर्ष, १६ संस्कार, ईश्वर का स्वरूप, राष्ट्र परिवार व पंच महायज्ञों पर प्रकाश डाला। दर्शनों के सूत्र व वेदों के मंत्रों को प्रमाणरूप में रखा। ईश्वरकृपा से सकारात्मक प्रभाव रहा। आर्य समाज के अधिकारियों को वेद प्रचारार्थ कुछ सुझाव दिये। जन सामान्य में साहित्य वितरित किया। दर्शनीय स्थलों में १६५ मीटर ऊँचा झूला, बर्ड पार्क में ५००० पक्षी, पक्षियों द्वारा आज्ञा पालन, जन्तुशाला में सैकड़ों जानवर, Sentosa island का आश्चर्य जनक संसार, सिंगापुर का इतिहास, चीनी देवताओं के मंदिर, Universal Studio, River safari, Water world, Hollywood dream parade आदि प्रमुख हैं।

सफल हो या असफल, है यह ईश्वर के अधीन,
इस बात से क्यों डरते हो।
प्रभु तो देखते हैं तुम काम को कितना, कब, कहाँ, कैसे
और किस नीयत से करते हो।। ●

thearyasamaj.org

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्य वन, रोजड़, गुजरात

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्य वन, रोजड़ में कार्तिक कृ. ९ से मार्गशीर्ष शु. १ वि. सं. २०७१ तदनुसार १६ नवम्बर से २३ नवम्बर २०१४ तक ८ दिन क योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, इस में आपका स्वागत है तथा आपके कल्याण की कामना करते हैं। शिविरार्थी १६ नवम्बर को सायंकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुँच जावें।

शिविर समापन २३ नवम्बर को मध्यान्ह लगभग १ बजे होगा।

शिविर में क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ योग दर्शन के सूत्रों का अध्यापन, यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर समर्पण, स्वस्वामी-सम्बन्ध तथा ममत्व को हटाने जैसे अनेको सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जाएगा। शिविर की दिनचर्या प्रात: ४.०० से रात्रि ९.३० बजे तक रहेगी। शिविर में भाग लेने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक नियम -

(१) विशेष कक्षाओं को छोड़ करके शिविरार्थियों को दिनभर मौन का पालन करना होगा।

(२) पंजीकरण की स्वीकृति होने पर आपको भेजा जाने वाला शिविर प्रवेश पत्रक साथ में लायें। अन्यथा शिविर में स्थान आरक्षित नहीं माना जाएगा।

(३) रोगी, अशक्त, वृद्ध, धूम्रपान आदि व्यसनों वाले व्यक्ति कृपया शिविर में भाग लेने के लिए आवेदन न करें।

(४) स्थानाभाव, अयोग्यता अथवा अन्य किसी कारण से प्रवेश न देने की स्थिति में शिविर शुल्क १००० रूपये लौटा दिया जायेगा। स्वीकृति प्राप्त शिविरार्थियों के न आने पर शुल्क लौटाया नहीं जायेगा।

(५) बिना स्वीकृति के शिविर में आ जाने वालों को स्थान होने पर ही स्वीकृति दी जायेगी, साथ ही उन्हें शिविर शुल्क १००० रू. के स्थान पर १५०० रू. देना होगा।

(६) कम से कम १० (दसवीं) कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त हो तथा पूर्ण अनुशासन में चलने वाला हो।

(७) १५ से ५० वर्ष तक आयु वाले पठित और नए व्यक्तियों को शिविर में भाग लेने के लिए प्राथमिकता दी जाएगी।

(८) दूर से आने वाले शिविरार्थी अपना वापसी का रेलवे आरक्षण पूर्व ही करा लेवें।

(९) शिविरार्थियों को शिविर काल में चलभाष (मोबाइल) करने की अनुमति नहीं मिलेगी, चलभाष कार्यालय में जमा करवाना पड़ेगा और किसी को बहुत आवश्यक होगा तो कार्यालय से फेन कर सकेंगे।

(१०) आवास व्यवस्था की कमी आदि अनेक कारणों से शिविरार्थी सीमित संख्या में लिए जाएँगे तथा प्रथम आवेदक को प्राथमिकता दी जाएगी। पुरूष और महिलाओं की पृथक् एवं सामूहिक आवास व्यवस्था होगी।

(११) जो शिविरार्थी आर्थिक कठिनाई के कारण शुल्क देने में असमर्थ होंगे उनके आवेदन करने पर योग्य जानकर शुल्क में आंशिक या पूर्ण छूट दी जा सकती है।

(१२) शिविरार्थी १६ नवम्बर को प्रात: ९ बजे से सायंकाल ४ बजे तक शिविर स्थल पर पहुँच जावें। कृपया इससे पूर्व व पश्चात् न पहुँचे, ऐसा करने से व्यवस्था में बाधा उत्पन्न होती है।

(१३) अनुशासन को दृष्टिगत रखते हुए शिविर में अन्तिम दिन तक उपस्थित रहना होगा।

(१४) शिविर में अपने साथ टार्च, पेन, नोटबुक आदि लावें।

(१५) शिविर में प्रयोग हेतु सादे वस्त्र (सफेद अथवा पीले) लावें।

(१६) छोटे बच्चे, कीमती सामान, रेड़ियों आदि अपने साथ न लावें।

(१७) शिविर काल में शिविर स्थल से बाहर जाने का निषेध रहेगा यदि आपको अपने घर पर अथवा परिजनों को रोजड़ पहुँचने की सूचना देनी हो तो प्रवेश से पहले ही दे देवें।

पत्रव्यहार और ई-मेल निम्न पते पर करें

व्यवस्थापक - वानप्रस्थ साधक आश्रम

आर्यवन, रोजड़, पत्रा.-सागपुर, जि.-साबरकांठा (गुज.) ३८३३०७

दुरभाष:- (०२७७२) २८७४१७, २९१५५५, ९४२७०५९५५०

ई मेल: vaanaprastharojad@gmail.com

अहमदाबाद एस. टी. बस स्टैंड से धनसुरा, मोडासा की ओर जाने वाली बस में बैठकर रोजड़ गाँव उतरें तथा रतलाम, कोटा, दाहोद की ओर से आने वाले महानुभाव गोधरा से धनसुरा - मोड़ासा की बस में धनसुरा और धनसुरा से रोजड़ पहुँचे। यहाँ से पुंसरी रोड़ पर लगभग डेढ़ किलोमीटर दूर आर्यवन है। अहमदाबाद से आर्यवन (रोजड़) लगभग ७० कि.मी. दूर है।

सघन साधना शिविर

दिनांक १ अक्टूबर २०१४ से ३० सितम्बर २०१५ तक

दर्शन योग महाविद्यालय में एक वर्षीय सघन साधना शिविर का आयोजन स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में किया जा रहा है। यह १ अक्टूबर २०१४ से आरम्भ होकर ३० सितम्बर २०१४ को सम्पन्न होगा। इसमें उच्चस्तर के साधक-साधिका मुख्य रूप से भाग लेंगे। शिविर में विशेष रूप से वेद, दर्शन आदि आर्ष ग्रन्थों के आधार पर ध्यान, उपासना का प्रशिक्षण, विवेक-वैराग्य समाधि की प्राप्ति हेतु निदिध्यासन आदि के रूप में उसके वैज्ञानिक विधि एवं उपायों का परिज्ञान कराया जाएगा। इनके साथ सूक्ष्म व उच्च आध्यात्मिक स्तर की वृद्धि हेतु सम्पूर्ण न्याय दर्शन का अध्ययन भी कराया जाएगा। साधना की समुचित दिनचर्या के साथ मौन का अनुष्ठान विशेष रूप से सम्मिलित रहेगा। आशा है इस शिविर के माध्यम से बुद्धिपूर्वक अभ्यास करने वाले सुशिक्षित वैदिक योग साधक, समाज को प्रेरणा एवं नेतृत्व करने वाले योग प्रशिक्षक एवं आध्यात्मिक विद्या की रक्षा व वृद्धि में जीवन समर्पित करने वाले अध्येता तैयार हो सकेंगे। इसी के साथ विद्यालय में पठन-पाठन के साथ योगाभ्यास का स्तर भी उत्कर्षता को प्राप्त होगा जिसमें वैदिक आध्यात्मिक ज्ञान परम्परा निरन्तर फलती-फूलती रहेगी।

विस्तृत जानकारी हेतु देखें वेबसाईट www.darshanyog.org तथा सम्पर्क करें-०२७७०-२८७४१८, २८७५१८

thearyasamaj.org

आध्यात्मिक जिज्ञासा/प्रश्न आपके, समाधान वैदिक विद्वानों के द्वारा

अंक जुलाई २०१४ पृष्ठ १६ जिज्ञासु भाई रूपकिशोर के प्रश्न का समाधान:-

समादरणीय श्री रूपकिशोर जाकर जी, सादर नमस्ते!

वैदिक संसार पत्रिका में आपकी जिज्ञासा पढ़ने को मिली एवं श्री सुखदेव शर्मा जी के आग्रह पर आपकी जिज्ञासा का उत्तर देने का प्रयत्न करता हूँ-

जिज्ञासा:-ऋषि दयानन्द ने अंतिम समय में ऐसा क्यों कहा-**''हे ईश्वर तेरी ईच्छा पूर्ण होवें ?** इच्छा तो जीव करता है परमात्मा की तो कोई इच्छा होती नहीं है, यदि वह इच्छा करें तो जीव की तरह सांसारिक प्रपंचों में फंसकर रह जावेगा।

समाधान:-इच्छा तो जीव करता है। ये आपकी बात सही है किन्तु परमात्मा भी इच्छा करता है। इसमें वास्तविकता यह है कि वह अपने लिए कोई इच्छा नहीं करता है। साथ ही उसकी कोई सांसारिक इच्छा नहीं होती है, जैसे मनुष्यों की धन-सम्मान सुख आदि प्राप्त करने की इच्छा होती है।

(ईश्वर की इच्छा कैसी होती है यह स्वामी दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ आर्याभिविनिय में लिखा है)

प्रमाण:-''अप न: शोशुचदघम्''।। (आर्या. प्रथमप्रकाश, मंत्र ३९)

आपकी इच्छा से हमारा पाप सब नष्ट हो।

''भग प्रणेत:'' (आर्या. द्वितीय प्रकाश मंत्र ११)

आपके ही स्वाधीन सकल ऐश्वर्य है अन्य किसी के अधीन नहीं आप जिसको चाहो उसको ऐश्वर्य देओ सो आप कृपा से हम लोगों को दरिद्रय छेदन करके हमको परमैश्वर्य वाले करें।

हम लोग तो केवल आपके ही शरण है। जैसी आपकी इच्छा हो वैसा हमारे लिए आप कीजिए। (आ. द्वि. प्रकाश, मंत्र १३)

''अवस्यूरसि दुवस्वान्'' (आर्या. द्वितीय प्रकाश मंत्र १७)

अन्नादि पदार्थ अपने भक्तों, धर्मात्माओं को देने की इच्छा सदा करते हो।

इसी प्रकार योगदर्शन में भी ईश्वर की इच्छा का संकेत मिलता है जैसे कि- योगदर्शन व्यासभाष्य प्रथम पाद सूत्र २५ के अनुसार ईश्वर की इच्छा है ''सॉसारिक लोगों का उद्धार करूँ'' **प्रमाण:- ''संसारिण: पुरुषानुद्धारिष्यामीति''**।

इसी के ऊपर कहा है:- **''तस्यात्मानुग्रहाभावेऽपि भूतानुग्रह: प्रयोजनम्''** अर्थात् ईश्वर का अपना कोई स्वार्थ न होने पर भी प्राणियों पर अनुग्रह करना उसका प्रयोजन है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्राणियों पर दया करना, उनका कल्याण करना, उनको पाप रहित करना, उनका उद्धार करना अर्थात् जीवों को संसार के दु:ख सागर से छुड़ाकर मोक्ष सुख प्रदान करना ईश्वर की इच्छा है और ऋषि दयाननद जी ने योगदर्शन ग्रन्थ में पढ़ा था व ईश्वर की ऐसी इच्छा है यह उन्हें पता था इसलिए अंतिम समय में, **''हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण होवे''** ऐसी उन्होंने प्रार्थना की।

इस प्रकार निष्कर्ष निकला कि ईश्वर कोई सांसारिक, लौकिक इच्छा नहीं करता है या अपने स्वार्थ के लिए कोई इच्छा नहीं करता है इसलिए वह सांसारिक प्रपंचों में फंसता भी नहीं है। आशा है आपकी जिज्ञासा का समाधान हो गया होगा और ईश्वर का अनुग्रह, कृपा दया आप पर और आपके परिवार पर बरसती रहेगी इसी शुभकामना के साथ।

नोट:-ईश्वर मनुष्यों के प्रति ऐसी इच्छा करता है कि वह पापकर्म न करें, फिर भी मनुष्य पाप कर देता है। तब भी ईश्वर दु:खी नहीं होता है। क्योंकि वह जानता है कि मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है, इसके कर्मफल में ईश्वर मनुष्य को दण्ड देता है।

-स्वामी शांतानन्द सरस्वती
गुरूकुल भवानीपुर, कच्छ (गुज.)

समादरणीय सादर नमस्ते!

जब ईश्वर ने सृष्टि की रचना की तब ये नहीं सोचा था कि मानव इतना स्वार्थी लोभी निंदक और निष्क्रिय भी हो सकता है। जो अपने ही भाई बन्धुओं का गला काटने को आतुर रहेगा। और अपनी स्वार्थी पीपासा शांत करने हेतु अत्यंत नीचे गर्त में धंसता चला जाएगा।

इस सास्वत सत्य से मुखरित होने और दिव्य ज्ञान की प्राप्ति के बाद महर्षि दयानन्द ने अंतिम शब्दों में जो वाणी निकाली है की ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। पर जिज्ञासु भाई की जिज्ञासा की ईश्वर की कोई इच्छा नहींहोती और अगर होती है तो वो जीव मात्र की तरह सांसारिक बन्धनों में फंस कर रह जायेंगे। आपका प्रश्न उचित है परन्तु में आपको एक बात का निवेदन करती हूँ की ईश्वर कौन है ? ईश्वर वो परब्रह्म परमेश्वर ऊँ निराकार है। जिसने सृष्टि का निर्माण किया और कोई भी निर्माता अपने निर्माण को अपूर्ण और अस्वस्थ नहीं देखना चाहेगा। जैसे माता-पिता अपनी संतान में वो सभी गुण और संस्कार देना चाहेंगे जिससे उसकी संतान आगे चल कर अपने जीवन के साथ साथ अन्य जीवों का भी कल्याण करें। अगर वे माता पिता सभ्य है तो।

इसी प्रकार ईश्वर भी अपनी बनाई दुनिया में प्रेम, भाई चारा, दया, करूणा, वात्सल्य, स्वाभिमान, जैसे गुणों को देखना चाहता है। और ये इच्छा कोई मोह नहीं जो बान्ध दे। एक स्वस्थ समाज की कल्पना या इच्छा करना गलत नहीं हो सकता है। हाँ अगर ईश्वर अपने बच्चों में पक्षपात करता है। तो अवश्य गलत होता। परन्तु ईश्वर ने तो सभी इन्सानों को एक जैसा बनाया है। भेदभाव ऊँच-नीच की प्रवृत्ति को तो हम इन्सानों ने बनाया है। इसलिए हम इन्सानों ने एक समाज के लिए अलग तो दूसरे समाज के लिए दूसरा नियम बनाया जो इंसानियत के मार्ग में कंटक है।

तो इसलिए स्वामी जी ने ईश्वर को उनकी अपूर्ण इच्छा जिसे हमने पूर्ण नहीं होने दिया उसकी और संकेत करते हुए ये अंतिम शब्द कहे थे।

उत्तर प्रेषितकर्ता-ममता शर्मा ''जांगिड''
पाली मारवाड़ (राज.)

नवीन जिज्ञासा प्रश्न-

आदरणीय प्रणाम

मैं दिलीप भाटिया, सेवानिवृत्त परमाणु वैज्ञानिक

श्री ओमप्रकाश आर्य के सौजन्य से वैदिक संसार का अप्रैल २०१४ का अंक पढ़ने के लिए मिला। मेरी जिज्ञासा/ प्रश्न निम्न है -

१. ईश्वर की प्राप्ति के लिए क्या गुरु बनाना/दीक्षा लेना आवश्यक है ?

२. आर्य समाज में प्रति रविवार को यज्ञ करने का क्या औचित्य है ?

जिस अंक में उत्तर प्रकाशित करें, एक प्रति भेजियेगा, कृतज्ञ रहूंगा। सादर धन्यवाद

एक जिज्ञासु- दिलीप भाटिया, रावतभाटा

thearyasamaj.org

चतुर्वेद पारायण महायज्ञ एवं गायत्री मंत्र की विशाल आहूतियों का सवा पाँच माह का भव्य आयोजन

दिनांक ४ अक्टूम्बर २०१४ से ९ मार्च २०१५ तक

वेदार्ष गुरूकुल यमुना तट मंझावली, जिला-फरीदाबाद हरियाणा में स्वामी **चित्तेश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता एवं आचार्य विद्यादेव जी पूर्व प्राचार्य उपदेशक महाविद्यालय टंकारा के यज्ञ ब्रह्मत्व में विशाल चतुर्वेद पारायण महायज्ञ** तथा करोड़ों की संख्या में गायत्री मंत्रों से आहूतियाँ प्रदान करने के साथ प्रातः काल एवं सायंकाल योग शिविर का आयोजन ४ अक्टूबर २०१४ से ९ मार्च २०१५ (सवा पाँच माह) का भव्य आयोजन गुरूकुल परिसर में सम्पन्न होने जा रहा है। आर्य जगत् में सम्पन्न होने जा रहे इस आयोजन में चारों वेदों के २०५५२ मंत्रों की तथा करोड़ो को संख्या में गायत्री मंत्र की आहूतियाँ प्रदान की जावेगी तथा वेदों के उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा वेद प्रवचन का अमृतपान उपस्थितों को करवाया जावेगा, योग शिविर के माध्यम से प्राणायाम आदि का गूढ़ ज्ञान तथा प्रशिक्षण उपस्थित साधक-साधिकाओं को प्रदान किया जावेगा। वेद अमृत के जिज्ञासु जन सादर आमंत्रित है।

(गुरूकुल पुराना फरीदाबाद से लगभग चार किलोमीटर दूरी पर यमुना नदी के तट पर स्थित है।)

सम्पर्क एवं निवेदक
स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी, ९४१०१०२५६८

भव्य १३१वाँ ऋषि मेला

दिनांक ३१ अक्टूम्बर से २ नवम्बर २०१४ तक

यह ऋषि मेला मात्र भीड़ की धक्कम-धक्का, मौज मस्ती की रेलम पेल का मेला नहीं यहां ऋषि के पावन सन्देश **'वेदों की ओर लौटो'** के अनुसार वेदों की पावन अमृतधारा प्रवाहित होगी जिसके अंतर्गत निम्न गतिविधियाँ सम्पन्न होगी।

- **ऋग्वेद पारायण यज्ञ**
- **चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता**
- **आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा भजन-उपदेश विद्वानों कार्यकर्ताओं का सम्मान**
- **आर्य वीरों का शौर्य प्रदर्शन**
- **अनेकों वैदिक साहित्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित साहित्य की सुलभता**
- **वैदिक संसार पत्रिका की सदस्यता हेतु उपलब्धता सम्पर्क-९४२५०६९४९१**

ऋषि दयानन्द सरस्वती को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने तथा वेदों की पावन अमृतधारा पान करने हेतु समस्त ऋषि भक्त परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा सादर आमंत्रित है। **सम्पर्क-०१४५-२४६०१६४**

प्रभात की प्रभा

आर्य जगत् के लिए गौरव की बात है कि गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा संस्कृत समारोह के अवसर पर दिनांक २९, ३० अगस्त को आयोजित द्विदिवसीय संस्कृत भाषण तथा संस्कृत गीतगायन प्रतियोगिता में **गुरूकुल प्रभात आश्रम भोला की झाल, टीकरी, जिला-मेरठ (उ.प्र.) के ब्रह्मचारी नीरज ने संस्कृत भाषण में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया तथा ब्रह्मचारी दीपक ने संस्कृत गीतगायन में तृतीय स्थान प्राप्त किया।**

ब्रह्मचारियों की इस उपलब्धि पर उनके सम्मान में आश्रम में एक भव्य सभा का आयोजन किया गया तथा आश्चर्य किया गया कि अन्य संस्थाओं के दलरूप में भाग लेने पर भी इन एकल प्रतियोगियो ने अपनी योग्यता का परिचय दिया। आश्रम में गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के निष्पक्ष निर्णायकों का भी भूरिश: धन्यवाद किया गया।

गो रक्षार्थ विशाल धरना प्रदर्शन

दिनांक २ अक्टूबर २०१४ को प्रातः १० से २ बजे तक

स्थान-जन्तर मन्तर, दिल्ली अखिल भारतीय राजार्य सभा के तत्वावधान में गो को राष्ट्रीय पशु घोषित करने तथा गोवंश संरक्षण, संवर्धन हेतु अनुसंधान तथा गोवंश के लाभ को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु शासकीय प्रयासों को और अधिक प्रभावी बनाने की मांगों को लेकर विशाल धरना-प्रदर्शन आयोजित किया जा रहा है जिसमें समस्त गो भक्तों को शामिल होने का आव्हान सभा द्वारा किया गया है।

सम्पर्क-डॉ. रामकुमार आर्य-०९४१२४५०२२९

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में

बोधोत्सव का आयोजन

दिनांक १६ से १८ फरवरी २०१५ तक

आर्यजनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भाँति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन १६-१८ फरवरी २०१५ तक किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यजनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

-रामनाथ सहगल, मन्त्री

दसवां आर्य युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

दिनांक - २३ नवम्बर २०१४

स्थान - आर्य समाज, स्टेशन रोड़ आणंद, गुजरात

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के निर्णय एवं निर्देशानुसार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा **श्री अर्जुन देव चढ्डा के राष्ट्रीय संयोजन में** देश के स्थान-स्थान पर आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों के विवाह सम्बन्ध स्थापित करने हेतु आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन स्थापित किये गये। इसके **सकारात्मक परिणाम सामने आकर आठ आयोजनों में ३९० से अधिक सम्बन्ध स्थापित हुए हैं।** इसी तारतम्य में ९वाँ आयोजन दिनांक २८ सितम्बर २०१४ को आर्य समाज गंजी कम्पाउण्ड इन्दौर पर तथा १०वाँ आयोजन आर्य समाज आणंद गुजरात पर दिनांक २३ नवम्बर २०१४ को आयोजित होना प्रस्तावित है कृपया आर्य जन इन आयोजनों से जुड़कर सहयोग-समर्थन प्रदान करें तथा लाभ प्राप्त करें। विस्तृत जानकारी एवं आवेदन पत्र हेतु वेब साईट -www.thearyasamaj.org देखें तथा सम्पर्क करें **अर्जुनदेव चढ्डा** - ०९४१४१८७४२८

प्रत्येक पूर्णिमा पर महिलाओं द्वारा सम्पन्न होगा यज्ञ एवं वैदिक सत्संग

आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा में महिलाओं द्वारा पूर्णिमा दिवस पर यज्ञ एवं वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। पुरोहित का दायित्व श्रीमती इन्दिरा पाण्डेय द्वारा निर्वहन किया गया। बृहद संख्या में महिलाओं ने उपस्थित होकर लाभ प्राप्त किया तथा **प्रत्येक पूर्णिमा को इसी प्रकार यज्ञ-सत्संग करने का व्रत (शुभ-संकल्प) धारण कर महर्षि दयानन्द के महिलाओं को भी वेद पढ़ने-पढ़ाने के स्वप्न को साकार किया।** इस अवसर पर जिला प्रधान अर्जुन देव चढ्डा संस्था प्रधान जे. एस. दुबे तथा पुरोहित पं. अग्निमित्र शास्त्री आदि महानुभाव भी उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

श्रावणी उपाकर्म, पर्व मनाया

आर्यसमाज नागदा जंक्शन, जिला-उज्जैन (म.प्र.) द्वारा श्रावणी उपाक्रम पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य रामसिंह पटेल, अभिभावक रमेश चन्देल, यशवन्त आर्य, महेश सोनी, प्रधान पूनमचन्द आर्य, मंत्री कमल आर्य, विजय पटेल, राजु आंजना, मुकेश चौधरी, जगदीश पांचाल, जयप्रकाश सोनी, अग्निवेश पाण्डेय, अर्जुन आर्य, रोहित पटेल, ओमप्रकाश गम्भीरा, दिलीप पांचाल, आर्यन आर्य, अविरल आर्य, गायत्री पांचाल, श्रेया पटेल, यज्ञांशी पटेल, प्रकाश आंजना आदि उपस्थित थे।

ध्वजारोहण के पश्चात ब्रह्मयज्ञ पूर्ण किया गया। उपरान्त यज्ञोपवित परिवर्तन का कार्य सम्पन्न हुआ। देवयज्ञ में यजमान पूनमचन्द आर्य व उपस्थित आर्यजनों के द्वारा ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद व यजुर्वेद की ऋचाओं से १११ आहूतियाँ दी गईं। यज्ञ समाप्ति के बाद रमेश चन्देल द्वारा सत्यार्थ प्रकाश का पाठ किया गया। महेश सोनी व ओमप्रकाश गंभीरा ने गीतों की प्रस्तुती दी। कार्यक्रम का संचालन मंत्री कमल आर्य ने किया। आभार जगदीश पांचाल ने माना। शांतिपाठ आर्यन आर्य ने किया। **-भंवरलाल पांचाल, सूचना प्रमुख एवं प्रतिनिधि**-वैदिक संसार

श्रावणी उपाकर्म मनाया और सत्यार्थ प्रकाश उपलब्ध करवाने की घोषणा की

श्रावण शुक्ल पूर्णिमा १० अगस्त को आर्य समाज, फतेहपुर शेखावाटी (सीकर) ने **श्रावणी उपाकर्म पर्व जांगिड संस्कृत वैदिक विद्यालय के नवीनीकृत यज्ञ कुण्ड पर मनाया।** आचार्य राम गोपाल शास्त्री, आचार्य विनोद शास्त्री एवं रजनीकांत शर्मा के आचार्यत्व में गोघृत एवं शाकल्य से यज्ञ हुआ। **यजमान श्री गोकुलचंद जांगिड एवं उनके पुत्र रमेश जांगिड बने।** पर्व का सम्पूर्ण व्यय यजमान ने वहन किया।

आचार्य राम गोपाल शास्त्री ने आर्य समाज फतेहपुर की गतिविधियों की जानकारी दी। आचार्य विनोद शास्त्री ने श्रावणी उपाकर्म का महत्व प्रतिपादित किया। यज्ञ में सांवरमल जांगिड से.नि. लेखाधिकारी, महेन्द्र कुमार शर्मा अति. ब्लाक शिक्षा अधिकारी, देवीदत्त जांगिड़ सरपंच, मंगलचंद जांगिड, ब्रह्मदत्त जांगिड, सतीश शाण्डिल्य अहिंसा प्रशिक्षक, महावीर प्रसाद जांगिड से.नि.व.अ., महावीर प्रसाद सैनी प्रधानाध्यापक सहित विद्यालय परिवार एवं छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

इस अवसर पर घोषणा की गई कि आर्य समाज फतेहपुर प्रचारार्थ स्वामी दयानन्द सरस्वती के अमर क्रान्तिकारी ग्रंथ **'सत्यार्थ प्रकाश'** की २०० प्रतियाँ रियायती मूल्य पर वितरित करेगा।

आचार्य जी ने बताया कि ५० रू. मूल्य वाला अजिल्द ग्रंथ २० रू. में, ८० रू. मूल्य वाला बढ़िया कागज वाला सजिल्द ग्रंथ ५० रू. में तथा १५० रू. वाला स्थूलाक्षर ग्रंथ १०० रू. में दिया जायेगा। ग्रंथ का शेष खर्च कुछ दानी महानुभावों के सौजन्य से आर्य समाज वहन करेगा।

वैवाहिक आवश्यकता

ब्रह्मभट्ट ब्राह्मण ३१ वर्ष, कद-५'१'', एम.एस.सी. (गणित), प्रोबेसनरी ऑफीसर (डिप्टी मैनेजर) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, भोपाल (म.प्र.) युवति हेतु सुशिक्षित एवं संस्कारवान् समकक्ष युवक की आवश्यकता है। जाति बंधन नहीं।

सम्पर्क सूत्र-आर्य कुमार शर्मा, (रिटा. डी.एस.पी. भोपाल)
मोबाईल नं.-०९४२४४६८४८६

ईमेल-sharmaak22@gmail.com

बड़ोदरा में श्रावणी पर्व व वेद प्रचार संपन्न

आर्यसमाज बड़ोदरा (गुज.) के तत्वावधान में, वेद मंदिर-आर्य समाज वारशिया, यज्ञ प्रचार समिति तथा श्री फतेसिंह आर्य अनाथाश्रम-करेलीबाग, महिला सत्संग मंडल-बड़ोदरा के सहयोग से दिनांक १०.०८.२०१४ को श्रावणी पर्व वेदों का सन्देश घर-घर तक पहुँचाने के उद्देश्य से आयोजन समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। पुरोहित श्री अंकित शास्त्री, मिश्राजी ने यज्ञ सम्पन्न कराया एवं उज्जैन से पधारे स्वामी मोक्षानन्द जी ने यजमानों को आशीर्वाद दिया। श्रीमती योगेश्वरी शर्मा, मुनि कमलेश बहिन, श्रीमती शालिनी आर्य ने प्रासंगिक भजन प्रस्तुत किये। अपने स्वाध्याय के आधार पर कु. श्रुति पटेल ने वैदिक सिद्धांत प्रस्तुत किये जिसकी खूब सराहना हुई। बहिनों ने भाइयों को राखी बांध कर रक्षाबंधन मनाया। श्री बी. के. पटेल ने भोजन के मन्त्र का अर्थ समझाया। मुख्य वक्ता श्रीमती अनीता मीणा ने गीतमय प्रवचनों से सभी का मन मोह लिया। अंत में श्रीमती शालिनी ने सभी आयोजकों एवं पधारे हुये महानुभावों का धन्यवाद किया। भोजनोपरांत सभी स्वग्रह के लिए विदा हुए।

श्रावणी के इसी क्रम में १५, १६ तथा १७ अगस्त को एम.एस. विश्वविद्यालय के पर्यावरण विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अरूण आर्य जी की अध्यक्षता में वेद व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। इस कार्य क्रम के मुख्य वक्ता दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़ के ब्रह्मचारी श्री दिनेश कुमार जी ने अपने सारगर्भित प्रवचनों से ईश्वर, धर्म और परिवार में हमारे कर्तव्यों के विषय में हमें विशेष ज्ञान कराया। आर्यसमाज की सामाजिक गतिविधियों के अंतर्गत मुख्य अतिथि डॉ. हसमुख भाई पटेल (रिटायर्ड प्रिंसिपल सरकारी आयुर्वेदिक कालिज बड़ोदरा) के करकमलों से विकलांगों को तीन पहिये की साइकिलें (२) एवं वोकर भेंट किए गये। वयोवृद्ध एवं समर्पित आर्य आदरणीय श्री परसोत्तम भाई ठाकोर (१८ वर्ष) तथा आदरणीय श्री अर्जुन भाई वेलाणी पूर्व प्रधान जी (८२) को पीत वस्त्र उढ़ाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में श्री योगेन्द्र शर्मा जी के संगीतमय भजनों ने चार चाँद लगा दिए। अंत में अपने अध्यक्षीण भाषण डॉ. आर्य जी ने ऐसे ज्ञान वर्धक कार्यक्रम की प्रशंसा की तथा भविष्य में ऐसे कार्यक्रमों को अधिक उपयोगी बनाने के लिए कई सुझाव भी दिए। जिनका सभी ने स्वागत किया।

आर्य समाज करजू में वेद प्रचार सम्पन्न

आर्य समाज करजू, जिला-शाजापुर के तत्वाधान में दिनांक २७.०७.१४ से ०२.०८.१४ तक वेद प्रचार सम्पन्न हुआ। मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल से पधारे आर्य समाज के प्रचारक एवं भजनोपदेशक पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया के सानिध्य में प्रथम दिन ग्राम करजू में वैदिक सत्संग व प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ एवं प्रतिदिन ग्राम करजू के अंतर्गत आस-पास के गाँवों में प्रात: काल यज्ञ एवं सायंकाल भजन व प्रवचन के माध्यम से पाखण्ड कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया गया। इस प्रचार कार्य से ग्राम करजू रामलखेड़ी, मण्डोदा, मोहना, टिगरियाँ आदि गाँवों में अच्छा प्रभाव पड़ा एवं आर्य समाज में नव जागृति आई। इस प्रचार कार्य में पूरे क्षेत्र में प्रमुख रूप से हरिसिंह आर्य, माँगीलाल आर्य, नारायणसिंह जी आर्य, सिद्धनाथ जी, उमरावसिंह जी आर्य, आचार्य सुरेश जी आर्य, भरत आर्य की व्यवस्था करने में सक्रिय भूमिका रही।

-सुरेश आर्य प्रधानाचार्य

thearyasamaj.org

आर्य समाज सैलाना द्वारा श्रावणी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज सैलाना, जिला-रतलाम (म.प्र.) द्वारा श्रावणी पर्व का आयोजन १४ से १७ अगस्त २०१७ तक **आचार्य चन्द्रेश जी आर्य वानप्रस्थ आश्रम रोजड़ के मुख्य वक्तृत्व एवं पं. कमलकिशोर जी शास्त्री बैरसिया की रसभरी भजनधारा** से प्रवाहित वांणी के द्वारा वैदिक ज्ञान प्रचार-प्रसार के साथ सम्पन्न हुआ।

इस आयोजन की प्रमुख विशेषता यह रही कि आचार्य चन्द्रेश जी के मुख्यमंच से ज्ञान-कर्म-उपासना विषय पर प्रवचन के अतिरिक्त भोजन व्यवस्था अलग-अलग परिवारों में की गई जहाँ पर भोजन उपरांत संबंधित परिवार के सदस्य-स्नेहीजनों के मध्य आत्मीयपूर्ण चर्चा की जाकर परिवार में व्याप्त दूरियों-मतभेदों तथा आपसी शिकायतों को दूर करने का सफल प्रयास किया गया तथा जिन सदस्यों में दुर्व्यसन अथवा अन्य कोई अज्ञानता जनित आदतों के प्रति सजग किया जाकर उनसे दूर रहने का शुभ संकल्प धारण करवाया गया।

वैदिक संसार द्वारा उपस्थितों को वैदिक संसार की सदस्यता एवं वैदिक साहित्य सुलभ करवाया गया।

आयोजन प्रभावशाली तथा सफल रहा। जिसका श्रेय युवा कार्यकर्ता शेखर आर्य एवं उनके सहयोगी जनों के परिश्रम को जाता है।

कार्यवाही साधारण सभा व निर्वाचन

दिनांक १७ अगस्त २०१४ दिन रविवार को वेद मनीषा न्यास अलीगढ़ की साधारण सभा की आवश्यक बैठक आर्य समाज सिविल लाइन्स, वैदिक आश्रम, रामघाट रोड़, अलीगढ़ की यज्ञशाला में न्यास के संस्थापक संरक्षक पं. शिवस्वरूप शर्मा व न्यास अध्यक्ष पं. देवनारायण भारद्वाज की उपस्थिति में ईश्वर स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना मंत्रों के साथ प्रारम्भ हुई।

ट्रस्ट के पदाधिकारियों का निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्नानुसार किया- **अध्यक्ष**-डॉ. पपेन्द्र आर्य, **उपाध्यक्ष**-श्री गंगास्वरूप गोयल एवं श्रीमती डॉ. पूनम बत्रा, **सचिव**-श्री योगेश शर्मा, **संयुक्त सचिव**-इ. शेरसिंह आर्य, **सह-सचिव**-श्री विनोद कुमार आर्य, **कोषाध्यक्ष**-श्री रामदीन आर्य पुरूषार्थी, **आय-व्यय निरीक्षक**-श्री सत्येन्द्र कुमार चतुर्वेद।

नव निर्वाचित अध्यक्ष डॉ. पपेन्द्र आर्य ने सबका धन्यवाद किया तथा सबके सहयोग की अपील की तथा बताया कि यह ट्रस्ट वैदिक संस्कृति व वेदों के प्रचार-प्रसार, अनाथ, गरीब, असहाय बच्चों की शिक्षा, गुरुकुलीय विद्यालयों को छात्रवृत्ति के रूप में सहयोग, प्रतिभाशाली लेखक, विद्वान्, भजनोपदेशक, कलाकार छात्रों का सम्मान, महर्षि दयानन्द सरस्वती की मान्यताओं को बढ़ाना, जाड़ों में गरीबों की चिकित्सा व कम्बल आदि से मदद करना इस न्यास का मुख्य कार्य है जो गत १६ वर्षों से करता आ रहा है।

इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र पाल आर्य, बाबू सिंह, इन्द्रपालसिंह, वैद्य नन्दकिशोर आर्य, डॉ. देवीचरन, रघुराजसिंह आर्य, जयनारायण शर्मा, लवलेशसिंह, डॉ. खुशपाल आर्य आदि अनेक महानुभाव उपस्थित रहे। **-डॉ. पपेन्द्र आर्य, अध्यक्ष**

वरिष्ठ समाज सेवी अर्जुन देव चढ्डा ने निराश्रितों के बीच मनाया जन्मदिन

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान तथा आर्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक, वरिष्ठ समाज सेवी श्री अर्जुन देव चढ्डा ने अपना ७१वाँ जन्मदिन मधुस्मृति संस्थान के निराश्रीत बच्चों के बीच मनाया। श्री चढ्डा जी समय-समय पर बच्चों के बीच जाते तथा उन्हें उपहार आदि देते रहते हैं इस कारण बच्चे उन्हें जानते हैं तथा मामाजी कहकर बुलाते हैं। इस अवसर पर बच्चे प्रफ्फुलित होकर झूम रहे थे।

अपने भाग्य निर्माता आप

नागपुर, महाराष्ट्र में रविवार ७ सितम्बर २०१४ को **स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक** का विशेष कार्यक्रम **''अपने भाग्य निर्माता आप''** विषय पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम में ५०० से भी अधिक प्रबुद्धजन उपस्थित रहे। कर्मफल-सिद्धांत का विवेचन सरल व रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में श्रोताओं ने शंका समाधान में उत्साह पूर्वक भाग लिया।

इस अवसर पर नागपुर के श्रेष्ठी श्री वसन्त लाल जी साव ने स्वामी विवेकानन्द जी का स्वागत किया। कार्यक्रम के आयोजक **'वेद प्रचारिणी सभा' नागपुर ने दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ गुजरात की प्रवृत्तियों में सहयोग के लिए महाविद्यालय के 'निर्देशक' स्वामी विवेकानन्द जी को १,२१,००० रूपये का चेक प्रदान किया।** स्वामी जी ने **'वेद प्रचारिणीसभा'** नागपुर को इस सहयोग के लिए महाविद्यालय की ओर से आभार व्यक्त किया।

इससे पूर्व गुजरात के अहमदाबाद और गाँधीनगर में विशाल सभागृहों में अनेक बार विशेष कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन तथा **'कर्मफल-सिद्धांत', 'गृहस्थ जीवन को सुखी कैसे बनाएँ'** जैसे विषयों पर स्वामी जी द्वारा प्रवचन तथा शंका-समाधान सम्पन्न हो चुके हैं। इन कार्यक्रमों की विडियो सी.डी. कर्मफल-सिद्धांत के विषय को संकलित कर एक अतिश्रेष्ठ पुस्तक **''अपने भाग्य निर्माता आप''** प्रकाशित हो चुकी है जिसे बहुत ही अच्छा प्रतिसाद मिला है। इन कार्यक्रमों की विड़ियो रिकॉडिंग आप Youtube पर देख सकते हैं।

''गृहस्थ जीवन को सुखी कैसे बनाएँ'' इस विषय पर दूसरी पुस्तक सुखी गृहस्थ तैयार होकर अतिशीघ्र प्रकाशित होने जा रही है।

वेद प्रचार अभियान २०१४ का प्रथम चरण सम्पन्न
द्वितीय चरण २ नवम्बर से २३ नवम्बर तक

आर्य समाज, सेक्टर-६, भिलाई (छ.ग.) के वेद प्रचार अभियान २०१४ का प्रथम चरण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर सम्पन्न हुआ। इस आठ दिवसीय पर्व का श्रावणी रक्षाबंधन को शुभारंभ वैदिक धर्म के राष्ट्रीय प्रचारक मुरादाबाद (उ.प्र.) से पधारे डॉ. महावीर जी मुमुक्षु द्वारा हुआ। इस दौरान नगर के विभिन्न क्षेत्रों में पारिवारिक यज्ञ एवं सत्संग आयोजित किए गए जिसमें वर्षा के बावजूद बड़ी संख्या में नर-नारियों ने इसका लाभ उठाया।

डॉ. मुमुक्षु जी ने अपने प्रवचन में मुख्य रूप से वेद ज्ञान, आर्य समाज की मान्यताओं पर वर्तमान परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए उन पर आचरण की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि समाज को संगठित करने के लिए आर्य नाम, धार्मिक ग्रंथ वेद, पूजा के लिए अग्निहोत्र तथा भेद-भाव, जात-पात से रहित संस्था आर्य समाज ही एकमात्र विकल्प है। देश की आजादी, दलितों का उद्धार, नारी शिक्षा जैसे तमाम सामाजिक आंदोलनों का नेतृत्व आर्य समाज ने किया है। अब देश की आजादी की सुरक्षा, अखण्डता, चरित्रवान नागरिक निर्माण की चुनौति में भी आर्य समाज अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

इस अवसर पर महिला विद्यालय, नर्सिंग कॉलेज आदि शिक्षण संस्थाओं से बोलते हुए श्री मुमुक्षु जी ने कहा कि वेदों में ब्रह्मचारी और आचार्य शिक्षा के दो बिन्दु हैं, इन दोनों को मिलाने वाली रेखा सदाचार है।

पूर्ण विधि विधान से आर्य पुरोहित श्री उद्धव प्रसाद शास्त्री ने सभी स्थानों पर यज्ञ पूर्ण करवाए। कार्यक्रम स्थल पर वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर श्रोताओं को उपलब्ध कराया गया। मंत्री श्री रवि आर्य ने बताया कि वेद प्रचार अभियान २०१४ का २२ दिवसीय द्वितीय चरण २ नवम्बर से २३ नवम्बर तक मनाया जाएगा। प्रधान श्री अवनी भूषण पुरंग ने कार्यक्रम की सफलता के लिए धन्यवाद प्रगट किया।

-रवि आर्य, मंत्री

thearyasamaj.org

वेद प्रचार समारोह में हुए यज्ञानुष्ठान, वैदिक प्रवचनों की बही ज्ञानगंगा

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर (राज.) की ओर से दिनांक २० अगस्त से २४ अगस्त, २०१४ मनाए गये वेद प्रचार समारोह में दिल्ली से पधारे वेद विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने वेदामृत प्रवाहित किया। देव यज्ञ से प्रारम्भ समारोह के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास ने की। प्रवचन माला के प्रारम्भ में आचार्यवर ने बताया कि प्रारम्भ सृष्टि के आदिकाल में मनुष्य ने कैसे बोलना सीखा। उन्होंने बताया कि ईश्वर ने सृष्टि उत्पत्ति के पाँच वर्ष बाद ऋषियों के अंत:करण में वेद ज्ञान प्रकाशित किया। वेदों में ईश्वर ने अपना परिचय देते हुए निज नाम ओ३म् का जप सतत् करने की अन्त: प्रेरणा दी। आचार्य जी ने अन्य सभाओं में ब्रह्मुर्हुत में जाग कर धर्म कर्म अर्थ का चिंतन करने, प्राणायाम, ध्यान व यज्ञ करने हेतु प्रेरित किया। आपने तृष्णाओं को त्याग कर जीवन मृत्यु से छूटने के उपाय, ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का भाव रखने, धर्म के मार्ग पर चलने का संदेश दिया। आचार्य जी के ऊर्जा से परिपूर्ण, प्रेरक एवं प्रभावी उद्बोधनों में बड़ी संख्या में आर्यजन सम्मिलित हुए।

समारोह के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. डॉ. शोभालाल दशोरा ने की, मुख्य अतिथि श्री सत्यनाराय आसट, डॉ. अशोक आर्य थे। समारोह संयोजक डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने स्वागत उद्बोधन दिया। आर्य समाज की मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा, मुकेश पाठक, कोषाध्यक्ष श्री प्रेमनारायण जायसवाल, कृष्ण कुमार सोनी, विनोद कोहली ने अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। पुरोहित श्री अनन्तदेव शर्मा, रामदयाल ने दैनिक यज्ञ को सुचारू सम्पन्न में योग किया। इस अवसर पर आर्य समाजसेवी डॉ. शारदा गुप्ता, श्री अम्बालाल जी सनाढ्य, श्री इन्द्रसिंह राणावत, श्रीमती विद्यावंती तलदार का आर्य समाज की ओर से शॉल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र भेंट कर सम्मान किया। आर्य समाज के प्रधान श्री भंवरलाल आर्य ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया। अन्य सभाओं में समाज सेवी डॉ. राधिका लड्ढा, शिक्षा विद प्रो. परमेन्द्र दशोरा, रमेशचन्द्र खण्डेलवाल, डॉ. प्रेमचन्द गुप्त, श्री भगवतीलाल चौधरी, श्री देवश्रीमाली, प्रो. वाई के गुप्ता का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

-भूपेन्द्र शर्मा, उपमंत्री

आर्य समाज कोटा द्वारा किया गया प्रतिभाओं का सम्मान

डी.ए.वी. स्कूल कोटा के धर्म शिक्षक श्री शोभाराम जी आर्य के सुपुत्र यज्ञेश आर्य के द्वारा प्रथम प्रयास में ही ए.आई.पी.एम.टी., सी.पी.एस.टी., तथा आर.पी.एम.टी. तीनों में चयनित होने पर शॉल ओढ़ाकर तथा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया।

इसी प्रकार नन्हीं बालिका श्रीया बोम्मू जो कि अन्नपूर्णा पब्लिक स्कूल कोटा में नवमी कक्षा की छात्रा है को नृत्य एवं गायन में विशेष उपलब्धि प्राप्त करने पर राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे द्वारा सम्मानित किये जाने पर आर्य समाज द्वारा भी सम्मानित कर बालिका का उत्साह वर्धन किया गया। बालिका श्रीया शिक्षाविद् डॉ. रामाराव तथा श्रीमती लक्ष्मीराव बोम्मू की संस्कारवान सुपुत्री है, माता-पिता के साथ यज्ञ-सत्संग में भाग लेती है तथा अपने विद्यालय में अन्य विद्यार्थियों से सामूहिक गायत्री मंत्र का पाठ करवाती है। बालिका करीब चार वर्ष की आयु से नृत्य-गायन का प्रशिक्षण ले रही है तथा अनेक राज्य व राष्ट्र स्तरीय मंचों पर अपनी प्रस्तुति दे चुकी है।

पूणे के वारजे मालवाडी एवं पिंपरी आर्यसमाज में मनाया गया वेद प्रचार सप्ताह

२८ जुलाई से ३ अगस्त २०१४ तक वारजे आर्यसमाज का तथा ४ से १० अगस्त तक पिंपरी आर्यसमाज का वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। प्रतिदिन "वेद वाटिका" गिरीश सोसायटी में सायंकाल ३ से ५ तक तथा रात्रि में ८ से १० तक उपदेश भजन प्रवचन होते थे इसी प्रकार से पिंपरी समाज में प्रात: ७ से १० यज्ञ व भजनोपदेश और सायंकाल ६ से ८.३० तक उपदेश प्रवचन होते थे। जिसमें प्रमुख वक्ता आचार्य श्री आनंद पुरूषार्थी जी होशंगाबाद (म.प्र.) से व भजनोपदेशक श्री संदीप वैदिक जी मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) से आमंत्रित थे। आचार्य जी ने वेद प्रचार सप्ताह के लिए आयोजित कार्यक्रम होने से सभी सत्रों में वेदमंत्रों को केन्द्र में रखकर ही उपदेश दिया। कुछ सामयिक, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय विषयों पर भी आर्यसमाज का पक्ष रखा। भजनोपदेशक श्री संदीप वैदिक जी के मधुर भजनों को सभी ने सराहा। आचार्य जी ने समय निकाल कर कुछ अन्य संस्थाओं में कार्यक्रम आयोजित करवाये। जिनमें शानु पटेल इंटर कॉलेज वारजे के अंगरेजी व हिन्दी माध्यम की दोनों संस्थाये, गुजराती कच्छी पटेल समाज का पोकार होस्टल, पिंपरी के आर्य कन्या महाविद्यालय की बी.कॉम की छात्राओं व महर्षि दयानन्द इंटर कॉलेज की कन्याओं में ५-६ दिनों तक प्रतिदिन, चार्टर्ड अकाउंटेंट की एक संस्था सी.एम.आर.एस.एंड एसोसियेट्स में लगभग ८० वरिष्ठ एवं छात्र समूह सी.ए. को वैदिक विचारधारा का परिचय दिया। इसके साथ ही व्यक्तिगत अनेक परिवारों में बैठ कर आर्यसमाज से सम्बन्धित सिद्धांतों को स्पष्ट किया। गाँधी जी, नेहरू जी डॉ. अंबेडकर, फिल्म अभिनेता संजय दत्त व आतंकवादी कसाब के रहने से प्रसिद्ध हुई येरवडा पूणे की सेंट्रल जेल में भी उपदेश का कार्यक्रम रखा गया। जिसमें वैदिक साहित्य कैदियों को वितरित किया। पूणे की सभी आर्यसमाज के अधिकारी महानुभाव उपस्थित थे। वारजे आर्यसमाज मंदिर के यज्ञ में अंतिम दिवस के पूर्णाहुति यज्ञ में २१ यज्ञ वेदियों ६५ दम्पत्ती सम्मिलित हुए। यज्ञ में आचार्य जी ने आर्यसमाज के उत्सव में आने के साथ-साथ संगठन से वर्ष भर जुड़े रहने की दक्षिणा यजमानों से देने का अनुरोध किया। अंत में सभी ने ऋषि लंगर का प्रसाद लिया।

अशोक वेलाणी-मंत्री

किलकारियाँ गूंजी

श्री मुन्नाराम जी, निवासी-गोविन्दगढ़, जिला-अलवर (राज.) के मंझले सुपुत्र-श्री सुरेन्द्र मोहन जांगिड धर्मपत्नी-श्रीमती रजनी जांगिड, सुपुत्री-श्री जयकुमार जी जांगिड, निवासी-ग्वालियर (म.प्र.) के यहाँ दिनांक २३.०८.१४ को सुपुत्र जन्म से सामोदियाँ एवं सातोरियाँ परिवार में हर्षोल्लास की लहर दौड़ गई। इष्ट मित्रों एवं परिजनों द्वारा बधाई का तांता लग गया। इस प्रसन्नता के शुभ अवसर पर संयोग वश वैदिक संसार के प्रकाशक सुखदेव शर्मा का ग्वालियर प्रवास पर पहुँचना हुआ शुभ समाचार विदित होने पर प्रकाशक महोदय ने चलभाष पर बालक के दादा जी श्री मुन्नालाल जी को बधाई व बालक के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ व्यक्त की तथा बालक के नाना जी जयकुमार जी जांगिड के निवास पर पहुँच कर परिवारजनों को बधाई देने के साथ बालक को यशस्वी, ओजस्वी, आरोग्यवान, आयुष्मान होने का आशीर्वाद प्रदान किया। इस शुभप्रसंग के अवसर पर बालक के नानाश्री ने वैदिक संसार को आर्थिक सहयोग प्रदान किया तथा प्रतिवर्ष आर्थिक सहयोग प्रदान करने का शुभ संकल्प व्यक्त किया।

thearyasamaj.org

आर्यसमाज रावतभाटा द्वारा वैदिक श्रावणी पर्व के उपलक्ष में चर्चाओं का आयोजन

श्री कृष्ण के उत्तम चरित्र को किया प्रस्तुत

वैदिक काल में श्रावणी उपाकर्म श्रावण नक्षत्र की पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर माघ मास की पूर्णिमा तक चलता था आजकल समय कि अनुपलब्धता को देखते हुए आर्यसमाज रावतभाटा के तत्वावधान में प्रत्येक शनिवार की शाम को वैदिक चर्चाओं को आयोजित करने का निश्चय किया गया व इस श्रृंखला में दिनांक १६.०८.२०१४, शनिवार को श्री विनोद कुमार त्यागी के आवास पर वैदिक चर्चा का आयोजन किया गया। श्री रमेशचन्द्र भाट ने श्रावणी उपाकर्म व वेदों की नारी ऋषिकाओं पर प्रकाश डाला। श्री विनोद कुमार त्यागी ने कृष्ण जन्म के बारे में प्रचलित भ्रान्तियों का निराकरण किया। श्री ओम प्रकाश आर्य, श्री रेशमपाल सिंह व श्री योगेश आर्य ने श्री जोधसिंह, श्रीं निर्भयसिंह के प्रश्न पर आत्मा परमात्मा के व्यापक-व्याप्य, आधार-आधेय सम्बन्ध व सृष्टि उत्पत्ति विषय पर उपनिषदों के आधार पर चर्चा की। श्रीमती सुधा सिंह व श्रीमती मोहनी भाट ने भजन प्रस्तुत किये। श्री अशोक कश्यप, श्री गणेशीलाल, श्रीमती गायत्री देवी व श्रीमती उपमा त्यागी वैदिक चर्चा में उपस्थित थे।

वैदिक चर्चाओं की श्रृंखला में दिनांक २३.०८.२०१४, शनिवार को श्री रमेशचन्द्र भाट के आवास पर श्री कृष्ण व उनके चरित्र के बारे में प्रचलित भ्रान्तियों पर वैदिक चर्चा का आयोजन किया गया। मंत्री आर्य समाज रावतभाटा, श्री ओमप्रकाश आर्य ने चर्चा का संचालन किया, श्री रेशमपाल सिंह को सभा का प्रधान नियुक्त किया गया। श्री योगेश आर्य, श्री रमेशचन्द्र भाट, श्री विनोद कुमार त्यागी, श्री पी.एल. शर्मा, श्री शैलेष, श्री विजय सिंह, श्री आर.बी. मेघवाल, श्री मोहित भाट, श्रीमती सुधा सिंह, श्रीमती गायत्री देवी, श्रीमती उपमा त्यागी, श्रीमती मोहनी भाट व श्रीमती मंजु सिंह ने चर्चा में सहभागिता की।

चर्चा में यह बात उभरकर आई की कृष्ण चरित्र का उल्लेख ब्रह्म, पद्म, विष्णु, वायु, भागवत, ब्रह्मवैवर्त, स्कन्द, वामन और कुर्म इन नौ पुराणों में मिलता है और इन ग्रंथों में कृष्ण की राजनैतिक विलक्षणता, चारित्रिक महता, ओजस्विता का उल्लेख नहीं हुआ है। उनमें वात्सल्य और श्रृंगार लीलाओं का ही चित्रण किया गया है।

जब कृष्ण को ईश्वर मानकर उनके दिव्य अवतार की उपासना प्रचलित हुई तो कृष्णोपासना के आधार पर अनेक संप्रदाय स्थापित हो गये-पांचरात्र, भागवत, वासुदेव आदि संप्रदायों को इतिहासकारों ने स्वीकार किया है, माध्य, निम्बार्क और विष्णुस्वामी (प्रचलित नाम वल्लभ संप्रदाय) आदि नवीन संप्रदाय भी इसी परम्परा में आते हैं।

मंदिरों में जिन राधा जी की कृष्ण जी के साथ सर्वत्र पूजा जाती है उन राधा जी का भागवत, विष्णु तथा हरिवंश पुराणों में कोई उल्लेख नहीं है। इसका वर्णन विशेषत: ब्रह्मवैवर्त पुराण में मिलता है। वैष्णवों के भागवत तथा माध्य संप्रदाय भी राधा को नहीं मानते। हिंदी के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पुस्तक मध्य कालीन धर्म साधना में लिखा है कि **'प्रेम विलाश'** और **'भक्ति रत्नाकर'** के अनुसार नित्यानंद प्रभु (बंगाल के चेतन्य के सहकारी) कि पत्नी जान्हवी देवी जब वृन्दावन आई तो उन्हें यह देखकर बड़ा दु:ख हुआ की कृष्ण के साथ राधा की मूर्ति की कहीं पूजा नहीं होती है। घर लौटकर उन्होंने नारायण भास्कर नामक मूर्तिकार से राधा की मूर्ति बनवाई और उसे वृन्दावन भिजवाया। जीव गोस्वामी की आज्ञा से मूर्तियां कृष्ण के पार्श्व में रखी गई और तब से वहां श्री कृष्ण के साथ राधा की पूजा होने लगी। इससे यह सिद्ध होता है कि ब्रज में भी जो की कृष्ण की जन्म भूमि है, राधा की कृष्ण के साथ पूजा लगभग ४०० वर्ष पूर्व, जो चेतन्य महाप्रभु के जीवन काल का समय है प्रचलित नहीं थी और उसकी कल्पना ब्रह्मवैवर्त पुराणकारों के कामुक मस्तिष्क की उपज है, क्योंकि जिस राधा का पता ब्रजवासियों को न हो जिसका वर्णन भागवत, विष्णु, हरिवंश महापुराणों में न हो जहाँ श्री कृष्ण का विस्तृत जीवन का वृतांत लिखा है वह ब्रह्मवैवर्त पुराणकार को कहाँ से ज्ञात हुआ? यदि सभी पुराणों के कर्ता व्यास जी थे तो यह अंतर क्यों?

राधा जी जिन्हें पौराणिक बन्धु सोलह कला युक्त पूर्णावतार बताते हैं, ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार-

वृषभानेस्य वेश्यस्य साच कन्या बभूवह।। ३६।।
सार्द रायाण वेश्येन तत्सम्बन्ध चकारम ।। ६८।।
कृष्ण माता यशोदा रायाणस्तस्त सहोदरः।
गोलोक गोप कृष्णाशं सम्बन्ध कृष्ण मातुलहः।। ४१।।

अर्थात राधा वृषभान वैश्य की कन्या थी और उन्होंने उसका सम्बन्ध रायान वैश्य से करा दिया था। रायान श्री कृष्ण की माता यशोदा का माँ जाया था इस प्रकार राधा कृष्ण जी की मामी हुई। **पुराणों में राधा-कृष्ण के अनुचित सम्बन्धों का जो वर्णन है वह इसलिए बताना पड़ रहा है जिससे कि लोग जान सकें कि पौराणिक मत-मतान्तरों ने इस समाज को कितना पथभ्रष्ट किया है, यह समझ सके कि आज भी अपने को कृष्णावतार व चेलियों को गोपी बताने वाले गुरूओं की कमी नहीं है। इन ग्रंथों के अनुसार जब भगवान ने ही परस्त्रीगमन का मार्ग खोल दिया है तो उनके भक्तों को संकोच क्यों?** किन्तु वास्तविकता यह है कि यह समस्त रचनाएँ तथाकथित दुराचारी गुरूओं की है जो धर्म और ईश्वर की आड़ में ऐसे ग्रन्थ लिखकर शिकार खेलना चाहते हैं। इन सभी पौराणिक ग्रंथों को वेदव्यास रचित कहकर प्रचारित किया गया है जिससे भोली-भाली जनता भ्रमित रहे। राधा की कृष्ण के साथ पूजा चेतन्य महाप्रभु के प्रादुर्भाव से पूर्व प्रचलित नहीं थी और इसकी प्रेरणा ब्रह्मवैवर्त पुराणकारों के कामुक मस्तिष्क की उपज है।

महाभारत के अनुसार श्री कृष्ण का चरित्र उच्चकोटि का था। वे महान योगी, आप्त पुरूष, जितेंद्रिय, जनक्रांति के अग्रदूत, कर्मयोगी, निर्लोभी, सच्चे मित्र, शालीन, शूरवीर, राजनीतिज्ञ, युगदृष्टा, वेदप्रेमी आदि नाना गुणों से युक्त थे। वे गुरुकुल के स्नातक थे, उनकी पत्नी रूक्मणी थी। आर्य समाज श्री कृष्ण के महाभारत में वर्णित चरित्र को ग्रहण करता है और उससे शिक्षा लेने पर बल देता है।

श्री कृष्ण जी महाराज का जीवन वेदानुकूल था

आर्य समाज हिरण मगरी, उदयपुर द्वारा श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर सत्संग सभा में मुख्य वक्ता डॉ. अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर ने कहा कि श्री कृष्ण जी महाराज का सम्पूर्ण जीवन वेदानुकूल था। आपने कहा कि जब जब देश, जनमानस, राज शासक वैदिक शिक्षाओं से पृथक हुए तब-तब हमारा पतन हुआ है और महाभारत जैसी स्थितियां आई है। वैदिक शिक्षा, ऋषि मुनियों के बताये रास्ते पर चलते हुए ही हम उन्नति कर सकते हैं। इससे पूर्व पं. रामदयाल के पौरोहित्य में विशेष यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में सर्वश्री इन्द्रप्रकाश यादव, डॉ. अमृतलाल तापड़िया सपत्निक यजमान थे। इन्द्रदेव पीयूष ने मधुर भजन प्रस्तुत किया तबले पर हीरालाल आर्य ने संगत की।

आर्य समाज के प्रधान श्री भंवरलाल आर्य, डॉ. शारदा गुप्ता, श्री मुकेश पाठक ने अतिथियों का स्वागत किया। मंत्री श्रीमती ललिता मेहरा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

-रामदयाल मेहरा, प्रचार मंत्री

thearyasamaj.org

मृत्युभोज न करने में आत्मा के उद्धार

मृत्यु भोज एक रूढ़ीवादिता, महत्वहीन, शास्त्र विरूद्ध प्रथा है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के द्वारा वेदादि शास्त्रों के सिद्धांतों पर आधारित संस्कार विधि के अनुसार मनुष्य जीवन का अंतिम कार्य अथवा दाह संस्कार है। इसके पश्चात् कुछ भी संस्कार करना अवैदिक है। हमारे देश में अधिकांश क्रियाएँ अवैदिक, अवैज्ञानिक व अन्धविश्वासों पर आधारित प्रचलित हैं। पौराणिक पंडित से अपेक्षा करना कि उन क्रियाओं को सम्पन्न करना - कराना त्याग देंगे व्यर्थ हैं क्योंकि बुद्धिवाले श्रेष्ठ पुरुष व माताऐं चाहती है कि मृत्यु भोज अवैदिक है और मृत्यु भोज का आयोजन नहीं करना चाहिए किन्तु अधिकांश पुरा आर्य परिवार कोई हो, ऐसा कम ही होता है। यदि हो तो भी उसके सगे सम्बन्धी उस परिवार पर ऐसा दबाव डालते हैं कि मृत्यु भोज आयोजित करने हेतु विवश होना पड़ता है।

वैदिक दृष्टि से देखें तो मृतक की मुक्ति का मृत्यु भोज से कोई सम्बन्ध नहीं रहता किंतु विडम्बना है कि हम समाज के लोग लाखों रुपये की बर्बादी मृत्युभोज में करते हैं और अपने सगे सम्बन्धी को भी आने-जाने में रुपये की बर्बादी करवाते हैं। अधिकतर समाज के व्यक्ति यह विचार नहीं करते। अपने जीवित माता-पिता की सेवा सुश्रुषा सम्मान, उचित देखभाल, उनकी आत्मा को प्रसन्न रखना ही सच्चा श्राद्ध एवं तर्पण है। उनके शुभ आशीर्वाद से ही कल्याण संभव है। क्रान्तिकारी परिवर्तन की मानसिकता का सर्वदा अभाव है। समाज महत्वहीन, प्रतिस्पर्धा की मूर्खतापूर्ण व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि की होड़ में लग रहा है। कुपुत्र समाज में जीते जी माता-पिता से बात करने में अपना अपमान समझते हैं। मृत्यु उपरांत प्रतिस्पर्धा तथा दिखावेपन के लिए मृत्युभोज का प्रदर्शन करते हैं तभी तो मृत्युभोज जैसी कुप्रथा आज तक चल रही हैं।

समाज से यह मृत्युभोज प्रथा बन्द करना है तो समाज के प्रत्येक बुद्धिजीवी का कर्त्तव्य बनता है कि दृढ़ संकल्प के साथ प्रतिज्ञा करे कि स्वयं मृत्युभोज नहीं करेंगे तथा कहीं पर भी मृत्युभोज रूपी भोजन ग्रहण नहीं करेंगे। जिस दिन ऐसे दृढ़ व्यक्तियों की संख्या बढ़ जायेगी तो अपने आप मृत्युभोज बंद हो जावेगा। त्यागपूर्ण जीवन जीने से समाज का उत्थान होता है। यदि स्वयं की सोच में बदलाव ले आयेंगे और ज्यादा सक्रिय और जागरुक हो जायेंगे तो आने वाले समस्त दिन विशेष हो जायेंगे।

- **कैलाश काका पाटीदार,** सेवक-आर्य समाज सुवासा, उज्जैन (म.प्र.)
चलभाष-३५८९१२६६७४, ९४२४०४५८२७

शोक-सूचनाएँ

श्री बलचन्द जी जांगिड, सुपुत्र-श्री देवीसिंह जी जांगिड, निवासी-शामली (उ.प्र.) का निधन ८३ वर्ष की आयु में १० अगस्त २०१४ को हो गया।

आप चार भाइयों में सबसे बड़े थे। आप वरिष्ठ समाजसेवी एवं उद्योगपति श्री रघुवीरसिंह जी आर्य के ज्येष्ठ भ्राता थे आप, सरल, सौम्य, मिलनसार अध्यात्मिक वृत्ति के धनी व्यक्ति होकर बूलचन्द रघुवीर सिंह नामक प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठीन व्यवसायी थे आपका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक विधि अनुसार किया जाकर दिनांक १६ अगस्त को शुद्धि यज्ञ एवं श्रद्धाजंलि सभा का आयोजन किया गया। अंतिम संस्कार व श्रद्धांजलि सभा मैं आर्य जगत्, जांगिड समाज तथा नगर के गणमान्य महानुभाव स्नेहीजन उपस्थित हुऐ। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती-पलवल, आचार्य अर्जुनदेव वरणी, गुड़गाँव तथा आचार्या अन्नपूर्णा गुरुकुल देहरादून ने वैदिक सिद्धांतों पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

आप अपने पीछे सुपुत्र राजपालसिंह आर्य एवं पाँच सुपुत्रियों का भरा हुआ परिवार छोड़ गये हैं। आपके सुपुत्र वर्तमान में आर्य समाज शामली के प्रधान पद पर अपनी सक्रिय सेवाओं से मानव समाज को लाभान्वित कर रहे हैं।

वैदिक संसार प्रकाशक ने आपके निवास पर पहुँचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

डॉ. राजोरिया जी को पितृशोक

श्री लक्ष्मीनारायण जी शर्मा (राजोरिया) अधिवक्ता, सुपुत्र-श्री रामनारायण जी शर्मा, सनाढ्य ब्राह्मण, निवासी-खेड़ापति कॉलोनी ग्वालियर (म.प्र.) मूल निवासी-ग्राम-बरहद, तह.-मेहगाँव, जिला-भिण्ड का देहावसान-८० वर्ष की आयु में दिनांक १७ अगस्त २०१४ को हो गया।

आपका सम्पूर्ण जीवन वेद के सन्देश **मनुर्भव** को समर्पित रहा व्यसन मुक्ति, सदाचार, सेवाभावी, जुझारू, आत्मबल के धनी जीवन व्यतित करते हुए आपने दिव्य गुणों युक्त दो सुपुत्र-श्री संजय जी राजोरिया एवं डॉ. मनोज जी राजोरिया (चिकित्साधिकारी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, मेलखेड़ा, जिला-मंदसौर (म.प्र.)तथा एक सुपुत्री श्रीमती डॉ. प्रीति द्विवेदी (बाल विशेषज्ञ शासकीय चिकित्सालय गुना) को जन्म दिया। आपके निधन से मानव समाज की अपुरणीय क्षति हुई है।

आर्य समाज बाड़मेर के मंत्री पण्डित श्याम सुन्दर शर्मा की धर्मपत्नि **श्रीमती चन्द्रा शर्मा** का निधन दिनांक २४.०६.२०१४ को हुआ। इनका अन्तिम संस्कार वैदिक विधि अनुसार सम्पन्न हुआ। श्रीमती शर्मा जीवन पर्यन्त आर्य समाज से जुड़ी रही। आप सहृदय, मृदुभाषी, मिलनसार, धर्मपरायण महिला थी और आर्य समाज के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग लेती थी।

आप अपने पीछे अपने पतिदेव तथा दो सुपुत्र केदार शर्मा एवं सुभाष शर्मा सहित पौत्र-पौत्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गई हैं।

दिनांक ०४.०७.२०१४ को आर्य समाज बाड़मेर के समस्त सभासदों सहित आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक ठा. भूपेन्द्रसिंह एवं उपदेशक लेखराजजी शर्मा, पण्डित रामनारायण शास्त्री जी व परिजनों तथा शहर के गणमान्य नागरिकों ने आपके निवास स्थान पर उपस्थित होकर इनके कृतित्व को स्मरण कर श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

आर्य समाज बुढ़ा, मन्दसौर (म.प्र.) के संस्थापक सदस्य आर्य बाल मन्दिर से लेकर हायर सैकेण्डरी तक की आर्य शिक्षण संस्था में जिनका महत्वपूर्ण योगदान रहा ऐसे आर्यत्व के धनी, दानी सरल व्यक्तित्व **आर्यरत्न श्री रतनलाल जी आर्य पाटीदार** का ७० वर्ष की आयु में १६ अगस्त को निधन हो गया। उनके पार्थीव शरीर का अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक पद्धति से पं. सत्येन्द्र जी आर्य ने अनेक सहयोगियों के साथ सम्पन्न कराया। १० दिवसीय शान्ती कथा का वाचन श्री रघुवीर जी शास्त्री मथुरा वालों ने सम्पन्न कराया। उनकी पावन स्मृति में १ लाख रू. आर्यसमाज बुढ़ा के लिये, ५१ हजार प्याऊ एवं अन्यान्य संस्थाओं को कुल मिलाकर १ लाख ७५ हजार के लगभग दान देकर परिवार ने उनकी स्मृति को चिरस्थायी किया।

जांगिड ब्राह्मण प्रदेश सभा हरियाणा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष तथा विश्वकर्मा मंदिर कमेटी ग्वालियर पचगाँवा, जिला-गुड़गाँवा के पूर्व प्रधान श्री लक्ष्मीनारायण जी जांगिड, निवासी-ग्वालियर, तह. मानेसर, जिला-गुड़गाँव (हरियाणा) के सबसे छोटे सुपुत्र-**श्री यशपाल जांगिड** का ३४ वर्ष की अल्पायु में दिनांक १२ अगस्त २०१४ को एक दुर्घटना में दुःखद निधन हो गया।

आप तीन भाइयों में सबसे छोटे थे आप आपके पीछे माता-पिता, दो भाई सुरेश कुमार, हंसराज तथा धर्मपत्नी व दो सुपुत्र मोहित १२ वर्ष एवं रोहित १० वर्ष को रोता-बिलखता छोड़ गये हैं। आपके आकस्मिक निधन से परिवार पर वज्रपात हुआ है।

आप कर्मठ, जुझारू, प्रवृत्ति के ट्रांसपोर्ट व्यवसाय के लगनशील मेहनती सफल व्यवसायी थे।

समस्त दिवंगत आत्माओं के प्रति वैदिक संसार परिवार अपनी भावांजलि व्यक्त करता है तथा शोक-संतप्त परिजनों के हेतु गहन शोक-संवेदना व्यक्त करता है -सम्पादक

thearyasamaj.org

आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियों की चित्रावली

वेद प्रचारिणी सभा, नागपुर द्वारा दर्शन योग महाविद्यालय हेतु स्वामी जी को एक लाख इक्कीस हजार का चेक भेंट किया

अपने भाग्य निर्माता आप विषय पर स्वामी विवेकानंद परिव्राजक प्रवचन करते हुए

स्वामी जी के मुखारविन्द से वैदिक ज्ञान का अमृत पान करते श्रद्धालुजन

स्वर्ग
कामो
यज्ञेत

दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ के व्यवस्थापक ब्र. दिनेश कुमार के मुख्य आतिथ्य में आर्य समाज वड़ौदा ने मनाया श्रावणी पर्व वेद प्रचार के साथ आवश्यकमंदों को तीपहिया साईकिलें एवं उपकरण किये प्रदान

आर्य समाज वारजे (पूना) के कार्यक्रम में संध्या विद्वत्गण एवं देवयज्ञ करते श्रद्धालुगण

श्री अर्जुन देव जी चड्ढा ने निराश्रितों के बीच मनाया अपना 71 वाँ जन्मदिवस

आर्य समाज कोटा में महिलाओं द्वारा पूर्णिमा दिवस पर किया वैदिक सत्संग का शुभारम्भ

भावी डॉक्टर यज्ञेश आर्य का सम्मान आर्य समाज कोटा द्वारा

नन्हीं नृत्यांगना एवं गायिका श्रिया बोम्मू का सम्मान आर्य समाज कोटा द्वारा

प्रेषक :
वैदिक संसार
12/3, संविद नगर,
इन्दौर (म.प्र.) 450 018

सेवा में,

M/s. SUMIT WOODS PVT. LTD.

Sumit

Sumit Woods Pvt. Ltd.

Builders & Developers

An ISO :2000 Company

Goa Office:-
S/102, Sumit Classic,
Opp. Ponda Municipality,
sadar, Ponda, Goa 403 401
Tel No. 0832 2315209,
Fax:-08322312698

Mumbai Office:-
101,Mitasu Enclave,
Plot No. 560, Borivali (W),
Mumbai – 400 092
Tel No. 022 6526 7586/87,
Fax:- 022-28999277
Email:- goasumit@rediffmail.com

Details **of our ongoing projects at** Goa, are given below for your information & consideration.

PROJECTS	LOCATION	FLAT AREAS
Sumit Province	Dhavli, Ponda Goa	2/3 BHK Flats available (124/136 sqmtr)
Sumit Bells	Nuvem Salcete Goa	3 BHK Row Houses available (170/200 sqmtr)
Sumit Mount	Behind St Marry high School Ponda Goa	2/3 BHK Flats available (80 – 200 Sqmtr)

- Title clear projects, you can avail Housing loan from all leading financial institutions
- During last 25 years, we have completed more than 50 projects with O.C. at Mumbai & Goa.
- Contact :- 0832-2315209/ 9167210634.
- Web :- WWW. Sumitwoods.com

"QUALITY WITH ECNOMY IS OUR BUSINESS PRINCIPLE"

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक महोदय द्वारा पंजीकृत, पंजीयन संख्या, एम.पी.एच.आई.एन.- २०१२/४५०६६,डाक पंजीयन-एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०१२-१४

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक - सुखदेव शर्मा 'जांगिड'-इन्दौर, इन्दौर ग्राफिक्स-२४ कुंवर मण्डली खजुरी बाजार से मुद्रित, १२/३, संविद नगर-इन्दौर-४५२०१८ से प्रकाशित, संपादक - गजेश शास्त्री, चलभाष - ०९९९३७६५०३१, कार्यालय - ०७३१-४०५७०१८